दक्षिण मध्य रेलवे

रेल सुधा

हिंदी ई-पत्रिका

सितंबर-2024

राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय

सिकंदराबाद

रेल सुधा

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री अरुण कुमार जैन

महाप्रबंधक

मार्गदर्शक

श्री ए.के.श्रीवास्तव

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक

संपादक

डॉ. श्याम सुंदर साहु

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

सह संपादक

श्री एम.के.नागराजु

राजभाषा अधिकारी, प्रधान कार्यालय

सहायता

श्रीमती जी.राजेश्वरी	श्री सतीश कुमार महतो	श्री शिरीष अवस्थी	श्री अरविंद प्रसाद	श्रीमती वसुंधरा
वरिष्ठ अनुवादक प्रधान कार्यालय	कनिष्ठ अनुवादक प्रधान कार्यालय	कनिष्ठ अनुवादक प्रधान कार्यालय	कार्यालय अधीक्षक प्रधान कार्यालय	कार्यालय अधीक्षक प्रधान कार्यालय

महाप्रबंधक संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि दक्षिण मध्य रेलवे, राजभाषा विभाग की हिंदी ई-पत्रिका ‘रेल सुधा’ के अगले अंक का प्रकाशन किया जा रहा है.

अपनी लेखनी से इस पत्रिका को सुसज्जित करनेवाले सभी रचनाकारों को मैं हार्दिक बधाई देता हूं. आप सभी ने अपनी रेल सेवा कार्य की व्यस्तता से समय निकालकर हिंदी में मौलिक रचनाओं का सृजन किया. यह निश्चित ही आपकी हिंदी के प्रति विशेष रुचि का परिचायक है.

इस अंक में प्रकाशित विविध विषयक रचनाएं पाठकों का मनोरंजन करने के साथ-साथ ज्ञान भी बढाएंगी. इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं राजभाषा संगठन को बधाई देता हूं तथा इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं.

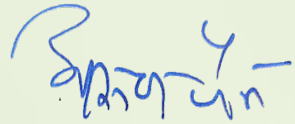

(अरुण कुमार जैन)
महाप्रबंधक

मुख्य राजभाषा अधिकारी का
शुभकामना संदेश

दक्षिण मध्य रेलवे की हिंदी ई-पत्रिका ‘रेल सुधा’ के अगले अंक के प्रकाशन के सुअवसर पर मैं सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं.

दक्षिण मध्य रेलवे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अग्रणी रही है. ‘ग’ क्षेत्र में होने के बावजूद इस रेलवे के अधिकारियों व कर्मचारियों को हिंदी का अच्छा ज्ञान है तथा वे हिंदी के प्रति विशेष रुचि रखते हैं. यह पत्रिका अधिकारियों व कर्मचारियों की सर्जनात्मक प्रतिभा को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है.

मैं आशा करता हूं कि ‘रेल सुधा’ का यह अंक रोचक और ज्ञानवर्धक होगा और पाठकों की हिंदी के प्रति रुचि को बनाए रखेगा.

इस विश्वास के साथ मैं दक्षिण मध्य रेलवे की हिंदी ई-पत्रिका ‘रेल सुधा’ की निरंतर सफलता की कामना करता हूं.

(ए.के.श्रीवास्तव)
मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक

संपादक की कलम से......

'हिंदी दिवस' के शुभ अवसर पर हिंदी पखवाडा के दौरान 'रेल सुधा' हिंदी ई-पत्रिका का अगला अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है. इस पत्रिका को समृद्ध बनाने के लिए अधिक संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनाएं प्राप्त हुई हैं. इससे इस रेलवे के अधिकारियों/ कर्मचारियों की हिंदी के प्रति रुचि प्रतिबिंबित होती है.

राजभाषा हिंदी के लिए सितंबर का महीना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है. 14 सितंबर,1949 को संविधान द्वारा हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने के स्मरण में 'हिंदी दिवस' मनाया जाता है. इस वर्ष माननीय गृह मंत्री की अध्यक्षता में यह भारत मंडपम, नई दिल्ली में मनाया गया. 15 सितंबर को अखिल रेल हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें केंद्र सरकारी कार्यालयों के सभी अधिकारियों ने सहभागिता की.

केंद्र सरकारी कार्यालय में कार्यरत हम सभी कार्मिकों का यह उत्तदायित्व है कि हम अपने दैनंदिन सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें तथा इसका प्रचार-प्रसार बढाएं. अधिकारियों और कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि बढाने की दिशा में दक्षिण मध्य रेलवे की हिंदी पत्रिका 'रेल सुधा' का प्रकाशन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है. इससे रेल कर्मियों की साहित्यिक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अच्छा अवसर मिलता है. राजभाषा विभाग की ओर से प्रकाशित यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार में निश्चित ही प्रेरणादायक रही है. मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी अधिकाधिक अधिकारी और कर्मचारी अपनी रचनाओं से इस पत्रिका को सुसज्जित करते रहेंगे.

मुझे आशा है कि यह पत्रिका आपको पसंद आएगी. इसमें और निखार लाने के लिए आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी.

(डॉ.श्याम सुंदर साहु)
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख/कविता	रचनाकार/कवि का नाम	पृष्ठ सं.
1.	प्रगति पर रेल : दक्षिण मध्य रेलवे विकास की ओर अग्रसर.... एक के बाद एक कीर्तिमान	श्री अरुण कुमार जैन महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे	1
2.	सुनहरी यादें	श्री लोकेश विश्नोई मंडल रेल प्रबंधक, हैदराबाद मंडल	7
3.	पुस्तक समीक्षा- कर्म योग (स्वामी विवेकानंद)	श्री मुकेश कुमार नागर उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, सवारी डिब्बा मरम्मत कारखाना, तिरुपति	12
4.	ई-ऑफिस में हिंदी का प्रयोग	श्री आशा महेश कुमार राजभाषा अधिकारी, विजयवाडा	13
5.	कॉर्पोरेट से व्यक्तिगत ब्रांडिंग तक पिछले दशक में जनसंपर्क की विभिन्न भूमिकाएँ	सुश्री नुसरत एम मंद्रुपकर जनसंपर्क अधिकारी, विजयवाड़ा मंडल	15
6.	झारखंड की वादियों में	श्रीमती शिखा विश्नोई पत्नी, लोकेश विश्नोई मंडल रेल प्रबंधक, हैदराबाद	18
7.	त्राहिमाम	श्री ई. देवराज रेड्डी कनिष्ठ अनुवादक, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण/का/सिकंदराबाद	23
8.	वक्त	श्री भरत लाल राम कार्यालय अधीक्षक, प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक/सिकंदराबाद	25
9.	बुढ़ापे की कसौटी	श्री प्रिंस कुमार तकनीशियन—III, रायनपाडु	26
10.	सोशल मीडिया और उसके परिणाम	श्री योगेश दीपराज भस्मे कनिष्ठ अनुवादक, गुंटूर मंडल	28
11.	ट्रैक मैन	श्री अमित कुमार टीएम-II/दोनकोंडा, गुंटूर मंडल	31
12.	प्रेरणा	श्री नरेश कुमार महावर तकनीशियन II, मैसन वरि.से.इंजी/का/वाटर वर्क्स/गुंतकल	32
13.	सभ्य मानव और योग का यथार्थ	श्री शिरीष अवस्थी कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान कार्यालय दमरे, सिकंदराबाद	33
14.	आत्म-विश्वास का महत्व	श्रीमती वफा समरीन पत्नी, मेराज अहमद, कनि. अनुवादक/प्र.का./द.म.रे.	35
15.	जीवन का आशय	श्री अजय कुमार पाण्डेय सीनियर पैसेंजर ट्रेन मैनेजर सिकंदराबाद मंडल	36

16.	बेटी हूं अभिशाप नहीं	श्री दुष्येन्द्रजीत ट्रैकमैन-III/वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/रेल पथ/ का सिरपुरकागज नगर	37
17.	‘ऐ लड़की’ उपन्यास में स्त्री की सामाजिक अस्मिता(कृष्णा सोबती)	श्रीमती वी.निर्मला वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक कार्यालय सिकंदराबाद मंडल	38
18.	सावन आया है	श्री जितेश आनंद, 9वीं कक्षा सुपुत्र श्री प्रणय कुमार सिंह कनिष्ठ अनुवादक, सिकंदराबाद मंडल	39
19.	तथागत मनुष्य और बाँस	श्री दीप नारायण चौहान कनिष्ठ अनुवादक, सिकंदराबाद मंडल	40
20.	होली	श्री आलोक कुमार तकनीशियन-III, सीसेइंजी/कार्य/जल प्रबंधक/ का/विजयवाड़ा	42
21.	समय का सदुपयोग	श्री प्रणय कुमार सिंह, कनिष्ठ अनुवादक, सिकंदराबाद मंडल	43
22.	धैर्य और साहस	श्री निरंजन कुमार तकनीशियन-II, विद्युत लोको शेड/विजयवाड़ा	45
23.	ऑनलाइन के माध्यम से शिक्षा और इसकी सार्थकता	श्री रौशन कुमार "प्रिय" तकनीशियन ll, सीसेइंजी/ वि./औ. व सं. / विजयवाड़ा	46
24.	होली	आलोक कुमार तकनीशियन-III, सीसेइंजी/का/जल प्रबंध/विजयवाडा	48
25.	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस	सुश्री तिरुमलाशेट्टी लिखिता सुपुत्री वी. साईं लक्ष्मी (तकनीशियन-II) मंयांइंजी/वैगन डिपो/का/विजयवाड़ा	49
26.	राष्ट्र निर्माण में युवाओं का महत्व	श्री नितिन कुमार नायक सुपुत्र के.सी. नायक उप वाणिज्य टिकट निरीक्षक/स्लीपर, विजयवाड़ा	51
27.	अनहोनी कहानी (यथार्थ संघटना)	श्रीमती पी. पावनी कनिष्ठ अनुवादक,राजभाषा अनुभाग, विजयवाड़ा	55
28.	गुलाब	श्री जे.विजय कला कार्यालय अधीक्षक, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी का कार्यालय गुंतकल	56
29.	मेरी महाबलीपुरम की यात्रा	श्री ज्ञान रंजन मेल एक्सप्रेस गाड़ी प्रबंधक तिरुपति, गुंतकल मंडल	57
30.	चंदा मामा	श्रीमती राखी कुमारी पत्नी – ज्ञान रंजन मेल एक्स्प्रेस गाड़ी प्रबंधक, तिरुपति, गुंतकल	58

31.	देव भूमि हरिद्वार की यात्रा..........	श्री दीपक कुमार साव कनि. अनुवादक, वरि. मंकाधि/का/गुंतकल	59
32.	एक सक्षमकर्ता के रूप में प्रौद्योगिकी की भूमिका “ 'स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा के साथ आत्मनिर्भरता'”	श्री मोहम्मद मुख्तार आलम मुख्य डिपो सामग्री अधीक्षक मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, गुंतकल	62
33.	दहेज एक सामाजिक अभिशाप	श्री रोबिन कुमार कार्यालय अधीक्षक, वमंकाधि/का/गुंतकल	64
34.	मेरी पहली रेल यात्रा	श्री एल.रवि कुमार कनि. अनुवादक, वमंकाधि /का/गुंतकल	65
35.	छऊ - एक शास्त्रीय नृत्य शैली	श्री शिलाजीत साहा कनिष्ठ अनुवादक, सवारी डिब्बा कारखाना, लालागुडा	67
36.	टिकट मैसेज	श्री बी. राजेश वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर सवारी डिब्बा कारखाना, लालागुडा	70
37.	तमस	श्री अभिषेक सिंह सहायक /विद्युत विभाग सवारी डिब्बा कारखाना, लालागुडा	71
38.	इक तेरे बाद ...	श्री मो. रुहुलअमीन कार्यालय अधीक्षक, क्षे.रे.प्र.सं/मौलाअली	73
39.	जीवन की समस्याओं से कैसे निपटें	श्री आर.वी. हनुमंत प्रसाद वरिष्ठ अनुदेशक/वाणिज्यिक,क्षे.रे.प्र.सं./मौलाअली	74
40.	क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान/ मौलाअली – एक परिचय	सुश्री एस. साईं सुधा वरिष्ठ अनुदेशक/परिचालन	78
41.	कार्यालयों में हिंदी - कार्यान्वयन की समस्याएं	श्री राजेश कुमार पांडे वरि. अनुदेशक/परिचालन, क्षे.रे.प्र.सं./मौलाअली	83
42.	राष्ट्रीय रेल योजना - 2030	श्री एम.सी. गोपाल कृष्णा वरि.अनुदेशक/ परिचालन क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान/ मौलाअली	86
43.	झोपड़ी और महल	श्री मेराज अहमद कनि. अनुवादक,प्र.का./द.म.रे.	88
44.	“ श्रीरामचरितमानस ” महाकाव्य की पुस्तक समीक्षा	श्री देव व्रत शर्मा लेखा लिपिक, विसमुलेधि/निर्माण/का/सिकंदराबाद	90
45.	गुड्डे - गुड्डी की शादी	सुश्री जया वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/आरेख मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) कार्यालय	93
46.	माँ	श्रीमती करमजीत कौर कार्यालय अधीक्षक, यांत्रिक विभाग/प्र.का.	96
47.	सूरदास कृत सूरसागर की समीक्षा	श्रीमती ललिता एन सायन्ना कार्यालय अधीक्षक, यांत्रिक विभाग/प्र.का.	97

48.	सहज समीर	श्री जी.वी.माधव निजी सचिव, परिचालन विभाग/प्र.का.	100
49.	सोशल मीडिया और बाजारवाद रूपी ज़ोंबी	श्री सतीश कुमार महतो कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान कार्यालय	103
50.	'पूस की रात ' में किसान	श्रीमती पूजा कुमारी साव पत्नी सतीश कुमार महतो कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान कार्यालय	105
51.	तेरा ख्याल	श्री रोहित कुमार तकनीशियन-2, यार्ड कार्यालय, मालडिब्बा कारखाना, रायनपाडु	108
52.	जल संकट की समस्या और समाधान	श्री मृत्युंजय झा/तक-III वरि.मंयांइंजी/डीजल/मौला-अली	109
53.	पितृ देवो भव	सुश्री पी.श्रुति रानी कनिष्ठ लिपिक, कार्मिक शाखा मालडिब्बा कारखाना, रायनपाडु	111
54.	"बुद्धं" शरणम् गच्छामि	श्री पी.साई चरित श्री पुत्री श्री पी.श्रीनाथ, सकाधि/विजयवाडा	113
55.	अतुल्य भारत	श्री पी.वेंकट सोहन पुत्र श्री पी.श्रीनाथ, सकाधि/विजयवाडा	113
56.	चित्र	श्री के.एन.वी.एम.रोहित पुत्री के.वी.कोटिलिंगाचारी, कनिष्ठ लिपिक वमंविइंजी/विलोशे/का/विजयवाडा	114
57.	चित्र	सुश्री अनामिका कुमारी श्रीवास्तव आश्रित गोपाल कृष्ण श्रीवास्तव कनिष्ठ अनुवादक, राजभाषा अनुभाग, वमंकाधि/का/विजयवाडा	114
58.	पर्यावरण हित गणेश	सुश्री एस.बिंदु श्री पुत्री श्री एस.वासुदेव राव, तकनीशियन-I मंयांइंजी/ड़ीजल/विजयवाडा	115
59.	चित्र	सुश्री बी.ज्ञानिता पुत्री श्रीमती पी.पावनी, कनिष्ठ अनुवादक राजभाषा अनुभाग, वमंकाधि/का/विजयवाडा	115
60.	राजभाषा गतिविधियां	श्री एम.के.नागराजु, राजभाषा अधिकारी, प्रधान कार्यालय	116

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी विचार हैं.
इससे संपादक और राजभाषा विभाग का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

प्रगति पर रेल : दक्षिण मध्य रेलवे विकास की ओर अग्रसर....
एक के बाद एक कीर्तिमान

अरुण कुमार जैन
महाप्रबंधक
दक्षिण मध्य रेलवे

वित्तीय वर्ष 2022-23 में अपने अब तक के सर्वश्रेष्ठ निष्पादन कार्य के साथ नए मानक स्थापित करने के बाद, दक्षिण मध्य रेलवे ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में अपनी पिछली उपलब्धियों को पार करते हुए एक और शानदार निष्पादन दर्ज करके अपने निष्पादन स्तर को नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया है. हमारे लिए यह विभिन्न सेगमेंटों में प्रमुख मापदंडों पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन से भरा एक और वर्ष रहा.

जोन, जो हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के जन्मदिन के साथ अपना स्थापना दिवस मनाता है, ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान न केवल अवसंरचना संवर्धन और राजस्व अर्जन में अद्भुत कार्यनिष्पादन हासिल किया, बल्कि अनेक सेक्टरों में अपने शानदार निष्पादन का साक्षी रहा, जो वर्ष 1966 में जोन की स्थापना के बाद से अब तक का सर्वाधिक निष्पादन है.

मजबूत व्यवसाय....रिकॉर्ड राजस्व...बेहतर परिचालन अनुपात

दमरे की नए बाजारों तक पहुंच के लिए रणनीतिक पहल, अपनी परिचालन दक्षता बढ़ाने पर निरंतर ध्यान तथा यात्री और माल गाड़ियों द्वारा अपनी सेवाएं प्रदान करने में लगातार ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण द्वारा जोन ने पहली बार 20,000 करोड़ रु. के प्रारंभिक राजस्व अर्जन के कीर्तिमान को पार करके इतिहास रचा है. वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान, दमरे ने 20,339 करोड़ रु. का प्रारंभिक राजस्व अर्जन हासिल किया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 7.2% अधिक है.

रिकॉर्ड प्रारंभिक राजस्व अर्जन प्राप्त करने में माल लदान सेगमेंट का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जो अब तक का सर्वश्रेष्ठ निष्पादन था. दमरे ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान 13,620 करोड़ रु. का प्रारंभिक माल लदान राजस्व अर्जन किया है, जो अब तक का सर्वश्रेष्ठ अर्जन है और पिछले वर्ष की तुलना में 4.4% अधिक है. न केवल यातायात के नए स्रोत जोड़कर बल्कि ग्राहक-हितैषी नई पहल करके मौजूदा कमोडिटी बास्केट को मजबूती प्रदान करने के लिए माल लदान-बास्केट को सुदृढ़ बनाने पर विशेष जोर दिया गया. वर्ष के दौरान 6 नए पीएम गति शक्ति कार्गो टर्मिनल सहित 3 नए साइडिंग शेड खोले गए. इसके अलावा, माल लदान करने वाले हमारे ग्राहकों के लिए लोडिंग/अनलोडिंग की सुविधा प्रदान करने हेतु हमारे कई महत्वपूर्ण गुड्स शेडों में बड़े सुधार किए गए. इन सभी कारणों से जोन पर 141.12 मिलियन टन की अब तक की सबसे अधिक प्रारंभिक लदान दर्ज की गई. जोन की स्थापना के बाद से यह सर्वाधिक है, दमरे ने पिछले वर्ष के दौरान भारतीय रेल की कुल लदान बढ़ोत्तरी में लगभग 11% का योगदान दिया है.

जोन पर यात्रियों की मांग को पूरा करने के लिए जोन द्वारा अधिक जोर दिया गया था. जोन ने विभिन्न दिशाओं से प्राप्त मांग पर निरंतर निगरानी रखने की रणनीति अपनाई ताकि जहां भी आवश्यक हो विशेष गाड़ियां आरंभ की जा सकें (5,115 ऑरिज़नेटिंग स्पेशल गाड़ियां) तथा मौजूदा

भीड़-भाड़ वाली गाड़ियों में स्थायी और अस्थायी, दोनों प्रकार से अतिरिक्त कोच जोड़ी जा सकें (117 गाड़ियों के साथ 6,921 अतिरिक्त कोच). परिणामस्वरूप जोन ने अपनी अब तक की सर्वश्रेष्ठ प्रारंभिक यात्री आय 5,731.8 करोड़ रु. अर्जित की. साथ ही, जोन ने वर्ष 2022-23 के दौरान 255.59 मिलियन की तुलना में वर्ष 2023-24 के दौरान 262.62 मिलियन प्रारंभिक यात्रियों का वहन किया. महत्वपूर्ण बात है कि इस वर्ष दमरे ने अनारक्षित टिकटिंग सेगमेंट में भी डिजिटलीकरण की दिशा में बड़ा कदम उठाया. दमरे सभी जोनल रेलवे में अग्रणी है क्योंकि उसके 44.3% अनारक्षित यात्रियों ने यूटीएस ऐप (16.5%) या एटीवीएम (27.8%) के माध्यम से टिकट खरीदे.

राजस्व में रिकॉर्ड वृद्धि से जोन के परिचालन अनुपात में भी बढ़ोत्तरी हुई है, वित्तीय वर्ष 2023-24 में परिचालन अनुपात का योगदान 86.64% रहा, जबकि वित्तीय वर्ष 2022-23 में यह 88.2% था. यह वित्तीय वर्ष 2022-23 के 15,272 करोड़ रु. की तुलना में वित्तीय वर्ष 2023-24 में कार्य व्यय बढ़कर 15,799 करोड़ रु. होने के बावजूद संभव हुआ है.

रिकॉर्ड अवसंरचना संवर्धन.... सुदृढ़ रेल नेटवर्क

जोन द्वारा वर्ष के दौरान रेलपथ बिछाना और रेल नेटवर्क के विस्तार पर निरंतर ध्यान देना विकास में उछाल के साथ मेल खाते हैं. वर्ष 2023-24 के दौरान, दमरे ने अपने रेल नेटवर्क में रिकॉर्ड 416 किलोमीटर रेलपथ जोड़ा है, जो जोन की स्थापना के बाद से अब तक का सर्वाधिक विस्तार है. इसमें 39 किलोमीटर नई लाइनें, 54 किलोमीटर गेज परिवर्तन, 33 किलोमीटर दोहरीकरण और 190 किलोमीटर तिहरीकरण शामिल हैं. परिणामस्वरूप, न केवल नए क्षेत्रों को पहली बार रेल मानचित्र से जोड़ा गया, बल्कि वर्तमान संतृप्त सेक्शनों पर भी गाड़ियों के भीड़ को कम किया गया, जिससे हमारे नेटवर्क पर गाड़ी संभलाई क्षमता में वृद्धि हुई है.

लक्ष्य मिशन विद्युतीकरण

मिशन विद्युतीकरण के अंतर्गत, पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान 326 मार्ग किलोमीटर का विद्युतीकरण कार्य पूरा किया गया. इससे दक्षिण मध्य रेलवे पर केंद्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन (कोर) द्वारा सभी रेल लाइनों का विद्युतीकरण कार्य 100% पूरा कर लिया गया है. दमरे का संपूर्ण रेल नेटवर्क अब विद्युतीकृत है, केवल उन रेल लाइनों को छोड़कर जिनका या तो हाल ही में निर्माण किया गया है या पूरी तरह/आंशिक रूप से निर्माणाधीन हैं अथवा जिन पर रेल यातायात चालू नहीं है. कर्षण परिवर्तन के कारण मार्गस्थ रुकौनियां कम होने से हमारे यातायात के निर्बाध परिवहन में बहुत मदद मिली है, प्रदूषण कम हुआ है और ईंधन लागत में बचत हुई है.

जोन पर रेल नेटवर्क के इस व्यापक विद्युतीकरण का लाभ उठाने के लिए, दमरे ने पिछले वर्ष के दौरान 102 की तुलना में वर्ष 2023-24 के दौरान 148 लोकोमोटिव को कमीशन करके 3-चरण इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव की अपनी अब तक की उच्चतम कमीशनिंग हासिल की. जोन पर विद्युत इंजनों की उपलब्धता के कारण वित्तीय वर्ष 23-24 में 46 जोड़ी कोचिंग गाड़ियों को डीजल से विद्युत कर्षण में बदलने की सुविधा हुई है और इससे ईंधन बिल पर प्रति वर्ष 204 करोड़ रुपये की बचत होगी.

आवागमन बढ़ाने पर विशेष जोर

क्षमता वृद्धि एक अन्य सेगमेंट था जिस पर पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान अधिक ध्यान दिया गया था. गाड़ी परिचालन को सुगम बनाने तथा गाड़ियों का आवागमन बढ़ाने के लिए कई उपाय किए गए.

जोन ने मिशन मोड पर ऐसे महत्वपूर्ण सेक्शनों की सूची बनाई, जिन पर गतिशीलता बढ़ाने के लिए गति प्रतिबंधों पर ध्यान देने की आवश्यकता है. योजनाबद्ध तरीके से सावधानीपूर्वक कार्य करते हुए, दमरे ने अपने ट्रैक नेटवर्क में 83 स्थाई गति प्रतिबंधों में या तो सफलतापूर्वक छूट दी या उन्हें हटाया, जो इसकी स्थापना के बाद से सबसे अधिक है. उल्लेखनीय है कि इन पीएसआर को हटाने/ में छूट देने से लगभग 44.48 मिनट की संचयी बचत हुई है, जो पिछले वर्ष 25 पीएसआर को हटाने/में छूट देने से प्राप्त 17.74 मिनट की तुलना में काफी अधिक है.

गुत्ती-धर्मवरम के बीच अधिकतम अनुमेय गति को 110 कि.मी.प्र.घं. से बढ़ाकर 130 कि.मी.प्र.घं. करने हेतु मंजूरी दी गई है. इसके साथ, 1,835 मार्ग किमी दमरे नेटवर्क में 130 कि.मी.प्र.घं. की अधिकतम अनुमेय गति को लागू किया गया है.

इसके अलावा, एमएमटीएस चरण- II परियोजना के अंतर्गत दोहरी लाइन और विद्युतीकरण कार्यों के साथ-साथ सनतनगर – मौला अली केबिन के बीच 22 किलोमीटर के स्वचालित ब्लॉक सिगनलिंग कार्य भी चालू किए गए हैं. सेक्शन लाइन की क्षमता बढ़ाने के लिए वर्ष के दौरान सात इंटरमीडिएट ब्लॉक सिगनल भी चालू किए गए हैं.

संरक्षा - सर्वोच्च प्राथमिकता

जोन के लिए संरक्षा हमेशा सर्वोच्च प्राथमिकता रही है. गाड़ी परिचालन की संरक्षा बढ़ाने के लिए जोन लगातार विभिन्न उपाय कर रहा है. वर्ष 2023-24 के दौरान रिकार्ड संख्या में 112 पुलों को पुनःस्थापित किया गया, जो जोन पर एक वर्ष में किया गया अब तक का सर्वाधिक है. इसके अलावा, सड़क प्रयोक्ताओं के साथ-साथ गाड़ी परिचालन दोनों की संरक्षा को मजबूत करने हेतु 81 चौकीदार वाले समपार फाटकों को हटा दिया गया. वर्ष 2023-24 के दौरान 46 आरयूबी एवं 14 आरओबी का निर्माण किया गया.

इसी प्रकार, 09 स्थानों पर समपार फाटकों का इंटरलॉकिंग किया गया है. समपार फाटकों की संरक्षा को बढ़ाने हेतु 37 समपार फाटकों पर विद्युत संचालित लिफ्टिंग बैरियर स्थापित किए गए हैं तथा 19 स्थानों पर आपात स्लाइडिंग बूम लगाए गए हैं. इसके अलावा, गाड़ी परिचालनों में संरक्षा बढ़ाने के लिए 38 स्टेशनों पर इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम चालू किए गए हैं. दमरे ने दोहरीकरण या तिहरीकरण के साथ मेन लाइन के पांच स्टेशनों पर मौजूदा मानक-II इंटरलॉकिंग को मानक-III इंटरलॉकिंग में बदल कर इंटरलॉकिंग प्रणाली को भी मज़बूत किया है.

वर्ष 2023-24 के दौरान पूरे जोन में 649.03 किलोमीटर का पूर्ण ट्रैक नवीकरण (सीटीआर) किया गया, जो जोन के इतिहास में अब तक का सर्वाधिक है. यह पिछले वर्ष के दौरान हासिल किए गए 448.60 कि.मी. सीटीआर से लगभग 45% अधिक है. दमरे में पहली बार, उपनगरीय

एमएमटीएस सेक्शनों में प्लैटफार्म लाइनों पर सड़क क्रेनों की मदद से ट्रैक नवीकरण भी किया गया है. छः 20 टी रोड क्रेनों का उपयोग करते हुए मौजूदा रेलपथ को तोड़ कर 5 घंटे के ब्लॉक के भीतर रेलपथ पर नए पैनल लगाए गए हैं.

<u>रेल यात्रा को सुरक्षित बनाना</u>

दमरे के सुरक्षा विंग द्वारा अपने यात्रियों को स्टेशनों पर या गाड़ियों में सुरक्षित रेल यात्रा प्रदान करने के लिए कई उपाय किए गए हैं. इसके द्वारा किए गए कई पहल से 2023-24 के दौरान अद्भुत परिणाम मिले हैं. इनमें ऑपरेशन नन्हें फरिश्ते के माध्यम से 1,200 बच्चों को बचाना, ऑपरेशन एक्शन अगेंस्ट ह्यूमन ट्रैफिकिंग (एएएचटी) के माध्यम से 460 बच्चों को मानव तस्करों के चंगुल से छुड़ाना, ऑपरेशन यात्री सुरक्षा के माध्यम से 3 करोड़ रुपये के यात्री सामान की बरामदगी और ऑपरेशन नॉरकोस के माध्यम से 24 करोड़ रुपये के नशीले पदार्थ जब्त करना शामिल हैं. मेरी सहेली पहल के माध्यम से महिला यात्रियों की सुरक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है. इस सेगमेंट की मुख्य विशेषता है दमरे रेलवे सुरक्षा बल द्वारा 'रुद्रम्मा' और 'नागम्मा' नामक दो अलग-अलग टीम बनाए गए हैं. ये टीम यात्रियों के रूप में यात्रा करते हुए अपराधियों को पकड़ते हैं और महिलाओं को सहायता व सुरक्षा प्रदान करते हैं. इस पहल को "महिला सुरक्षा कोटि" के अंतर्गत तेलंगाना सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया.

<u>यात्रियों को आनंददायक यात्रा अनुभव प्रदान करना</u>

दमरे में जनवरी, 2023 में सिकंदराबाद - विशाखपट्टणम के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस गाड़ी की सफल शुरुआत के बाद, जोन को वर्ष 2023 के दौरान अपने नेटवर्क पर 5 जोड़ी आरंभिक वंदे भारत एक्सप्रेस गाड़ियां और पहले से चलाई जा रहे मार्ग में एक और वंदे भारत एक्सप्रेस गाड़ी चलाने का सौभाग्य मिला. इस स्वदेशी सेमी-हाई स्पीड गाड़ी ने रेल यात्रा का काया पलट किया है और वर्ष के दौरान अधिक प्रोत्साहन पाने वाले प्रमुख 15 वंदे भारत एक्सप्रेस गाड़ियों में इस जोन की 4 गाड़ियां शामिल हैं जो दमरे पर प्राप्त अधिक लोकप्रियता का साक्षी हैं.

इसके अलावा, इस वर्ष के दौरान हाल ही में आरंभ की गई मालदा टाउन-बेंगलूरू अमृत भारत गाड़ी जो हमारे रेल नेटवर्क से गुजरती है, नॉन-एसी यात्रियों के लिए भी अद्भुत यात्रा अनुभव प्रदान करती है.

इसी प्रकार, जोन पर संचालित 15 भारत गौरव पर्यटक सर्किट गाड़ियां रेल यात्रियों के बीच तुरंत लोकप्रिय बन गई हैं, जो उन्हें देश भर के प्रमुख तीर्थस्थलों और पर्यटन स्थलों की यात्रा के लिए एक अनूठी एंड-टू-एंड सेवा प्रदान करती हैं. हैदराबाद-सिकंदराबाद नगरद्वय में लोकप्रिय उपनगरीय गाड़ी अर्थात् एमएमटीएस गाड़ी सेवाओं को पहले के 48 किलोमीटर (28 स्टेशनों) से बढ़ाकर 123.52 किलोमीटर (53 स्टेशनों) तक विस्तारित किया गया है. महत्वपूर्ण बात यह है कि 2022-23 के दौरान 31 गाड़ियों की तुलना में पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान कुल 133 गाड़ियों की गति बढ़ाई गई.

दक्षिण मध्य रेलवे के कारखाने उत्कृष्टता का प्रतीक बने हुए हैं

हमारे वैगन और कैरिज कारखानों के शानदार प्रदर्शन के कारण माल ढुलाई और यात्री सेगमेंट में रिकॉर्ड कार्यनिष्पादन दर्ज किया गया है. जोन ने वर्ष 2023-24 के दौरान 6,850 वैगनों का पीओएच आउटटर्न हासिल किया, जो इसके इतिहास में अब तक का सर्वाधिक है. परिणामस्वरूप जोन में लदान के लिए अधिक संख्या में मालडिब्बे उपलब्ध हो पाए हैं. इसी प्रकार जोन ने वर्ष 2023-24 के दौरान 2,710 कोचों का पीओएच आउटटर्न हासिल किया. तिरुपति कैरिज रिपेयर वर्कशॉप ने 165 एमईएमयू कोचों का पीओएच आउटटर्न हासिल किया, जो अब तक का सर्वाधिक है और वर्ष 2023-24 के दौरान अब तक की सबसे अधिक 241 आईसीएफ कोचों को निरस्त किया.

सरकार की "आत्मनिर्भर भारत" पहल को बढ़ावा देते हुए सिगनल वर्कशॉप, मेट्टुगुडा, सिकंदराबाद को वर्ष 2021 से 143 मिमी और 220 मिमी स्ट्रोक इलेक्ट्रिक पाइंट मशीनों के उत्पादन के लिए मंजूरी दी गई थी. इस सेगमेंट में शानदार प्रदर्शन के साथ वित्तीय वर्ष 2023-24 कारखाना के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा. कारखाना ने पिछले वित्तीय वर्ष की इसी अवधि (यानी 26.56 करोड़ रु. की तुलना में 40.14 करोड़ रु.) की तुलना में वर्ष 2023-24 के दौरान संचयी उत्पादन में 51% की वृद्धि दर्ज की है.

इसी प्रकार, विजयवाडा के जोनल सेंट्रलाइज्ड स्मॉल ट्रैक मशीन डिपो को छोटी ट्रैक मशीनों को संभालने के लिए अपग्रेड किया गया है और यह छोटी ट्रैक मशीनों की ब्रेकडाउन सबंधी सभी समस्याओं के लिए सटीक समाधान साबित हो रहा है. उल्लेखनीय है कि इस इकाई ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान छोटी ट्रैक मशीनों (अर्थात 1,055) के पीओएच आउटटर्न में अब तक की सर्वाधिक प्रगति भी हासिल की है.

सामग्री प्रबंधन में अग्रणी

दक्षिण मध्य रेलवे सामग्री प्रबंधन में अग्रणी बनी हुई है. यह पीएससी स्लीपरों के लिए उच्च मूल्य निविदा को अंतिम रूप देने वाला पहला रेलवे जोन है. यूजर डिपो मॉड्यूल को जोन भर में पूरी तरह लागू किया गया है और सभी प्रयोक्ताओं को ऑन-बोर्ड किया गया है तथा पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान 17,746 करोड़ रुपये मूल्य के लेनदेन किए गए हैं. मिशन "जीरो स्क्रैप" पर जोन के विशेष फोकस के कारण दक्षिण मध्य रेलवे ने वर्ष 2022-23 में 351 करोड़ रु.की तुलना में 2023-24 के दौरान 451 करोड़ रु. प्राप्त करते हुए अपनी स्थापना के बाद से अब तक की सबसे अधिक स्क्रैप बिक्री की उपलब्धि हासिल की है.

हरित ऊर्जा अपनाने में दक्षिण मध्य रेलवे सबसे आगे

जोन ने वर्ष के दौरान अपनी सौर ऊर्जा क्षमता में और अधिक बढ़ोत्तरी करना जारी रखा. दक्षिण मध्य रेलवे की संचयी सौर क्षमता को 10.5 मेगावाट तक पहुंचाते हुए 1.226 मेगावाट की सौर ऊर्जा क्षमता जोड़ी गयी है. इस कोटि में 3 और स्टेशनों को एनर्जी न्यूट्रल स्टेशनों में परिवर्तित किया गया है जिससे कुल स्टेशन बढ़ कर अब 36 हो गए हैं. इसके अलावा, वर्ष के दौरान चार भवन अर्थात्

लेखा भवन, ओंटिमिट्टा स्टेशन, दिगुवमेट्टा स्टेशन और विनुकोंडा स्टेशनों के लिए शून्य प्लस लेबलिंग प्राप्त की गई है.

इस संबंध में जोन की गत्यात्मक पहलों के लिए भारत के माननीय राष्ट्रपति महोदय से प्राप्त 07 राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार और जोन के विभिन्न स्टेशनों और प्रशासनिक इकाइयों को प्राप्त 06 राज्य स्तरीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कारों के रूप में राष्ट्रीय और राज्य दोनों स्तरों पर प्रशंसा और मान्यता मिली है.

टीम दक्षिण मध्य रेलवे की देखभाल

जोन ने 10,000 से अधिक उम्मीदवारों को नियुक्त किया है परिणामस्वरूप संरक्षा कोटि में हमारी ताकत बढ़ गई है. जोन ने अतिरिक्त श्रमशक्ति आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सभी विभागों में 372 पदों को पुनःवितरित और पुनःपदनामित किया है. दक्षिण मध्य रेलवे ने अपने टीम के सदस्यों के लिए निरंतर क्षमता निर्माण के अवसर प्रदान करने हेतु सभी 84,840 प्रयोक्ताओं को iGOTKarmayogi पोर्टल पर पंजीकृत किया है. इनमें से 31,653 सक्रिय प्रयोक्ता हैं और लगभग 550 कर्मचारियों ने अब तक कम से कम एक बार अनिवार्य पाठ्यक्रम पूरा कर लिया है. दक्षिण मध्य रेलवे इस संबंध में अन्य जोनों के कार्यनिष्पादन से बहुत आगे है और देश के सभी सरकारी संगठनों में चौथे स्थान पर है.

इसी प्रकार, हमारे कर्मचारियों की स्वास्थ्य सेवाओं की देखभाल हेतु लगातार विभिन्न पहल की जा रही हैं. अस्पताल प्रबंधन सूचना प्रणाली (एचएमआईएस) को रोलआउट करने में भारतीय रेलवे पर पहला जोन होने के बाद, केंद्रीय अस्पताल, लालागुडा ने अब 11 मॉड्यूल लागू किया है और बाकी स्वास्थ्य इकाइयों में 4 मॉड्यूल लागू किए गए हैं. चिकित्सा क्षेत्र में भारतीय रेलवे पर पहली बार, हमारे केंद्रीय अस्पताल, लालागुडा को राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, दिल्ली द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान अंतिम क्लिनिकल और प्राक्टीकल परीक्षण करने हेतु प्राधिकृत किया गया था, जो गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में हमारे अस्पताल की बढ़ती मान्यता को दर्शाता है.

"विकसित भारत : विकसित रेलवे" : टीम दक्षिण मध्य रेलवे का लक्ष्य

भारतीय रेलवे तेजी से 'विकसित भारत: विकसित रेलवे' लक्ष्य को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ रही है और टीम दक्षिण मध्य रेलवे के प्रत्येक सदस्य को भारतीय रेलवे की इस परिवर्तनकारी यात्रा का हिस्सा बनने पर गर्व है. जोन ने "अमृत भारत स्टेशन योजना" के अंतर्गत विश्व स्तरीय सुख- सुविधाएं प्रदान करते हुए अपने नेटवर्क पर 119 रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास कार्य शुरु किया है. रेल नेटवर्क को अधिक सुदृढ़ बनाने और अपने बहुमूल्य ग्राहकों को बेहतर सेवाएं और सुख-सुविधाएं प्रदान करने हेतु जोन ने प्रमुख नई लाइन/ दोहरीकरण/ तिहरीकरण परियोजनाएं आरंभ की है. लगातार दो वर्षों के रिकॉर्ड कार्यनिष्पादन हासिल करने के बाद, टीम दक्षिण मध्य रेलवे का प्रत्येक सदस्य आगामी वर्ष में भी रिकॉर्ड प्रदर्शन सुनिश्चित करने हेतु अपने उज्ज्वल विरासत को बनाए रखने के लिए तैयार है.

सुनहरी यादें

लोकेश विश्नोई
मंडल रेल प्रबंधक, हैदराबाद मंडल

बचपन में जब मैं रेलगाड़ि यों को पटरियों पर दौड़ते देखता था तो वह मुझे करिश्मे से कम नहीं लगता था। मैं सोचता था कि इतनी बड़ी गाड़ी के इतने सारे पहिए पटरी से चिपक कर दूर-दूर तक बिना एक इंच भी टस से मस हुए कैसे चले जाते हैं। मालगाड़ियों को देखता था तो और भी अचरज में पड़ जाता था कि इतनी भारी भरकम गाड़ी इतनी आसानी से पटरी पर कैसे दौड़ लेती है जबकि हम बच्चे जब कभी भी खाली पटरी पर चलने की कोशिश करते थे तो सौ की गिनती भी पूरी नहीं कर पाते थे। चलती रेल को देख मेरी जबान से निकलता था :-

"आज भी याद है बचपन के वो पल, पापा के कंधों पर बैठा
पूछता था की रेल कैसी रहती है पटरियों के बीच
क्यों नहीं फिसल जाती ये दायें या बाएं
औरकैसे ये तेज चल देती हैं, हमसे भी तेज"

तब कहां सोचा था कि एक दिन रेलवे में राजपत्रित अधिकारी के रूप में नौकरी करूंगा और रायपुर मंडल का एडीआरएम रहूंगा, जहां पर मैं पला बड़ा था। इस रेलवे में नौकरी पाना और इस सिलसिले में लंबी यात्रा करना मेरे जीवन के कुछ ऐसे अविस्मरणीय पल हैं, मेरी स्मृति पटल के कुछ ऐसे जीवंत प्रतिबिम्ब हैं, जिनके एहसास होते ही मन प्रफुल्लित हो उठता है, रोम-रोम रोमांच से भर जाता है।

अतीत के झरोखे से झाँकने पर मैंने देखा कि मेरी स्मृति पटल पर विभिन्न रंग-रूपों वाले कई चेहरे अंकित हैं। काल रूपी कलाकार ने इन चेहरों को अपनी छेनी-हथौड़ी से मनचाहा आकार दिया है और उनमें विविध रंग भरे हैं। इन स्मृतिओं में से कुछ अब बिलकुल निष्प्राण हो चुकी हैं, उनके रंग फीके हो गए हैं, लेकिन कुछ अभी भी उतनी ही जीवंत और सुंदर हैं, जितनी वर्षों पहले थीं।

सन् 1992 की बात है जब मैं जी.ई.सी./रायपुर कॉलेज से बी.ई कर रहा था और अंतिम वर्ष का छात्र था। अंतिम वर्ष की पढ़ाई करते हुए ही मैंने भारतीय इंजीनियरिंग सेवा (आई.ई.एस.) की परीक्षा दी थी। परंतु इसके परिणाम घोषित होने में काफी समय था। अत: कोर्स समाप्त होने के कुछ दिन पूर्व जब कॉलेज में कैम्प स सेलेक्शन हेतु अनेक कम्पनियाँ आईं तो उस सेलेक्शन में मैं भी शामिल हो गया और मेरा चयन एल एंड टी जैसी विश्व विख्यात कम्पनी में इंस्ट्रूमेंटेशन इंजीनियर के रूप में हो गया। सैलरी अच्छी खासी थी, साथ ही कंपनी का नाम भी काफ़ी था, इसलिए मैंने ज्वाइन कर लिया। ज्वाइनिंग के कुछ दिनों बाद एल एंड टी में काम करने में आनंद भी आने लगा। हवाई यात्रा, स्टार होटलों में ठहरना, प्रोजेक्ट कमिशनिंग के बाद वैतनिकी अवकाश आदि अनेक तरह की सुविधाएं मिलने लगीं और तकनीकी कार्यों में मन लग गया। दूसरी बात कि यहां काम करते हुए मुझे अपनी व्यवहारिक तथा तकनीकी एप्रोच एवं समझ दोनों को विकसित करने का बेहतरीन अवसर प्राप्त हुआ, जैसे - धूतरा तथा हिरमी में स्थापित दो विश्वसस्तबरीय प्रोजेक्ट, सीमेंट मिल एवं सीमेंट प्लांट की कमीशनिंग से जुड़े कार्यों को कराना मेरे जीवन की बेहतरीन उपलब्धियों में से एक है। मुझे यह कहते हुए काफी गर्व की अनुभूति हो रही है कि कंपनी द्वारा अल्ट्रालटेक सीमेंट/ धूतरा तथा हिरमी के प्लांट की जमीन खरीदी से लेकर सीमेंट बनाने तक के पूरे प्रोजेक्ट् के कार्य मे मैं भी शामिल था, जो आज की तिथि में रायपुर रेल मंडल का बहुत बड़ा उपभोक्तार है तथा प्रतिमाह 6 रेक इनवर्ड और 2 रेक आउटवर्ड लदान करता है।

एल एंड टी में काम करके विलासितापूर्ण जीवन तो जीया जा सकता था परन्तु अच्छी सैलरी ही मेरे जीवन का लक्ष्य नहीं था। बचपन से ही रेलवे को जानने, समझने और अंगीकार करने का जुनून

मन में था। बालपन में रेल प्रणाली के बारे में अनेक प्रकार के जो कौतूहल थे वे तोकालांतर में शांत हो गए, परन्तु एक नया जुनून घर गया था और वह था रेल सेवा राष्ट्र की सेवा हैऔर मैं भी वहीं जाऊंगा। मेरे पिताजी भी अक्सर कहते थे कि पैसे कमाने के हजार रास्ते होते हैं परन्तु अर्थ के साथ-साथ देश सेवा का मौका खुशनसीबों को मिलता है। इसके बाद रेलवे में नौकरी पाना मेरे जीवन का मिशन बन गया। इसलिए मैं आई.ई.एस. की परीक्षा के अंतिम परिणाम की प्रतीक्षा कर रहा था और जैसे ही परिणाम घोषित हुए मेरी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। मेरा चयन रेलवे में सिगनल एंड टेलीकॉम इंजीनियर के रूप में हो गया था। रेलवे में एल एंड टी के मुकाबले सैलरी एवं सुविधाएं कम होने के बावजूद यह सपने पूरे होने जैसा था, इसलिए मैंने खुशी-खुशी रेल सेवा ज्वाइन करने का फैसला कर लिया।

एलएंडटी ज्वाइन करने के लगभग सवा साल बाद अक्तूबर 1993 को नियुक्ति पत्र प्राप्त हुआ और साथ में प्राप्त हुआ रेल यात्रा का प्रथम श्रेणी पास। इससे रेलवे में नौकरी पाने की खुशी दोगुनी हो गई। जाना था एक सप्ताह के प्रारंभिक प्रशिक्षण हेतु इरीसेट, सिकंदराबाद। मैंने रायपुर से सिकंदराबाद हेतु फर्स्ट ए.सी. में रिजर्वेशन कराया। पहले जिस टी.टी.ई. को मैं ट्रेन का सर्वेसर्वा समझता था, जिसे देखकर मन में अज्ञात सा भय हो जाता था, कभी- कभी रिजर्वेशन न मिलने की स्थिति में उसे देखकर पसीना पसीना हो जाया करता था, आज वही टी.टी.ई. प्रथम श्रेणी 'ए' पास देखकर और मेरा परिचय पाकर कह रहा था कि"सर, आप तो हमारे साहब हैं" और वह जी-जान से प्रोटोकॉल का पालन करने में लग गया था। थोड़ी देर में ही चाय आ गयी, समोसे आ गये। इसके बाद खाने-पीने की चीजें आती ही रहीं। अटैंडेंट पूरी तरह चौकस एवं मुस्तैद हो गए थे, एक आवाज पर हाजिर। ये सब मेरे लिए एक तिलिस्म जैसा था, मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि मैं सचमुच रेलवे का बड़ा साहब बन गया हूँ, टी.टी.ई.का बॉस बन गया हूँ। यह भावना सचमुच में मेरे लिए इतनी आह्लादकारी एवं रोमंचाकारी थी कि मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता ।

रायपुर अर्थात् छत्तीसगढ़, तत्कालीन मध्य प्रदेश; से यात्रा की शुरुआत करना, आगे महाराष्ट्र (नागपुर) पहुंचना और फिर उसके आगे दक्षिण भारतीय सहयात्रियों का मिलना, एक ऐसा सुखद संयोग था, मानो हम रेल की यात्रा न कर रहे हों बल्कि मिनी इंडिया के दर्शन कर रहे हों। पहली बार यह एहसास हुआ कि यदि हमारे देश में रेल न आई होती तो इस देश के विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय एवं अलग-अलग भाषा-भाषी लाखों लोगों को प्रतिदिन एक साथ इक्ट्ठे होने का प्लैटफार्म शायद ही मिल पाता और इससे हमारे देश की सामाजिक समरसता अपेक्षाकृत अवश्य कमजोर होती। अगले दिन 17.00 बजे सिकंदराबाद स्टेशन पहुँच गया और वहां से सीधा इरीसेट गया। वहाँ प्रवेश करते ही मन एक बार पुनः अपने कॉलेज के प्रांगण में पहुँच गया क्योंकि इरीसेट की बिल्डिंग किसी प्रसिद्ध कॉलेज से कम नहीं थी।यहाँ ठहरने, खाने, पढ़ने आदि की व्यवस्थाएं भी उत्कृष्ट होटल जैसी थी। ऐसे संस्थान से प्रशिक्षण पाना निःसंदेह सपने साकार होने जैसा था। औपचारिकताएं पूरी होने के पश्चात् एक सप्ताह की मेरी ट्रेनिंग शुरू हुई। प्रारम्भ में तो रेल संगठन के बारे में जानकारी दी गई, फिर रेल अधिकारियों के कार्य एवं उनके महत्व को बताया गया। प्रथम बार यहीं जान पाया कि रेल परिचालन में रेल अधिकारियों की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण होती है। यहीं सिखाया गया कि हम अधिकारियों को किस प्रकार कठोर अनुशासन का पालन स्वयं भी करना होता है और अपने अधीनस्थों से भी कराना होता है परन्तु प्रशिक्षण के दौरान सर्वाधिक फोकस सिगनल एवं टेलीकॉम विषयों पर दिया गया ताकि एस.एंड.टी. इंजीनियर के रूप में विधिवत् कार्य प्रारम्भ के पूर्व प्रशिक्षार्थी अधिकारी उक्त विषय के हरेक पहलू से भलीभांति अवगत हो सके।

प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षार्थीयों को ट्रेनिंग टूर पर ले जाने की परम्परा रहती है। इटीसेट द्वारा भी हमें इसी एक सप्तामह के दौरान ही कई बार ट्रेनिंग टूर पर सिकंदराबाद - हैदराबाद जुड़ाव

शहर के भ्रमण पर ले जाया गया।यह भ्रमण मेरी स्मृति में आज भी उतना ही जीवंत है जितना बाल काल में दादी-नानी से सुनी गई कहानियाँ। इस भ्रमण के दौरान ज्ञान एवं अचरज के ऐसे-ऐसे दृश्य के दीदार हुए जिन्हें भुला पाना मेरे लिए असंभव है। चारमीनार की आलौकिक छवि, गोलकोंडा फोर्ट की वास्तुकला, सालारजंग संग्राहलय की अद्‌भुत कलाकृतियां, मोती मार्केट के मोतियों की चमक,आसमान का आइना स्वरूप फलकनुमा पैलेस मेरी आँखों में आज भी रची-बसी हैं।

हैदराबाद दर्शन के क्रम में हम लोग सर्वप्रथम चारमीनार गए। चारमीनार हैदराबाद शहर के मध्य में स्थित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक इमारत है। इसकी गिनती भारत के शीर्ष दर्शनीय स्थलों में की जाती है। वर्तमान में यह हैदराबाद शहर की पहचान के रूप में विख्यात है।चारमीनार का शाब्दिक अर्थ होता है ऐसा भवन या मस्जिद जिसके चार मीनार अथवा स्तम्भ हों। इसका निर्माण सन् 1592 में मुहम्मद कुली कुतब शाह ने उस वक्त किया था जब उसने अपनी राजधानी को गोलकोंडा से हैदराबाद में बसाया था।किवदंति है कि जब शाह का राज्य पूरी तरह प्लेग की चपेट में आ गया था और अनगिनत लोग मारे जा रहे थे तो उसने अल्लाह से यह याचना की थी कि यदि राज्य में प्लेग का प्रकोप खत्म हो जाएगा तो वह एक पूजा स्थल बनाएगा और इसी प्रण को पूरा करने के लिए उनके द्वारा इस मीनार का निर्माण किया गया। वर्गाकार आकृति में बनी यह इमारत बेहद सुंदर व आकर्षक है। इसकी लम्बाई व चौड़ाई 20-20 मीटर जबकि ऊँचाई 49 मीटर है।

इसकी प्रत्येक मीनार चार मंजिली है तथा इस पर चढ़ने के लिए तकरीबन 150 घुमावदार सीढियाँ बनी हुई हैं। बाहर से आने वाले पर्यटक इन सीढ़ियों की मदद से ऊपर तक जा सकते हैं। इसके हर ओर मेहराबदार चौक बना हुआ है जो 11मीटर तक चौड़ा है। वर्ष 1889 में इन चारों मेहराबों पर एक-एक घड़ी लगवाई गई थी। पूरी इमारत का निर्माण ग्रेनाइट पत्थर और चूने से हुई है। इसकी नक्काशी और वास्तुकला का बनावट विश्वविख्यात है। बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक इसे देखने के लिए आते हैं। रात की जगमगाती दुधिया रोशनी में इसका नजारा देखने लायक होता है।

चारमीनार का बाजार भी आकर्षण का केंद्र रहता है। जहाँ प्रत्येक वस्तु आसानी से मिल जाती है।यहां की विविध रंगों की चमकीली चूड़ियाँ काफी प्रसिद्ध हैं। यह बाजार मोतियों के लिए भी काफी मशहूर है। रंग-बिरंगे एवं आकर्षक मोतियों को देखकर तो मुझे ऐसा लगने लगा कि मैं सारे मोतियों को खरीद लूँ। कहा जाता है कि अपने उत्कर्ष दौर में यहाँ चौदह हजार दुकानें लगा करती थीं। राज्य भर के लोग यहाँ खरीददारी के लिए आया करते थे। इसमें कोई दो राय नहीं है कि चारमीनार एक अद्‌भुत, आकर्षक एवं बेजोड़ दर्शनीय स्थल है।

चारमीनार के बाद हमलोग गोलकोंडा फोर्ट पहुंचे। गोलकोंडा का किला हैदराबाद शहर से 12 किमी. की दूरी पर स्थित है।यह किला अपने बेशकीमती खजानों व रहस्यमयी गुफाओं के लिए जाना जाता है। जब हम लोग इस किले के सबसे ऊपरी भाग पर गए तो हमें इसकी ऊँचाई का पता चला, जहाँ से हम पूरे हैदराबाद का दीदार कर पा रहे थे। भारत के कई राजाओं-महराजाओं ने अपने रहने के लिए या आपातकालीन स्थिति में छुपने के लिए किले बनवाए थे। गोलकोंडा किला इन्हीं में से एक है जो हैदराबाद का प्रमुख पर्यटन स्थल होने के साथ-साथ आज भी पूरे देश की शान है। यह किला भी अपनी वास्तुकला, पौराणिक कथाओं, इतिहास और रहस्यों के लिए जाना जाता है।

इस किले की शानदार भव्यता का अंदाजा इस बात से लगता है कि इसे हैदराबाद और सिकंदराबाद दोनों शहरों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए 400 फीट ऊँची पहाड़ी की चोटी पर बनाया गया थाजिसमें 8 दरवाजे और 87 गढ़ हैं। यहाँ पहुँचने के लिए एक हजार सीढियां चढ़नी पडती है। इस किले की सबसे अद्‌भुत दर्शनीय चीज इसका साउंड सिस्टम है। किले का यह साउंड सिस्टम वाला भाग किसी रहस्य से कम नहीं है। यहाँ की ध्वनि-विज्ञान किसी को भी अचरज में डाल सकता है। यह संरचना किले के प्रवेश द्वार के पास स्थित है। यहाँ द्वार के नीचे अगर आप ताली बजाएंगे तो उसकी

ध्वनि किले के सबसे ऊँचाई वाले भवन तक सुनी जा सकती है। कहा जाता है कि गोलकोंडा कभी हीरे-जवाहरातों का प्रसिद्ध बाजार हुआ करता थाऔर मशहूर कोहिनूर हीरा यहीं मिला था।

अगली ट्रिप में हमलोग सबसे पहले हुसैन सागर झील देखने पहुँचे। इटीसेट से मात्र 05कि.मी. की दूरी पर स्थित हुसैन सागर झील हैदराबाद और सिकंदराबाद के मध्य स्थित एक सुंदर झील है जो इन दो जुड़वा शहरों को अलग करती है। इस झील का हैदराबाद में वही स्थान है जो मुंबई में मरीनड्राइव का है। झील के पास लुंबिनी पार्क है जहां संगीतमय फ़व्वारे लगे हैं। शाम के समय इसका नजारा बेहद सुंदर दिखता है। यहाँ का सबसे बड़ा आकर्षण झील के बीच स्थित भगवान बुद्ध की 17.5मी. लंबी पत्थर की प्रतिमा है। यह एक ही पत्थर को तराशकर बनाई गई है और विश्व की सबसे बड़ी मूर्तियों में से एक है। झील के दूसरी तरफ एक विशालकाय बिरला मंदिर है, जिसमें एक नक्काशीदार मूर्ति है जो हम लोगों को काफी आकर्षक लगी। श्रद्धालुओं का जमावारा तथा पूजा के लिए सभी चीजों की उपलब्धता ने मन को विभोर कर दिया।

यहां से कुछ घंटों के बाद हमलोग सालारजंग संग्रहालय के भ्रमण के लिए गए। यह संग्रहालय, हैदराबाद शहर में मूसी नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है जो कि विश्वए के सबसे बड़े संग्रहालयों में से एक और भारत का तीसरा सबसे बड़ा संग्रहालय है। सलारजंग के नाम से मशहूर नवाब मीर यूसुफ अली खान द्वारा विभिन्न यूरोपीय, एशियाई और सुदूर पूर्वी देशों की विभिन्नब उत्कृरष्ट कृतियों को यहां संग्रहित कर रखा गया है । इस संग्रहालय में कई अद्‌भुत संग्रहों के दर्शन हुए जिनमें से कुछ भारतीय लघु चित्रों एवं शैलियों के हैं तो कुछ अरबी, फारसी व रोमन साम्रज्य के कुछ शिल्प् 14वीं और 15वीं शताब्दी के बने हैं तो कुछ उससे भी प्राचीन कालखंड के इस संग्रहालय में कई अन्य रोचक वस्तुएं भी हैं। पश्चिमी देश, यूरोप, चीन, जापान, नेपाल, म्यांमार,मध्य एशिया, दक्षिण एशिया एवं भारत सहित अनेक देशों की विभिन्न कलाकृतियां व प्रदर्शित वस्तु एं वस्तुसत: ज्ञान के अमिट कोष हैं । इसे ज्ञान का संग्रहालय कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

अंत में हम लोग फलकनुमा पैलेस पहुँचे। फलकनुमा पैलेस भारत के बहुत ही सुंदर एवं श्रेष्ठ स्थानों में से एक है। प्रारम्भ में यह हैदराबाद स्टेट का अंग था जिसे बाद में निजामों द्वारा अधिपत्य कर लिया गया। यह फलकनुमा 32 एकड़ क्षेत्र पर बना हुआ है तथा चारमिनार से 5 किमी की दूरी पर स्थित है। इसका निर्माण नवाब वकार उल उमर द्वारा किया गया था जो कि हैदराबाद के प्रधानमन्त्री थे। फलकनुमा का तात्पर्य होता है- “आसमान की तरह” अथवा “आसमान का आइना”। इसका निर्माण पूर्णतया इटेलियन पत्थर द्वारा किया गया है। निजाम द्वारा इस महल को शाही अतिथि गृह की तरह प्रयोग किया जाता था क्योंकि इससे पूरे शहर का नज़ारा देखने को मिलता था । कहा जाता है कि सन 1883 में इस पैलेस में ओस्लेर द्वारा टेलीफ़ोन तथा विद्युत् सिस्टम की सेवा शुरू की गयी थी । आंकड़ों के अनुसार इस पैलेस में उपलब्ध स्विच बोर्ड भारत में उपलब्ध सबसे बड़े स्विच बोर्डों में से एक है. इस पैलेस में 101 सीटों वाला भोजन गृह है जिसे संसार का सबसे बड़ा डाइनिंग हॉल माना जाता है। इस हॉल में स्थित टेबल भी हमलोगों को काफी आकर्षक लगा। कहते हैं कि उस समय ऐसी दो टेबल का निर्माण किया गया था जिनमें से एक बकिंघम पैलेस में है और दूसरी यहां । साथ ही साथ इसके दरबार हॉल भी विश्वस्तरीय शिल्प के अनुप्रयोगों से सुसज्जित है।

सिकंदराबाद प्रशिक्षण पूरा होने के पश्चात वहीं से मुझे तीन महीने के प्रशिक्षण के लिए भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी,बड़ोदरा जाना था। इसलिए मैंने 30 नवम्बर 1993 को सिकंदराबाद से बड़ोदरा हेतु प्रथम ए.सी. में रिजर्वेशन कराया। इस बार मेरे साथ विभिन्न रेलों एवं क्षेत्रों के कुल 24 अधिकारी थे। मेरे साथ कुल 14 अधिकारियों ने रिजर्वेशन कराया और शेष 10 अधिकारियों ने किसी अन्य गाड़ी में। परन्तु 14 में से 10 के ही आरक्षण हो पाए थे, उनमें से कुछ कन्फर्म भी नहीं थे। कुल मिलाकर 12 लोग 06 सीट पर जाने के लिए मजबूर हो गए क्योंकि टी.टी.ई.(कंडक्टर) द्वारा भी कोई

व्यवस्था नहीं की जा सकी । इस कारण मन में थोड़ी खीझ भी हुई, ऐसा महसूस हुआ कि हमारी खुशी के चांद में यह एक तरह का दाग है। परन्तु हर रात के बाद सुबह होती है । कुछ समय बाद यही टी.टी.ई. हमारे मेजबान बन गए। उसने एक और सीट दी, खाने-पीने की व्यवस्था करते रहे। इसी यात्रा में मैंने पहली बार मीठा समोसा खाया और गुजरात में सारी चीजें मीठी मिलेंगी इसकी जानकारी पहली बार हुई। पहली बार यह भी एहसास हुआ कि गुजराती लोग अपने मीठे व्यंजनों की तरह स्वभाव के भी मीठे होते हैं क्योंकि हमारे सहयात्री गुजराती थे और उन्होंने अपने बच्चों को अपने साथ सुलाकर हमारी सीटिंग व्यवस्था में काफी मदद की थी। उन गुजराती भाइयों के द्वारा हम यात्रियों की मदद करते देख मैं काफी अभिभूत हो गया। उस यात्रा में हम लोग एक परिवार की तरह घुल-मिल गए थे। रास्ते भर खाते-पीते, गेम एवं अन्तराक्षी खेलते हुए इस तरह आए मानों समय ही हमारे लिए कम पड़ गया हो। यह यात्रा हमारे लिए न केवल चिर स्मरणीय यात्रा रही अपितु जीवन भर के लिए यह सीख दे गई कि हमें अपने सहयात्रियों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए। आज भी मुझे यह सीख रेल यात्रियों को 'अतिथि देवो भवः' मानकर यात्री-सुविधाओं की हरसंभव व्यवस्था करने में कितनी प्रेरित करती है, इसे मैं शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर सकता।

बड़ोदरा में भी प्रशिक्षण कार्यक्रम काफी शानदार रहा, तीन माह कैसे गुजर गए पता ही नहीं चला। नायर (NAIR- नेशनल एकेडमी ऑफ इंडियन रेलवे)/ बड़ोदरा जिसे उस समय रेलवे स्टाचफ कॉलेज कहा जाता था, में रहते हुए हमने नई-नई चीजें सीखने के साथ-साथ बड़ोदरा के कई महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध स्थलों के दीदार भी किए। गायकवाड राजघराने का 'लक्ष्मी विलास पैलेस', सूर्य नारायण मंदिर, गायत्री शक्तिपीठ तथा सुरसागर झील– इन सभी स्था नों का अपने कोर्समेट के साथ भ्रमण किए।सुरसागर झीलपहुंचकर काफी देर तक शांति से बैठने का अवसर मिला। इस दौरान मन मस्तिष्क में छत्तीसगढ़ (पुराना मध्यप्रदेश) महाराष्ट्र, तेलांगाना एवं गुजरात के दृश्य चलचित्र की तरह आंखो के सामने आने लगे और इस बात के पुख्ता प्रमाण दे गए कि भारत में कितनी विविधताएं हैं । सचमुचमें हमारे देश में अलग-अलग वाणी, खान-पान, रहन-सहन, उपासना विधि होने के बाद भी हम एक परिवार की तरह रहते हैं, पूरे विश्व के लिए अनेकता एवं एकता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, यही हमारी पहचान है, हमारी संस्कृति का विधान है और हमारे लोकतंत्र की शान है।

बड़ोदरा प्रशिक्षण एवं टूर के दौरान हमने न केवल रेल संचालन से जुड़ी चीजें सीखीं बल्कि यहीं भलीभांति जान पाया कि रेलवे भी एक परिवार हैऔर टीमवर्क इसकी पहचान है । इसी भावना से प्रत्यक्षतः रेल की और परोक्षतः राष्ट्र की सेवा की जा सकती है। इस कारण प्रशिक्षार्थियों से लेकर प्राचार्य तक के बीच जो आत्मी यता के दर्शन यहाँ हुए उन्हें शब्दोंष में बयां नहीं किया जा सकता ।

90 शानदार दिन बीत जाने के बाद घड़ी आ गई विदाई की । काफी यादगार विदाई समारोह आयोजित किये गए और फिर एक दूसरे से मिलने- बिछुड़ने के बाद सभी प्रशिक्षार्थी अपने-अपने गंतव्य की ओर रवाना हो गए, मैं भी वापस अपने गृहनगर आ गया– अनेक स्मृतियों को झोली में समेटें। स्मृतियाँ ज्यादातर खट्टी एवं मीठी- दोनों होती हैं, परन्तु मेरी इस यात्रा की स्मृतियों में केवल मिठास ही मिठास है । इन स्मृतियों के बारे में मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ -

"जीवन की राहों में
हर पल छूटता जाता है, इक - इक लम्हा ।
वे फिर न मिलतें हैं, कहीं दोबारा !
चुनता रहता हूँ मैं, वे ही लम्हें
और संजो रखता हूँ यहाँ !
वही लम्हा, फिर सुकून संग
जीने को मन करता है, पर
हाथों से बिखरे पल वापस कब आते हैं ! ''

पुस्तक समीक्षा - कर्म योग (स्वामी विवेकानंद)

मुकेश कुमार नागर
उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर
सवारी डिब्बा मरम्मत कारखाना, तिरुपति

स्वामी विवेकानंद जी की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक है - कर्म योग, जो स्वामीजी द्वारा 1896 में न्यूयॉर्क से अपने किराए के कमरे में दिए गए व्याख्यानों पर आधारित है.

कर्म योग आत्मज्ञान के कई योग मार्गों में से एक है. वास्तविक दुनिया में काम करके, लेकिन काम से आसक्ति छोड़कर, हम आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं.

प्रत्येक क्रिया शारीरिक और मानसिक, जो काम हम करते हैं वह कर्म है. हमारा कर्म करने में ही अधिकार है उसके फल का नहीं, जब हम कोई अच्छा काम करते हैं तो उसका परिणाम क्या होगा, इसपर तनिक भी ध्यान नहीं देना चाहिए. आदर्श मनुष्य वह है जो शांति और एकांत में भी लगातार कर्म करता रहता है और जो सबसे ज्यादा कर्म का केंद्र होता हुआ भी शांति और एकांत पाता है.

स्वामीजी ने एक राजा और एक संन्यासी की कहानी का उपयोग करते हुए 'संसार में कौन बड़ा है' को खूबसूरती से समझाया है. यदि तुम संसार में रहते हो, तो उन पक्षियों की भांति रहो, परोपकार के लिए किसी भी समय अपना शरीर तक दे सको. यदि संसार से अलग रहना चाहते हो, तो उस संन्यासी की भांति रहो जिसके लिए एक सुन्दर राजकुमारी और एक साम्राज्य भी तिनके बराबर थे. यदि गृहस्थ हो, तो दूसरों के लिए जियो, यदि सन्यासी हो तो सौंदर्य, शक्ति, सम्पत्ति की ओर आंख उठाकर भी न देखो. हर धर्म अपने-अपने स्थान पर श्रेष्ठ है. अपनी परिस्थितियों के अनुकूल हमें अपने धर्म का पालन करना आवश्यक है.

ज्ञान दान, वस्त्र, भोजन आदि के दान से बढ़कर है यह जीवन दान से भी श्रेष्ठ है.

उन्नति करने का एक ही मार्ग है, हाथ में जो काम है उसे अधिक-से-अधिक परिश्रम द्वारा करते जाएं, जब तक कि वह सर्वोच्च दशा में न आ जाये. किसी भी प्रकार का कर्तव्य बुरा नहीं. जो मनुष्य छोटा काम करता है वह उस कारण उस व्यक्ति से छोटा नहीं जो बड़ा काम करता है. मनुष्य की महत्ता उसके कर्तव्य में नहीं अपितु कर्तव्य पालन में होती है. वह उसे कैसे और किस योग्यता से करता है - वह मोची जो कम-से-कम समय में एक सुन्दर मजबूत जूतों का जोड़ा बना सकता है, उस पण्डित से कहीं अच्छा है, जो दिन-भर इधर-उधर अंट-संट हांका करता है.

'कर्म योग' पुस्तक से हमें यह सीख मिलती है कि यह जीवन हमको कर्म करने के लिए मिला है बिना कर्म किए हम एक क्षण भी नहीं रह सकते. इसलिए कर्म में अकर्म और अकर्म से कर्म देखते हुए किस प्रकार उन्हें ईश्वर अर्पण किया जाए यह रहस्य इस पुस्तक में अत्यन्त सरलता पूर्वक समझाया गया है. यदि आप अपना जीवन सरल बनाना चाहते हैं तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढें.

ई-ऑफिस में हिंदी का प्रयोग

आशा महेश कुमार
राजभाषा अधिकारी
विजयवाडा

ई-ऑफिस एक एकीकृत फाइल और रिकॉर्ड प्रबंधन प्रणाली है, जो आंतरिक डाटा के सुगम उपयोग के साथ सामग्री प्रबंधन को सरल बनाता है. यह एप्लीकेशन फाइल की ट्रैकिंग और अभिलेखीय डेटा को आसानी से उपलब्ध कराता है. सिस्टम और डाटा पूरी तरह सुरक्षित और गोपनीय रखता है.

ई-ऑफिस सिस्टम से रेलवे के कार्यों में पारदर्शिता आएगी और लंबे समय तक कोई फाइल नहीं अटकेगी. समय से फाइलों का निपटारा होने से रेल के विकास कार्यों में और तेजी आएगी. सबसे बड़ी खासियत यह है कि सारा डेटा कलेक्ट रहेगा और फाइल के जलने या खराब होने पर डेटा गायब होने की समस्या नहीं आएगी. कंप्यूटर पर ही फाइल के स्टेटस अपडेट होंगे और हर फाइल का निपटारा समय पर हो रहा है या नहीं इसकी ऑनलाइन मॉनिटरिंग भी की जाएगी.

ई ऑफिस पर हिंदी में काम करने के लिए तीन पद्धतियां हैं - वे हैं

1. **Inbuilt e-File Noting Editor**
2. **Hindi Keyboard (Physical)**
3. **Hindi Keyboard (Virtual)**

1) Inbuilt e-File Noting Editor पद्धति : Inbuilt e-File Noting Editor के लिए आपको पहले ई-ऑफिस में जाना होगा तथा हिंदी भाषा का चयन करना होगा, जिससे आप Phonetics setup के माध्यम से हिंदी में टाइप कर सकते हैं, यानि सामान्य अंग्रेजी की-बोर्ड का प्रयोग करते हुए आप हिंदी में टाइप कर सकते हैं.

2) Hindi Keyboard (Physical) पद्धति : Hindi Keyboard (Physical) के माध्यम से हिंदी में काम करने के लिए आपको अपने सिस्टम को पहले हिंदी मोड में एक्टिवेट करना होगा जिसके लिए टास्क बार के दाईं ओर Language पर क्लिक कर हिंदी भाषा का चयन कर सकते हैं, इसका default keyboard है Inscript key board, इसे 'देवनागरी की बोर्ड' भी कहते हैं. Inscript key board का उपयोग करने के लिए इसे सीखना होगा, तब आप हिंदी में टाइप कर सकते हैं. हिंदी मोड में आने के लिए आपको Alt और Shift को एक साथ दबाना होगा.

3) Hindi Keyboard (Virtual) पद्धति: Hindi Keyboard (Virtual) के माध्यम से हिंदी में टाइप करने के लिए आपको पहले कंट्रोल पैनल पर जाना होगा तथा उसमें Ease of Access पर क्लिक करना होगा उसमें On Screen Keyboard का प्रयोग करते हुए ई-ऑफिस पर हिंदी में काम कर सकते हैं. यहां भी हिंदी में टाइप करने के लिए पहले हिंदी मोड में आना होगा, जिसके लिए आपको Alt और Shift को एक साथ दबाना होगा.

उपर्युक्त के अलावा ई-ऑफिस पर settings में जाकर Quick Noting विकल्प के ज़रिए हिंदी शब्दों को आप save कर सकते हैं, बाद में उन शब्दों को यथावश्यक ई-ऑफिस पर कॉपी और पेस्ट कर सकते हैं.

ई-ऑफिस पर सेव किये गये हिंदी शब्दों का प्रयोग करने के लिए ग्रीन नोट में Quick noting पर उपलब्ध Hindi/Others विकल्प के ज़रिए या user defined के माध्यम से भी हिंदी शब्दों का प्रयोग करते हुए आप ई-ऑफिस पर हिंदी में काम कर सकते हैं.

उपर्युक्त पद्धतियों के ज़रिए आप जिस प्रकार से अंग्रेजी में ई-ऑफिस पर आसानी से काम कर सकते हैं उसी प्रकार हिंदी में भी बहुत आसानी से काम कर सकते हैं.

कॉर्पोरेट से व्यक्तिगत ब्रांडिंग तक
पिछले दशक में जनसंपर्क की विभिन्न भूमिकाएँ

सुश्री नुसरत एम मंद्रुपकर
जनसंपर्क अधिकारी
विजयवाड़ा मंडल

पिछले दशक में पब्लिक रिलेशंस (जनसंपर्क) ने महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा है, जिससे कॉर्पोरेट और व्यक्तिगत ब्रांडिंग दोनों की गतिशील जरूरतों को पूरा किया जा सके। जनसंपर्क की पारंपरिक भूमिका, जो मीडिया रिलेशंस और प्रेस रिलीज़ पर केंद्रित थी, अब विस्तृत रणनीतियों को शामिल करती है, जिनका उद्देश्य एक सकारात्मक छवि का निर्माण और रखरखाव करना है। यह निबंध पिछले दस वर्षों में कॉर्पोरेट और व्यक्तिगत ब्रांड्स को आकार देने में जनसंपर्क द्वारा निभाई गई विभिन्न भूमिकाओं का पता लगाता है, जिसमें प्रमुख रुझान और उभरती रणनीतियाँ शामिल हैं।

पब्लिक रिलेशंस (जनसंपर्क) का विकास

1. **कॉर्पोरेट ब्रांडिंग**: कॉर्पोरेट ब्रांडिंग में एक संगठन के लिए एक अनूठी पहचान और सुसंगत छवि बनाना शामिल है। पिछले दशक में, जनसंपर्क ने कॉर्पोरेट ब्रांड्स को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें स्टोरी टेलिंग, आपदा प्रबंधन, और सामुदायिक जुड़ाव पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
    - **स्टोरी टेलिंग**: आधुनिक जनसंपर्क प्रोफेशनल ऐसी कहानियाँ बनाने में माहिर होते हैं जो दर्शकों के साथ जुड़ाव पैदा करती हैं। इसमें एक कंपनी के मूल्यों, मिशन और प्रभाव को उजागर करने वाली कहानियाँ बनाना शामिल है, जिससे ब्रांड को पहचान मिलती है और हितधारकों के साथ गहरे संबंध बनते हैं।
    - **संकट प्रबंधन**: एक ऐसे युग में जहाँ जानकारी तेजी से फैलती है, आपदा प्रबंधन में जनसंपर्क की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। कंपनियाँ आपदाओं का प्रबंधन करने, मुद्दों का शीघ्र समाधान करने, सार्वजनिक रूप से पारदर्शी संचार करने और विश्वास बहाल या दिलाने करने के लिए जनसंपर्क विशेषज्ञों पर निर्भर होती हैं। प्रभावी आपदा प्रबंधन नुकसान को कम कर सकता है और लंबे समय में कंपनी की प्रतिष्ठा को भी बढ़ा सकता है।
    - **सामुदायिक जुड़ाव**: स्थानीय समुदायों और हितधारकों के साथ जुड़ाव कॉर्पोरेट जनसंपर्क का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। इसमें कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) कार्यक्रम, प्रायोजन, और गैर-लाभकारी संगठनों के साथ साझेदारी जैसी चहलकदमियाँ शामिल हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ कंपनियों को सकारात्मक छवि बनाने और सामाजिक कारणों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाने में मदद करती हैं।
2. **व्यक्तिगत ब्रांडिंग**: सोशल मीडिया और गिग इकॉनमी के उदय ने जनसंपर्क का ध्यान व्यक्तिगत ब्रांडिंग की ओर स्थानांतरित कर दिया है। व्यक्तिगत ब्रांडिंग का मतलब अपनी छवि और प्रतिष्ठा का प्रबंधन करना है ताकि व्यावसायिक और व्यक्तिगत लक्ष्य प्राप्त किए जा सकें। पिछले दशक में जनसंपर्क ने इसे विभिन्न तरीकों से सुगम बनाया है।

- **सोशल मीडिया उपस्थिति**: उद्यमियों, प्रभावशाली व्यक्तियों, और पेशेवरों सहित व्यक्ति, सोशल मीडिया प्लेटफार्मों का उपयोग अपने ब्रांड बनाने के लिए करते हैं। जनसंपर्क प्रोफेशनल सोशल मीडिया प्रोफाइल बनाने और प्रबंधित करने, सामाजिक रणनीतियाँ विकसित करने और अनुयायियों के साथ जुड़ने में मदद करते हैं। एक मजबूत सोशल मीडिया उपस्थिति दृश्यता, विश्वसनीयता और अवसरों को बढ़ा सकती है।
- **इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग**: पिछले दशक में इन्फ्लुएंसर इकॉनमी में उछाल आया है, जिसमें जनसंपर्क ने ब्रांड्स को इन्फ्लुएंसरों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्फ्लुएंसर अपने व्यक्तिगत ब्रांडों का उपयोग उत्पादों और सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए करते हैं, जिससे अपने दर्शकों के साथ प्रामाणिक संबंध बनते हैं। जनसंपर्क उपयुक्त इन्फ्लुएंसरों की पहचान करने, साझेदारी पर बातचीत करने, और अभियानों का प्रबंधन करने में मदद करता है।
- **प्रतिष्ठा प्रबंधन**: डिजिटल युग में व्यक्तिगत प्रतिष्ठा नाजुक होती है। जनसंपर्क प्रोफेशनल व्यक्तियों को उनकी ऑनलाइन उपस्थिति का प्रबंधन करने, नकारात्मक प्रचार का जवाब देने, और एक सकारात्मक छवि बनाने में मदद करते हैं। इसमें ऑनलाइन वार्तालापों की निगरानी करना, नकारात्मक टिप्पणियों का जवाब देना, और सकारात्मक सामग्री को बढ़ावा देना शामिल है।

<u>पब्लिक रिलेशंस में प्रमुख रुझान</u>

1. **डिजिटल परिवर्तन**: डिजिटल क्रांति ने जनसंपर्क प्रथाओं को काफी प्रभावित किया है। डिजिटल प्लेटफार्मों की वृद्धि ने जनसंपर्क पेशेवरों के लिए नए अवसर और चुनौतियाँ पैदा की हैं।
    - **सामग्री निर्माण और वितरण**: डिजिटल प्लेटफार्म विभिन्न प्रकार की सामग्री जैसे ब्लॉग, वीडियो, पॉडकास्ट, और इन्फोग्राफिक्स बनाने और वितरित करने की अनुमति देते हैं। जनसंपर्क प्रोफेशनल इन प्लेटफार्मों का उपयोग व्यापक दर्शकों तक पहुंचने, हितधारकों के साथ जुड़ने, और अपने प्रयासों के प्रभाव को मापने के लिए करते हैं।
    - **डेटा-चालित जनसंपर्क**: डेटा विश्लेषण उपकरणों की उपलब्धता ने जनसंपर्क को अधिक डेटा-चालित अनुशासन बना दिया है। जनसंपर्क प्रोफेशनल अब वास्तविक समय में दर्शकों के व्यवहार, भावना, और जुड़ाव को ट्रैक और विश्लेषण कर सकते हैं, जिससे अधिक लक्षित और प्रभावी रणनीतियाँ बनाई जा सकती हैं।
2. **एकीकृत विपणन संचार**: जनसंपर्क तेजी से अन्य विपणन कार्यों जैसे विज्ञापन, सामग्री विपणन, और सोशल मीडिया विपणन के साथ एकीकृत हो रहा है। यह समग्र दृष्टिकोण सुसंगत संदेश सुनिश्चित करता है और ब्रांडिंग प्रयासों के प्रभाव को अधिकतम करता है।
    - **क्रॉस-चैनल अभियान**: जनसंपर्क अभियानों में अब अक्सर कई चैनल शामिल होते हैं, जिनमें पारंपरिक मीडिया, सोशल मीडिया, और डिजिटल प्लेटफार्म शामिल हैं। एकीकृत अभियान यह सुनिश्चित करते हैं कि ब्रांड संदेश सुसंगत हो और व्यापक दर्शकों तक पहुँचे।
    - **सहयोगी रणनीतियाँ**: जनसंपर्क प्रोफेशनल विपणन, विज्ञापन, और डिजिटल टीमों के साथ मिलकर काम करते हैं ताकि एकीकृत रणनीतियाँ विकसित की जा सकें। यह सहयोग ब्रांड की सुसंगतता और प्रभावशीलता को बढ़ाता है, प्रत्येक अनुशासन की ताकत का लाभ उठाता है।

चुनौतियाँ और अवसर

1. **चुनौतियाँ**
   - **गलत जानकारी और फेक न्यूज़**: गलत जानकारी और फेक न्यूज़ का तेजी से फैलना जनसंपर्क प्रोफेशनल्स के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है। गलत जानकारियों का प्रबंधन और ब्रांड की प्रतिष्ठा की सुरक्षा के लिए सतर्कता और सक्रिय संचार की आवश्यकता होती है।
   - **प्रामाणिकता बनाए रखना**: अत्यधिक जानकारी के युग में प्रामाणिकता बनाए रखना महत्वपूर्ण है। जनसंपर्क प्रोफेशनल्स को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ब्रांड संदेश वास्तविक हों और दर्शकों के साथ जुड़ें। प्रामाणिकता विश्वास और दीर्घकालिक निष्ठा का निर्माण करती है।
2. **अवसर**
   - **उभरती प्रौद्योगिकियाँ**: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और वर्चुअल रियलिटी (VR) जैसी प्रौद्योगिकियों में प्रगति, जनसंपर्क के लिए नए मार्ग प्रदान करती है। ये प्रौद्योगिकियाँ स्टोरी टेलिंग को बढ़ा सकती हैं, दर्शकों की संलिप्तता को सुधार सकती हैं, और ब्रांड्स को अनुभव करने के लिए नवीन तरीकों की उपलब्धता पेश कर सकती हैं।
   - **वैश्विक पहुंच**: डिजिटल प्लेटफार्म ब्रांड्स और व्यक्तियों को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने में सक्षम बनाते हैं। जनसंपर्क प्रोफेशनल इसका लाभ उठाकर अपनी पहुंच का विस्तार कर सकते हैं, विभिन्न दर्शकों के साथ जुड़ सकते हैं, और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा बना सकते हैं।

निष्कर्ष

पिछले दशक में जनसंपर्क (पब्लिक रिलेशंस) की भूमिका में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है, जो पारंपरिक मीडिया रिलेशंस से एक बहुआयामी क्षेत्र में परिवर्तित हो गया है, जो कॉर्पोरेट और व्यक्तिगत ब्रांडिंग दोनों का समर्थन करता है। जनसंपर्क प्रोफेशनल्स ने डिजिटल परिवर्तन, एकीकृत विपणन संचार, और नई प्रौद्योगिकियों को अपनाकर एक बदलते परिदृश्य में सकारात्मक छवियों का निर्माण और अनुरक्षित किया है। गलत जानकारी और प्रामाणिकता की आवश्यकता जैसी चुनौतियों के बावजूद, उभरती प्रौद्योगिकियों और वैश्विक पहुंच द्वारा प्रस्तुत अवसर जनसंपर्क के विकास और आधुनिक युग में इसके महत्व को निरंतर बढ़ावा देते हैं। जैसे-जैसे जनसंपर्क अनुकूलित होता है, धारणा को आकार देने, सुस्थापित और लचीले ब्रांडों का निर्माण करने में इसकी भूमिका अपरिहार्य बनी रहेगी।

झारखंड की वादियों में

शिखा विश्नोई
पत्नी, लोकेश विश्नोई
मंडल रेल प्रबंधक, हैदराबाद

गोल - गोल चक्कर, गोल - गोल चक्कर.... इस चक्कर को पकड़ो और वहीं बस जाओ । जानती हूँ आप लोग कहेंगे कि ये क्या बचकानी बातें हुईं । मगर क्या करूं, अगर किसी जगह का अजीब -सा नाम हो तो उस नाम को एकदम पक्का याद रखने के लिए ऐसा ही कुछ तरीका अपनाना पड़ता है । असल में मेरी शादी पक्की हुई थी रेलवे के सिगनल एवं टेलीकॉम विभाग के एक साहब से और उन्होंने अपनी पोस्टिंग की जगह बताई थी 'चक्रधरपुर' । अब क्या करूं, जगह का नाम याद करना जरा मुश्किल हो रहा था सो मैंने पोस्टिंग की जगह पक्का याद रखने के लिए उक्त ट्रिक बनाई थी । गोल - गोल चक्कर.... यानी 'चक्र', उसको पकड़ो यानी 'धर', इस प्रकार हुआ चक्रधर और उसमें बस जाओ मतलब 'चक्रधरपुर' ।

मुझे पता है आपलोग हंस रहे होंगे, बल्कि ठहाके लगा रहे होंगे । लेकिन मैं भला और क्या करती, चक्रधरपुर कभी सुनी नहीं थी और न भूगोल में कभी पढ़ी थी तो उसे याद रखने के लिए ऐसी ट्रिक अपनानी पड़ी । मेरी इस ट्रिक पर वो भी हंस रहे थे, तब मैंने उनसे कहा कि आप लोग तो रेलकर्मी हैं, आपको याद रहता होगा चक्रधरपुर नाम, पर हम कॉमन पर्सन के लिए ऐसी तरकीब लगेगी न और उस पर तीन नकद न तेरह उधार । फिर मैंने उनसे पूछा कि आपकी पोस्टिंग और कहां - कहां हो सकती है ? इस पर उन्होंने ऐसी-ऐसी जगहें गिना दीं जो मेरे लिए पहेलियों की तरह थीं । अब खड़गपुर, आद्रा, खुर्दा को आप क्या जानेंगे ? ये सारे नागपुर और बिलासपुर के अलावा रेलवे के बड़े-बड़े डिविजिन थे । और तो और उन्होंने अपनी पहली पोस्टिंग की बात करते हुए बताया था कि वे राउरकेला शहर के पास एक छोटी सी जगह बंडामुंडा में भी रहे थे । अब मैं इस बंडामुंडा को कैसे याद रखती । उन्होंने बताया कि बंडामुंडा रेलवे का बहुत बड़ा एवं महत्वपूर्ण यार्ड है ।

खैर इन सब अजीब - सी जगहों को रेलकर्मी ही याद रखे, मैं तो अब वह किस्सा सुनाने जा रही हूँ जो मेरी यादगार रेल यात्रा रही है । सन् 1998 की बात है, हमारी नई - नई शादी हुई थी और पहली बार इनके साथ चक्रधरपुर आई थी । चक्रधरपुर दक्षिण पूर्व रेलवे का अत्यंत महत्वपूर्ण मंडल था और आज भी है । कस्बेनुमा इस छोटे से शहर की पहचान रेल मंडल से ही थी । विवाह के पश्चात् लोग हिल स्टेशन या मशहूर स्थानों के सैर पर जाते हैं, मैं भी गई थी, पर चक्रधरपुर की धरती पर पहुँचकर झारखंड को करीब से जानना सचमुच मेरे लिए आनंददायक एवं ज्ञानवर्द्धक दोनों रहा है और इसलिए मेरी यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे अधिक स्मरणीय यात्रा रही है ।

चूंकि बात 1998 की है और विवाह के पूर्व रेलगाड़ियों से सफर करने भर से मतलब होता था । सफर समाप्त, गाड़ी का नाम- नं. भी जेहन से ओझल । इसलिए उस समय किस गाड़ी नं. से इनके साथ पहली बार चक्रधरपुर आई थी, ठीक -ठीक याद नहीं । हां, इतना जरूर याद है कि इन्हें वहां ड्यूटी

ज्वाइन करनी थी और मुझे करना था अपने पत्नी धर्म का पालन । इसलिए हम लोगों ने उस दिन दोपहर 12.00 बजे के आस-पास की एक एक्सप्रेस ट्रेन, शायद अहमदाबाद एक्सप्रेस थी, से अपनी यात्रा प्रारंभ की थी और लगभग रात्रि 10.00 बजे के आस -पास हम लोग चक्रधरपुर पहुँचे थे । इस छोटी- सी यात्रा के दौरान एक बुजुर्ग दम्पत्ति से हमारी मुलाकात हुई । उनकी अवस्था उस वक्त लगभग 50 - 55 वर्ष की होगी । पूरी यात्रा के दौरान वे दोनों हमारे सहयात्री रहे । इनका सान्निध्य पाकर हमलोग यह सोचकर काफी खुश हुए कि बंद केबिन में बातचीत करने के लिए कोई तो मिला । परंतु उक्त दम्पत्ति 'कोई' नहीं था, उनके पास ज्ञान और अनुभव का सागर था । पति - पत्नी दोनों जमशेदपुर स्थित जेवियर लेबर रिलेशन इंस्टीट्यूट (एक्स.एल.आर.आई), जिसे आज जेवियर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट कहा जाता है, के प्रोफेसर थे । प्रबंधन विषय के प्राध्यापक होने के बावजूद दोनों को अपने- अपने विषयों के साथ- साथ राजनीति, साहित्य और झारखंड के सामाजिक संरचना, खान-पान, रीति- रिवाज, आदि का जो ज्ञान था वह अद्‌भूत था जबकि दोनों में से कोई भी झारखंड के मूल निवासी अर्थात् आदिवासी नहीं थे ।

हम लोगों ने अपनी यात्रा रायपुर से शुरू की थी और वे लोग चढ़े थे बिलासपुर में तथा जा रहे थे जमशेदपुर क्योंकि जमशेदपुर उनकी कर्मभूमि थी, हालां कि वेलोग मूल रूप से राजस्थान के रहने वाले थे। चूंकि हमलोगों का भी मूल निवास स्थान राज स्थान ही है, इसलिए हमारी पहचान मिनटों में घनिष्ठ संबंध में बदल गई । क्योंकि जिस प्रकार मूल जानना बड़ा कठिन है वीरों का, उसी प्रकार मूल भूल जाना बड़ा कठिन हो जाता है इंसानों को । अपने प्रांत का पाकर हमलोग आपस में एक-दूसरे को एक परिवार, एक घर का समझने लगे, आपस में चाय, कॉफी, स्नैक्स, आदि सब कुछ शेयर करने लगे । दोनों परिवारों का संबंध अलग- अलग कार्यक्षेत्रों से था, लिहाजा बातचीत के दौरान दोनों के बीच अपने- अपने कार्यों को लेकर चर्चा होनी ही थी । उनके द्वारा इनसे रेलवे की टिकट प्रणाली, रिजर्वेशन सिस्टम, ऑपरेटिंग सिस्टम, सिगनलिंग सिस्टम आदि की काफी सारी जानकारी ली गई । आमतौर पर लोग टिकट प्रणाली, रिजर्वेशन कन्फर्म कराने के उपाय एवं ट्रेनों की लेट लतीफी के बारे में ही बात करते हैं, परंतु हमारे सहयात्री सज्जन को जब मैंने रेलवे की ऑपरेटिंग एवं सिगनलिंग व्यवस्था के बारे में जानकारी लेते देखा तो मैं सन्न रह गई और मुझे पक्का विश्वास हो गया कि यह व्यक्ति केवल समय काटने के लिए चर्चा नहीं कर रहे हैं बल्कि इनमें जिज्ञासा कूट -कूट कर भरी है । हम लोगों को भी उनसे जेवियर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, मैनेजमेंट स्टडीज तथा मैनेजमेंट स्टडीज के फ्यूचर के बारे में बहुत- सी जानकारियां प्राप्त हुईं ।

लगातार चल रही इस प्रकार की बातचीत के क्रम में जब हमारे सहयात्री सज्जन यह जाने कि हमलोग चक्रधरपुर जा रहे हैं और वहां कुछ दिन व्यतीत करेंगे तो मुझे उनकी आंखों में एक अनोखी चमक देखने को मिली । चूंकि उस वक्त उनके संस्थान का नाम 'जेवियर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट' नहीं बल्कि 'जेवियर लेबर रिलेशन इंस्टीट्यूट' था और श्रमिक संबंध की दृष्टि से आदिवासी समाज से जुड़े कई प्रकार के पहलू वहां पाठ्यक्रम के अंग थे, इस कारण झारखंड एवं आदिवासी के बारे में उन्हें अद्‌भूत ज्ञान था और ज्ञान की यही चमक उनकी आंखों से आभासित हो रही थी । आदिवासियों के बारे में बताते हुए सर्वप्रथम उन्होंने कहा कि मुहँ में चांदी के चम्मच लेकर पैदा होने वाले न भूख को जान पायेंगे और न

ही पांव के छाले को। उन्हें क्या पता कि जेठ की दुपहरी कैसी होती है और पूस की रात कैसे काटी जाती है ? गरीबी में तड़पाती भूख के बाद नमक और बासी रोटी भी पकवान लगता है और ऐसे पकवान खाने के बाद अथवा नमक और चबेना के साथ हड़ि या (स्थानीय शराब) पीने के बाद लोग मस्त कैसे रहते हैं, अगर कोई यह देखना चाहता हो तो उसे कुछ दिन अवश्य झारखंड में गुजारना चाहिए। लोग बड़े-बड़े महलों वाले शहरों में जाते हैं और वहां की चकाचौंध में खो जाते हैं, परंतु इन शहरों में केवल चकाचौंध ही है और वहां की जिस खुशी एवं मस्ती की बात करते हैं, वस्तुत: वह पैसों का खेल है। ऐसे शहर में तेज रफ्तार से भागती जिंदगी तो मिलेगी, पैसों के प्रति दिवानगी तो दिखेगी, पर नहीं मिलेगी झारखंड- सी संवेदनशीलता, नहीं दिखेगा एक-दूसरे का सुख- दु:ख बांटनेवाला अपनापन। मेरा मानना है कि खनिज- संपदा से भरपूर एवं प्राकृतिक सौंदर्य के धनी इस धरा पर तो हर संवेदनशील व्यक्ति को कुछ दिन अवश्य बिताना चाहिए। मौजमस्ती अलग चीज होती है पर जानने, समझने और रियल इंडिया से साक्षात्कार करने की बात अलग। जानकर अच्छा लगा कि आपलोग चक्रधरपुर उतरेंगे और कुछ दिन झारखंड की धरती पर बितायेंगे।

'चक्रधरपुर' जहां आपलोग उतरेंगे, के नाम का अर्थ, आप जैसा सोच रही हैं - 'गोल, गोल चक्कर..... पुर', वैसा नहीं है। चक्रधरपुर भारत के बिहार (वर्तमान में झारखण्ड) राज्य के पश्चिमी सिंहभूम जिले का एक छोटा-सा शहर है जो दक्षिण पूर्व रेलवे का एक प्रमुख स्टेशन एवं डिवीजनल मुख्यालय भी है। इसका शहरी क्षेत्र मात्र10 वर्ग किलोमीटर में फैला है जो पूर्व में जमशेदपुर (टाटानगर), पश्चिम में राउरकेला, उत्तर में रांची तथा दक्षिण में चाईबासा (पश्चिम सिंहभूम जिले का मुख्यालय) से घिरा है। चक्रधरपुर शहर दो पड़ोसी राज्यों, ओडिशा और पश्चिम बंगाल की सीमाओं के करीब है। जहां तक इस शहर के नामकरण का प्रश्न है तो इसकी एक छोटी-सी कहानी है। बिहार राज्य के दक्षिण छोटानागपुर प्रमंडल का एक क्षेत्र है - कोल्हान और इस क्षेत्र के दो प्रमुख स्टेशन हैं - टाटानगर एवं चक्रधरपुर। वर्ष 1820 में पोड़ाहाट राजघराना के राजा घनश्याम सिंहदेव ने अपने पिता चक्रधारी सिंहदेव के नाम से इस शहर को बसाया था, लिहाजा इस शहर एवं यहां के स्टेशन का नाम चक्रधरपुर पड़ा। आगे उन्होंने बताया कि यह शहर संजय नदी के किनारे एक पठार के तलहटी में बसा हुआ है। यहाँ पर लाख और कागज बनाने के कुटीर उद्योग हैं। इसी चक्रधरपुर के जमकोपाई जंगल में अंग्रेजों ने भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी और आदिवासी समाज के लोक नायक बिरसा मुंडा को 3 फरवरी 1900 ई को गिरफ्तार किया था। तब मैंने कहा कि हां, हां बिरसा मुंडा का नाम मैंने सुना है और इतिहास में पढ़ा भी है, फिर भी आप उनके बारे में कुछ रोचक बातें बताएं। तब वे बताने लगे कि 19वीं शताब्दी में झारखंड बंगाल प्रेसीडेंसी का पार्ट था और इस शताब्दी के अंत में झारखंड क्षेत्र में अंग्रेजों के खिलाफ एक धार्मिक आंदोलन हुआ था जिसका नेतृत्व बिरसा मुंडा ने किया था। उनका का जन्म मुंडा जनजाति के एक गरीब परिवार में झारखण्ड के खुंटी जिले के उलीहातु गाँव में हुआ था। 01 अक्टूबर 1894 को इन्होंने सभी मुंडाओं को एकत्र कर अंग्रेजों से लगान (कर) माफी के लिये आन्दोलन किया था, जिसे 'मुंडा विद्रोह' या 'उलगुलान' कहा जाता है। 1895 में उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया और उन्हें दो साल के लिए हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में भेज दिया गया।। लेकिन बिरसा और उसके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की जी-जान से सहायता करते रहे जिस कारण उन्हें इस इलाके के लोग "धरती आबा" के नाम से पुकारने लगे और तब से वे भगवान कहे जाने लगे। उनके प्रभाव की वृद्धि के

बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी । फलत: 1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे । इस दौरान बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया था । उन्हें 9 जून 1900 को अंग्रेजों द्वारा जहर देकर मार दिया गया। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा अंतरराष्ट्रीय विमान क्षेत्र बनाये गये हैं।

इसी प्रकार, उन्होंने चर्चा के दौरान चक्रधरपुर के बारे में अनेक बातें बताईं, मसलन - वहां पाईं जाने वाली विभिन्न जन-जातियां, उनके खान -पान, उनकी लोक संस्कृति, वहां के लोकनृत्य, पर्व-त्योहार, आस-पास के मनोरम स्थल, भाषाएं, नदी - नाले, पहाड़, पठार, झरने, नगर परिषद क्षेत्र, ग्रामपंचायतें, आदि । इन सब के बारे में बताते हुए उन्होंने लगभग संपूर्ण झारखंड के दर्शन करा दिए । इनमें से बहुत - सी बातें मुझे स्मरण भी नहीं है । उन्हीं के श्रीमुख से जान पाया कि साल वृक्ष में फूल आने पर चैत्र माह में मनाया जाने वाला त्यौहार 'सरहुल', भादो महीने के शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाया जाने वाला त्यौहार 'करमा', कार्तिक अमावस्या को मनाया जाने वाला त्यौहार 'सोहराय' अगहन महीने में मनाया जाने वाला त्यौहार 'बुरु' तथा माघ महीने में मनाया जाने वाला त्यौहार 'माघे' इस क्षेत्र के जन-जातियों के प्रमुख त्यौहार हैं और छऊ, पाइका, डोमकच, लहसुआ, झुमता, फगुआ, फिरकल,आदि इस क्षेत्र के प्रमुख लोकनृत्य । छत्तीसगढ़ निवास स्थान होने के कारण आदिवासियों के बारे में जानने की मेरी प्रबल उत्कंठा रहती है, इस कारण मैंने उक्त नामों को डायरी में नोट कर लिया था । यही वजह है कि आज मैं इसमें उल्लेख कर पाई ।

जिस प्रकार चक्रधरपुर की बात करते हुए झारखंड के बारे में चर्चा करने से मुहँ मोड़ना संभव नहीं था, उसी प्रकार झारखंड की बात करते हुए वहां की खनिज संपदा की बात न की जाए, यह कैसे हो सकता था ? इस कारण हमारे सहयात्री द्वारा झारखंड की भूगर्भा एवं रत्नगर्भा धरती पर भी प्रकाश डाले गए । उन्होंने बताया कि भारत की कुल खनिज सम्पदा का लगभग 40% झारखण्ड में ही पाया जाता है । इस क्षेत्र में देश का लगभग 58% अबरख, 30% कायनाइट, 33% ताम्बा, 33% कोयला, 32% बाक्साइट तथा 23% के आसपास लोहा उपलब्ध है । इसके अलावा इस धरती के गर्भ में क्रोमियम, मैंगनीज, चीनी मिट्टी, फायर क्ले, चूना पत्थर, बेराइट, डोलेमाइट, ऐसबेस्टस, यूरेनियम, गंधक, सोना और टंगस्टन भी पाए जाते हैं । वस्तुत: यही खनिज सामग्री झारखंड क्षेत्र की अर्थव्यवस्था एवं रोजी रोजगार की जान है । इस क्षेत्र में कोयला सर्वाधिक मात्रा में पाई जाती है । साथ ही, लोहे का मुख्य उत्पादन पश्चिमी सिंहभूम जिले में गुवा से लेकर उड़ीसा में गुनाई तक फैली एक पट्टी में होता है । इसे बड़ा जामदा कॉम्प्लेक्स कहते हैं और यह विश्व की सबसे घनी लोहे की पट्टी है। उन्होंने तो यहां तक बताया कि पूर्वी सिंहभूम में बेशकीमती सोना, पन्ना, तांबा तथा यूरेनियम की भी खदानें मौजूद हैं । उक्त के अलावा उनके द्वारा वहां की भाषा, भूगोल, साक्षरता आदि अनेक तथ्यों की जानकारी दी गई ।

इसी यात्रा के दौरान हमें पता चला कि लगभग यहां के हर स्टेशन के नामकरण के पीछे एक रोचक कहानी है। चलिए आप को भी कुछ-कुछ सुनाती हूं..

इसी यात्रा के दौरान हमें पता चला कि लगभग यहां के हर स्टेशन के नामकरण के पीछे एक रोचक कहानी है। चलिए आप को भी कुछ-कुछ सुनाती हूं..

कालीमाटी गांव बन गया टाटानगर रेलवे स्टेशन और साकची बन गया जमशेदपुर.. टाटा आयरन स्टील की नींव साकची नामक गांव में रखी गई थी। इससे करीब पांच किलोमीटर की दूरी पर हावड़ा-मुंबई रेल लाइन गुजरती थी, जिनमें से अधिकांश के आसपास आबादी नहीं थी। नजदीक में कालीमाटी ही एक गांव था, जहां कुछ घर थे। लिहाजा इसी गांव में कालीमाटी स्टेशन बनाया गया। यह स्टेशन 1907 में बनकर तैयार हुआ था। 2 जनवरी 1919 को बंगाल के गर्वनर लॉर्ड चेम्सफोर्ड यहां आए, तो उन्होंने ही टाटा स्टील के संस्थापक जमशेदजी नसरवानजी टाटा के नाम से कालीमाटी को टाटानगर और साकची को जमशेदपुर नाम दिए गए.

कोल्हान क्षेत्र का दूसरा महत्वपूर्ण स्टेशन चक्रधरपुर है। यह रेल मंडल का मुख्यालय भी है। वर्ष 1820 में पोड़ाहाट राजघराना के राजा घनश्याम सिंहदेव ने अपने पिता चक्रधारी सिंहदेव के नाम से चक्रधरपुर शहर बसाया था, लिहाजा यहां के स्टेशन का नाम भी उन्हीं के नाम पर रखा गया। चोयों देवगम के नाम पर बसा चाईबासा, कोल्हान प्रमंडल का मुख्यालय चाईबासा है। इसका नामकरण चोयों देवगम के नाम पर रखा गया। चाईबासा के शिक्षाविद राउतू पुरती बताते हैं कि उस समय यहां केवल चोयों देवगम का ही एक घर था। बाद में अंग्रेजों ने शहर का विस्तार करने के साथ उसके नाम पर ही इस शहर का नाम रख दिया। चाईबासा में उसकी समाधि भी है। चाईबासा रेलवे स्टेशन 70 के दशक में बना था। यहां से आज भी लंबी दूरी की ट्रेनें नहीं चलती हैं।

जिनकीपाई बन गया झींकपानी …चांदडीह बन गया चांडिल

टाटानगर-चाईबासा रेलमार्ग पर झींकपानी स्टेशन पड़ता है। दरअसल यह जिनकीपाई का अपभ्रंश है। राउतू पुरती बताते हैं कि हो भाषा में 'जिनकी' जोड़ा या जोड़े को कहा जाता है, जबकि 'पाई' का अर्थ तालाब होता है। कालांतर में यहां एक ही स्थान पर दो बड़े तालाब थे, जिससे इस जगह का नाम जिनकीपाई रखा गया। बाद में इसका नाम बदलते-बदलते झींकपानी के नाम से मशहूर हो गया। यह स्थान सीमेंट कारखाना की वजह से जाना जाता है। टाटानगर से पश्चिम बंगाल की ओर जाने वाले रास्ते में चांडिल प्रमुख स्टेशन है, जो कोल्हान की सीमा में पड़ता है। इतिहास के जानकार गौतम गोप बताते हैं कि पहले इसका नाम चांदडीह था, जिसका अपभ्रंश होते-होते चांडिल हो गया। इस तथ्य की पुष्टि इस बात से भी होती है कि इसके आसपास नीमडीह, बिरामडीह, कांटाडीह आदि स्टेशन हैं। डीह शब्द का प्रयोग टोले के लिए प्रयोग किया जाता है।

इसी प्रकार सरायकेला राजा के नाम पर है आदित्यपुर स्टेशन, गामे रेया बन गया गम्हरिया, सिनि हो गया सीनी, राजा धवलदेव के नाम पर बना धालभूमगढ़, कंदरा हो गया कांड्रा..

इस तरह झारखंड की वादियों में मेरी इस यात्रा ने मेरे सहयात्रियों के कारण न केवल इस क्षेत्र से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी मुझे दी बल्कि रेल परिवार से मेरे संबंध को अधिक घनिष्ठ बनाया..

सच है रेलगाड़ी न केवल मंजिलों को जोड़ती है बल्कि दिलों को भी !

<u>त्राहिमाम</u>

ई देवराज रेड्डी
कनिष्ठ अनुवादक/राजभाषा अनुभाग
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण/का/सिकंदराबाद

तिलमिलाता मन एवं
क्रोधित मस्तिष्क है,
कठिन है पुण्य - मग मगर
डगर यह पापग्रस्त है,
विश्व में है त्राहिमाम
पिपासु के लिए बस रक्त है....

अस्त्र है, शस्त्र है,
चारों ओर रक्त है,
कालकी के भक्त हैं
प्रार्थना अशक्त है...

जग के मग में जगमगाता
शूल का प्रकाश है,
दिन है केवल कट रहे
यह कैसा, विकास है ?

विकास रक्तपात से,
कष्ट से, विलाप से, कपट से, मवाद से,
विस्फोट से, विनाश से,
आधुनिक हैं, स्वार्थ से..
घर तो फिर भी जल रहे हैं
बुझी हुई आग से...

पहले था परमात्मा,
अब परमाणुविक प्रकोप है.
सर कुचल अग्रस्त हों
जग में सबका यही लोभ है..

जग में है वही महान,
जिसका जितना बड़ा मकान
क्या जीवन ? क्या जहान ?
जाना सबको है शमशान..

श्रव्य है, श्रव्य है, हाहाकार श्रव्य है
गौण है निजमान जिनको,
मौन है जो द्रोण हैं..

कहता विदुर, बनो चतुर,
बजता बिगुल, अन्यत्र है,
अहम का है यह मायाजाल
बिछा अकाट्य सर्वत्र है...

यह सत्य है, नित्य है..
सदैव शोकग्रस्त है,
संसार भोग व्याग्र पर
मानवता त्रस्त है...

*****

वक्त

भरत लाल राम
कार्यालय अधीक्षक
प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक/का/सिकंदराबाद

घर बनाने में वक्त लगता है |
पर मिटाने में पल नहीं लगता ||
दोस्ती बडी मुश्किल से बनती हैं |
पर दुश्मनी में वक्त नहीं लगता ||

गुजर जाती हैं उम्र रिश्ते बनाने में |
पर बिगड़ने में वक्त नहीं लगता ||
जो कमाता है महीनों में आदमी |
उसे गंवाने में वक्त नहीं लगता ||

पल-पल कर उम्र पाती है जिंदगी |
पर मिट जाने में वक्त नहीं लगता ||

जो उड़ते हैं अहम के आसमानों में |
जमीं पर आने में वक्त नहीं लगता ||
हर तरह का वक्त आता है जिंदगी में |
वक्त के गुजरने में वक्त नहीं लगता ||

बुढ़ापे की कसौटी

प्रिंस कुमार
तकनीशियन--III
रायनपाडु

देखो कैसी कसौटी आई जीवन की
अनुरागों सी, भावों सी, दिलों की बचपना सी
देखो कैसी कसौटी आई जीवन की!

नेत्र है, पर देख न सकता हूं,
पैर है, पर संभाल न पाता हूं!
हाथ है, पर उठा न सकता हूं
गला है पर गा न सकता हूं!!
देखो, कैसे विवश पल से गुजर रहा हूं ?
देखो, कैसे विवश पल से गुजर रहा हूं ?

रातों की सारे पहर कैसे गुजर जाते थे, अच्छी नींदों में,
पर आज रातें गुजर रही हैं, नींदों के इंतजारों में,
कैसी विवशता पल हैं ये संभलकर भी
अपनों को संभाल न पाता हूं मैं।
था सहारा जवानी में अपनों का,
पर आज सहारे का मोहताज हूं मैं!!

देखो कैसी कसौटी आई जीवन की
अनुरागों सी भावों सी, दिलों की बचपना सी,
देखो कैसी कसौटी आई जीवन की!!

वो दिन भी नहीं आता
कि मैं अपने मां-बाप को अपनी व्यथा सुना पाता
बस अपने कर्मों की याद कर कभी हंसता,
मुस्कुराता, तो कभी पागल-सा बन रो-रो कर आंखें भर लेता
कभी पागल – सा बन रो-रो कर आंखे भर लेता !!

करता था गुरूर अपने बदन पर,
हर पल निहारता चेहरे को अपने दर्पण पर!
पर आज झुर्रियां पड़ आई हैं मेरे बदन पर!!

गुरूर था क्या अपने को,
लाचार पा रहा हूं, एक कोने में छोटे-बिस्तर पर

देखो कैसी कसौटी आई जीवन की
अनुरागों-सी, भावों-सी, दिलों की बचपना-सी
देखो कैसी कसौटी आई जीवन की!

जब भी जवानी तो दुनिया मेरी दिवानी
लगता हर मौसम बसंत सी सुहानी
क्या बताऊं व्यथा इस बुढापे की कहानी!
कि दुनिया हो गई मेरी बेगानी,
कि दुनिया हो गई मेरी बेगानी!!

देखो कैसी कसौटी आई जीवन की
अनुरागों-सी, भावों-सी, दिलों की बचपना-सी
देखो कैसी कसौटी आई जीवन की!

<u>सोशल मीडिया और उसके परिणाम</u>

योगेश दीपराज भस्मे
कनिष्ठ अनुवादक
गुंटूर मंडल

'मीडिया' अंग्रेजी शब्द 'मीडियम' का बहुवचन है जिसका अर्थ होता है - 'माध्यम'. मीडिया अर्थात् जनता तक संदेश पहुंचाने का माध्यम है. यह आम जनता तक सूचना पहुंचाने के लिए संचार का प्राथमिक साधन है. 'मीडिया' शब्द संचार के साधनों रेडियो, टेलीविजन, समाचार-पत्र आदि के लिए संज्ञा की तरह प्रयोग किया जाता है. बिना माध्यम के कोई भी संदेश ग्रहण करने व भेजने की प्रक्रिया सम्पन्न नहीं हो सकती है. मीडिया का प्रयोग आम जनता से संवाद स्थापित करने के लिए भी किया जाता है. आम जनता आमतौर पर राजनीतिक मुद्दों, सामाजिक मुद्दों, मनोरंजन और संस्कृति के बारे में समाचार व जानकारी प्राप्त करने के लिए मीडिया पर निर्भर करती है. आमतौर पर व्याख्या की जाती है कि 'जन संचार' मीडिया प्रेस, सिनेमा, रेडियो और टेलीविजन है क्योंकि उनकी पहुंच देश के व्यापक क्षेत्रों में रहने वाले जनसंख्या के विशाल व विषम जनता तक फैली हुई है. संक्षेप में, मीडिया वे उपकरण या प्रौद्योगिकियां हैं जो एक विशाल जनसंख्या में सूचना और मनोरंजन के प्रसार की सुविधा प्रदान करते हैं.

मीडिया का वर्तमान स्वरूप देखें तो पिछले कुछ वर्षों में यह मूल रूप से बदल गया है. 'इंटरनेट' नामक नवीन सोशल मीडिया आज हमारा सबसे ज्यादा ध्यान आकर्षित करने में कामयाब हो रहा है. विशेषकर युवा इसके सबसे बड़े ग्राहक के तौर पर उभर रहे हैं, क्योंकि यह उनको एक मंच पर कोई भी सामग्री ढूंढने के साथ ही साथ देखने, सुनने और बोलने की स्वतन्त्रता प्रदान करता है. इसी कारण आज भारत इंटरनेट के सबसे बड़े उपभोक्ता के रूप में अमेरिका और चीन के बाद तीसरे नंबर पर पहुंच गया है. इंटरनेट के माध्यम से चलनेवाला सोशल मीडिया एक तरह से दुनिया के विभिन्न कोनों में बैठे उन लोगों से संवाद है जिनके पास इंटरनेट की सुविधा है. सोशल मीडिया पारस्परिक संबंध के लिए इंटरनेट या अन्य माध्यमों द्वारा निर्मित आभासी समूहों को संदर्भित करता है. सोशल मीडिया का उपयोग करनेवाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लैटफार्म जैसे कि फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि का उपयोग कर इन प्लैटफार्म से जुड़े व्यक्तियों तक पहुंच बना सकता है. सोशल मीडिया के मुख्य फीचर जैसे कि सूचनाएं प्रदान करना, मनोरंजन करना और शिक्षित करना मुख्य रूप से माने जाते हैं. इस तरह सोशल मीडिया परंपरागत मीडिया से पूरी तरह भिन्न है. इसमें आप टेलीविजन, समाचार पत्र, रेडियो आदि पर दिखाई या बताई जानेवाली जानकारी सुनने के लिए बाध्य नहीं है बल्कि अपनी रूचि से संबंधित जानकारी खोजने की स्वतंत्रता आम जनता को है. उस जानकारी को साझा करना, साझा की गई जानकारी पर कमेंट के जरिए लोगों के विचार प्राप्त करना और उन विचारों पर अपनी प्रतिक्रिया देना आदि सब इंटरनेट के माध्यम से चलनेवाले मीडिया प्लैटफार्म से संभव हुआ है, क्योंकि इस मीडिया का संपूर्ण नियंत्रण समाज और उसमें रहनेवाले लोगों के हाथ में है शायद इसीलिए इसे सोशल मीडिया कहा जाता है.

आज सोशल मीडिया ने हर व्यक्ति के जीवन को प्रभावित किया है. समाज में रहनेवाले व्यक्तियों के जीवन में सोशल मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरह के परिणाम होते हुए दिखाई देते है जो निम्नानुसार है. **सकारात्मक परिणाम** जैसे कि सोशल मीडिया के विभिन्न प्लैटफार्म जैसे कि फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, ट्विटर का उपयोग कर व्यक्ति अपने रूचि से संबंधित जानकारी

जब चाहे तब प्राप्त कर सकता है. किसी व्यक्ति को अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, समाचार, शेयर बाजार की खबरें या तकनीकी आदि., किसी भी विषयों से संबंधित जानकारी प्राप्त करनी हो तो यूट्यूब या कई महत्त्वपूर्ण ब्लॉग या विविध वेबसाइट से आसानी से जानकारी प्राप्त कर सकता है.

व्यक्ति सोशल मीडिया से न केवल राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय खबरों की जानकारी प्राप्त कर सकता है बल्कि अपने जीवन में घटनेवाली घटनाओं की जानकारी जैसे कि जन्मदिन, विवाह, विभिन्न जगहों पर की गई यात्राओं से संबंधित फोटो साझा कर सकता है. यात्रा वृत्तांत लिखकर फोटो के साथ सोशल मीडया प्लैटफार्म पर जुड़े हुए सदस्यों के साथ साझा कर सकता है. उपरोक्त घटनाओं के फोटो पर लोग आसानी से अपनी शुभकामनाएं कमेंट के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकते हैं. इसी तरह लोग अपनी साहित्यिक रचनाएं जैसे कि कविताएं, कहानियां, यात्रा वृत्तांत आदि लिख सकते हैं. सोशल मीडिया के जरिए ही साहित्यिक मंच से जुड़कर एक ही विषय या क्षेत्र में रूचि रखनेवाले लोग आपस में मिलते हैं. अपनी कविताएं या रचनाएं शेयर करते हैं जो बाद में राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत की जाती है.

यूट्यूब पर लोग अपने नृत्य या संगीत के वीडियो आदि अपलोड कर साझा करते हैं जिसे बाद में लोगों द्वारा पसंद किए जाने पर प्रसिद्धि भी मिलती है. अच्छे कलाकारों को विभिन्न फिल्म इंडस्ट्री में इसी तरह काम करने के अवसर मिले हैं जो सोशल मीडिया के अभाव में संभव नहीं था. ट्यूशन क्लासेस, मोटिवेशनल स्पीकर आदि लोग अपने शार्ट वीडियो बनाकर वायरल करते हैं जो उन्हें लोकप्रिय बनाने के साथ ही उनके बिजनेस को बढ़ावा देने का भी काम करते हैं. कुछ लोग समाज सेवा हेतु जैसे कि रक्तदान, अन्नदान तथा गरीब मरीजों की सहायता आदि के लिए ग्रुप बनाते हैं और जरूरतमंद लोगों की मदद करते हैं. इस तरह सोशल मीडिया में पारंपरिक मीडिया के विपरीत आम जनता के जीवन में घटनेवाली घटनाओं को भी उचित स्थान मिलता है.

आज लोग फेसबुक, इंस्टाग्राम और अन्य सोशल मीडिया प्लैटफार्म के जरिए अपने स्कूल, कॉलेज के उन पुराने दोस्तों को भी खोज निकाल रहे हैं जो हमारे साथ-साथ पढ़े, बड़े हुए और फिर दुनिया की भीड में कहीं खो गए. उन्हें खोज कर फ्रैंड रिक्वेस्ट भेजना, उनसे चाटिंग करना, पुरानी यादें ताजा करना, अपने मोबाईल नंबर साझा करना, पुराने दोस्तों का व्हाट्सअप ग्रुप बनाना, ग्रुप में आपस में बातचीत करना और प्रत्यक्ष रूप से मिलने के लिए गेट-टूगेदर कार्यक्रम का आयोजन करना आदि आसानी से कर रहे हैं. यह काम सोशल मीडिया के वजह से ही संभव हो पाया है.

सोशल मीडिया के जरिए कई लोग अपने क्षेत्रों की कई परेशानियों की शिकायत ट्विटर या अन्य सोशल मीडिया प्लैटफार्म के जरिए डायरेक्ट पीएमओ कार्यालय से कर उन शिकायतों का निराकरण करने में भी सफल हो रहे हैं. कई बार रेलवे मिनिस्टर के ट्विटर हैंडल पर शिकायत कर लोगों ने अपनी समस्याओं को सुलझाया है. इस तरह की खबरें भी प्रकाशित हुई हैं. सरकारी परीक्षा देनेवाले छात्रों के समूह परीक्षा में देरी या परीक्षा के परिणाम प्रदर्शित करने में देरी आदि महत्त्वपूर्ण मूद्दों को ट्विटर पर ट्रेंड कर जनता एवं मेन मीडिया का ध्यान आकर्षित करने में सफल हुए हैं. इस तरह वे प्रशासन पर दबाव बनाकर अपना काम संपन्न करने में सफल हुए हैं. दबाव समूह के रूप में ट्विटर की सहायता से प्रशासन द्वारा अपना काम कराना एक तरह से इंटरनेट का सकारात्मक उपयोग ही माना जाता है.

आज सोशल मीडिया के विभिन्न प्लैटफार्म पर हर राजनीतिक दल अपना पेज बनाकर अपने पार्टी का अजेंडा साझा कर रहा है और चुनाव लड रहा है. चूंकि सोशल मीडिया पर देश और दुनिया की अधिकतम जनता जुडी हुई है इसीलिए वर्तमान समय में सोशल मीडिया को नज़रअंदाज कर चुनाव लड़ने के कल्पना भी कोई राजनीतिक दल नहीं कर सकता.

जिस तरह सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी तरह सकारात्मक पहलू के अलावा सोशल मीडिया के **नकारात्मक पहलू** भी हैं. जैसे कि फेसबुक पर कई लोग अंजान लोगों को अपना दोस्त बना लेते हैं जो उनकी फेसबुक वॉल पर अश्लील फोटो या वीडियो शेयर करने पर परेशान होते हैं. सुरक्षित पासवर्ड का उपयोग न करने के कारण बहुत सारे लोगों का सोशल मीडिया प्लैटफार्म का अकाउंट हैक हुआ है. हैक किए गए अकाउंट से फोटो का दुरुपयोग किया गया है. कई बार हैकर्स धमकियां देते हैं और ब्लैकमेल भी करते हैं. फ्रेन्ड लिस्ट में उपलब्ध लोगों को झूठे आश्वासन देकर पैसे की मांग की गई है. फ्रेंड लिस्ट में उपलब्ध कुछ भोले भाले दोस्तों ने बिना जांच किए उन हैकर्स के फोन पे अकाउंट पर पैसे भेजकर अपने मेहनत की कमाई भी गंवाई है.

सोशल मीडिया के इस दौर में साझा की जानेवाली सामग्री बहुत बार गलत तथ्यों को प्रस्तुत करती है. इस फेक न्यूज़ के कारण समाज में दंगे, लीचिंग, हिंसा आदि घटनाएं भी घट चुकी हैं. किसी निर्दोष व्यक्ति को अपराधियों के गिरोह का सदस्य या बच्चे चोरी करनेवाले गैंग का सदस्य के रूप में प्रस्तुत कर फेक न्यूज फैलाने पर उस व्यक्ति की भीड़ द्वारा हत्या करने की घटनाएं भी सामने आ चुकी हैं. धार्मिक उन्माद और हिंसा को प्ररित करनेवाली जानकारी पर विश्वास करने और उसे प्रसारित करने से बचना चाहिए.

चुनाव जीतने के लिए प्रतिपक्ष के किसी नेता की बदनामी करनेवाली खबरों और फेक फोटो को जबरन फैलाया जाता है. चुनाव के समय ऐसी तथ्यहीन खबरों को साझा करने से बचना चाहिए. अन्यथा फेक न्यूज़ फैलाने के अपराध में कानूनी कार्रवाई का सामना करने की नौबत आ सकती है. इसीलिए सोशल मीडिया पर प्रसारित की जानेवाली खबरों की सत्यता को परखने के बाद ही विश्वास किया जाना चाहिए.

इसी तरह कुछ लोग अश्लील वेबसाइटों के संपर्क में आकर अश्लील सामग्री देखते हुए पाए जाते हैं. इन वीडियो को वे वाट्सऐप के माध्यम से अन्य लोगों को भेजते हैं. बहुत से लोगों के इन वीडियों को देखने की लत लगने के बाद इस आदत से छुटकारा पाने के लिए मनोवैज्ञानिक के पास जाना पड़ता है. फीज़ के रूप में पैसा, उर्जा और समय खर्च करना पड़ता है. इस समस्या को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है.

सोशल मीडिया का लगातार उपयोग करने की लत भी एक मानसिक बीमारी के रूप में सामने आई है. इस लत के कारण व्यक्ति अपने मन को किसी भी काम पर एकाग्र नहीं कर पाते हैं. परिणामस्वरूप किसी भी काम को ठीक से नहीं कर पाते हैं. कई छात्र पढाई से संबंधित विषय की जानकारी प्राप्त करने के लिए इंटरनेट शुरू करते हैं. किंतु लगातार कई घंटों तक फेसबुक, व्हाट्सअप, यूट्यूब, इंस्टाग्राम आदि प्लैटफार्म पर अपना कीमती समय बरबाद कर देते हैं. फिर समय की बरबादी के अपराध बोध से ग्रस्त होकर डिप्रेशन, चिंता और घबराहट आदि मानसिक बीमारियों के शिकार होते हैं. परिणामस्वरूप परीक्षाओं में अच्छे अंकों से पास नहीं हो पाते हैं. ऐसे बच्चों के कैरियर पर बहुत बुरा असर होता है. आज कई लोग सोशल मीडिया की इस लत से छुटकारा पाने के लिए मनोचिकित्सक या डॉक्टर को मोटी फीस देकर मदद ले रहे हैं. इसीलिए सोशल मीडिया का सीमित मात्रा में और अपने विशेष उद्देश्य के लिए उपयोग करना जरूरी है.

निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया एक सशक्त माध्यम है. इसका उचित तरीके से सीमित मात्रा में और अपने विशेष उद्देश्यपूर्ति के लिए उपयोग किया जाना चाहिए. अन्यथा तूफान में कश्ती जिस तरह किनारे से भटक जाती है उसी तरह सोशल मीडिया का दुरुपयोग व्यक्ति को अपने उद्देश्य प्राप्ति से आसानी से भटका सकता है.

ट्रैक मैन

अमित कुमार
टीएम-II/दोनकोंडा
गुंटूर मंडल

सुना रहा हूँ ट्रैक मैन की गाथा
कष्टों की टोकरी है इनके माथा
रवि की तपती गर्मी में
पूस मास की सर्दी में

सावन की बरसात हो
उफनती नदियों की बाढ़ हो
सुनामी का कहर हो
कुहासे का प्रकोप हो
या ओलावृष्टि का प्रहार
करता रहता निरंतर काम
संग में रखते बाईस सामान
फिर भी इनके हैं कई नाम

रेल पथ के सच्चे रखवाले
तभी तो गाड़ी अच्छे से आती जाती
चाबी वाले की पीठ लदे है झोला
हाथों में इनके गुरु हथौड़ा

ट्रैक फोल्ड को ऐसे खोजते हैं
जैसे सागर की गहराई में गोताखोर मोती ढूंढते हैं
न कोई रात्रि प्रहरी में इनके यारे
कभी कभी हो जाते ईश्वर को प्यारे

बस अमित कुमार की यह आस है
ट्रैक मैन भारतीय रेलवे की रीढ़ घोषित हो
कभी न अधिकारी से शोषित हो.

प्रेरणा

नरेश कुमार महावर
तकनीशियन II, मैसन
वरि.से.इंजी/का/वाटर वर्कस/गुंतकल

राह में मुश्किलें होगी हजार

तुम दो कदम बढ़ाओ तो सही

हो जाएगा हर सपना साकार

तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही

मुश्किल है पर इतना भी नहीं

कि तू पा न सके

तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही

एक दिन तुम्हारा भी नाम होगा

तुम्हारा भी सत्कार होगा

तुम कुछ लिखो तो सही

तुम कुछ आगे पढ़ो तो सही

तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही

सपनों के सागर में कब तक गोते लगाते रहोगे

तुम एक राह चुनो तो सही

तुम उठो तो सही, तुम कुछ करो तो सही

तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही

कुछ ना मिला तो कुछ सीख जाओगे

जिंदगी का अनुभव साथ ले जाओगे

गिरते पड़ते संभल जाओगे

फिर एक बार तुम जीत जाओगे

तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही.

सभ्य मानव और योग का यथार्थ

शिरीष अवस्थी
कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान कार्यालय
दमरे, सिकंदराबाद

"योग" सभ्य मानव के निजी जीवन में भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि दैनिक जीवन में सात्विक भोजन। योग शब्द यौगिक क्रियाओं के सम्मिश्रण से बनी एक संपूर्ण प्रक्रिया है जिसे वर्तमान समय में बड़ी ही निकटता और सहजता से जानने और समझने की आवश्यकता है, क्योंकि आज का मानव समाज मात्र आसन-प्राणायाम को ही योग समझ बैठा है। हमारा प्राचीन भारतीय इतिहास मनीषियों की मानव कल्याण की भावनाओं से ओतप्रोत रहा है, आज के परिदृश्य में जहां चहूं ओर समाज में अशांति और वैमनस्यतापूर्ण वातावरण दृष्टिगत हो रहा है और मानव सच्चे सुख को भूलकर भौतिकता में सुख ढूंढने में लगा हुआ है, वहीं यदि हम योग को समझकर भौतिक साधनों के साथ सात्विक जीवनशैली अपनाकर जीवन जीने का प्रयत्न करें तो हमारा जीवन सुखमय हो सकता है। इस संबंध में प्राचीन भारतीय इतिहास में ऋषि परंपरा का उल्लेख अति आवश्यक हो जाता है। हमारे प्राचीन भारतीय इतिहास में महर्षि पतंजलि के अष्टांग योग का वर्णन मिलता है जिसके अनुसार मानव अपना मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य स्वयं ही संपूर्ण कर सकता है और पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकता है। संक्षेप में अष्टांग योग के मूलभूत नियम निम्न प्रकार से बताए गए हैं।

1. यम (संयम) - अष्टांग योग में यम के पांच भेद बताए गए हैं।
   - क. अहिंसा – किसी भी जीव मात्र को मन, वचन और कर्म से कष्ट न पहुंचाने को अहिंसा कहा गया है।
   - ख. सत्य – जो जैसा देखा, सुना, जाना उसी के अनुसार मन के भावों का बनना और कर्म करना ही सत्य कहा गया है।
   - ग. अस्तेय – मन, वचन,और कर्म से चोरी न करने को अस्तेय कहा गया है।
   - घ. ब्रह्मचर्य – कामवासना पर नियंत्रण रखते हुए पूर्ण निष्ठा से वीर्य की रक्षा करने को ब्रह्मचर्य बताया गया है।
   - च. अपरिग्रह– लोभ से दूर रहते हुए वस्तुओं का अनावश्यक संग्रह न करने और कम से कम साधनों पर निर्भर रहकर जीवनयापन करने को अपरिग्रह कहा गया है।

2. नियम (पालन) - अष्टांग योग में नियम के पांच भेद बताए गए हैं।
   - क. शौच – अंदरूनी और बाहरी शुद्धि या पवित्रता को शौच कहा जाता है।
   - ख. संतोष – मानव के पास जो कुछ हो तन, मन, धन आदि से पूर्ण पुरुषार्थ करे, यही संतोष कहलाता है।
   - ग. तप – किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जो कष्ट बाधाएं या किसी भी प्रकार की असहजता को स्वीकार करते हुए निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढते रहने को ही तप कहा गया है.

घ. स्वाध्याय – आत्मसाक्षात्कार और मोक्ष की ओर ले जाने वाले सत्य शास्त्र का अध्ययन करने को ही स्वाध्याय कहा गया है।

च. ईश्वर प्राणिधान – अपने मन ,कर्म और वचन से किए गए समस्त कर्मों को ईश्वर को अर्पित करना ईश्वर प्राणिधान कहलाता है।

3. आसन (मुद्राएं) - विभिन्न शारीरिक मुद्राएं आसन को बताती है, व्यक्ति की जैसी भावना वैसी ही शारीरिक मुद्रा प्रायः बन जाया करती है। सुखासन, भद्रासन, सिद्धासन, पद्मासन, आदि में किसी भी शारीरिक मुद्रा में स्थिर बैठने की अवस्था को आसन कहा जाता है। हठयोग में 84 प्रकार के आसनों का वर्णन मिलता है जो कई प्रकार की शारीरिक और मानसिक व्याधियों को दूर कर साधक को पूर्ण स्वास्थ्यलाभ प्रदान करता है।

4. प्राणायाम – आसन के स्थिर हो जाने पर श्वास लेने व छोड़ने की स्वाभाविक गति का विच्छिन्न होना प्राणायाम कहलाता है।

5. प्रत्याहार – शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधादि की आसक्ति मनुष्य के मन को विचलित कर देती है, इसलिए अभ्यास और वैराग्य के द्वारा यथार्थ बोध से ही प्रत्याहार सिद्ध होने पर व्यक्ति इंद्रिय जय हो जाता है अर्थात् विषयों से हटकर मन और इंद्रियों को अंतर्मुखी करना ही प्रत्याहार कहलाता है।

6. धारणा (एकाग्रता) – मन और इंद्रियों के अंतर्मुखी होने पर शरीर के किसी भी क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित कर एकाग्र होना धारणा कहलाता है।

7. समाधि (अवशोषण) – मन का एकाग्र होना ही समाधि कहलाता है। साधक समाधि द्वारा ज्ञान की चरम सीमा की प्राप्ति करने में समर्थ हो जाता है। सर्व संपन्नता प्राप्त करते हुए अवस्थी बनकर राग, द्वेष, अविद्या, क्लेश से मुक्ति प्राप्त कर जन्म और मृत्यु से मुक्ति प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

अष्टांग योग, महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों के सिद्धांतों पर आधारित है, इस योग पथ का अनुसरण करने पर व्यक्ति मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है। यह एक संयमित सुशील और धैर्यवान जीवन जीने की सही और सशक्त पद्धति है। अतः सार है कि **योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः** सूत्र प्रत्येक सभ्य व्यक्ति की दैनिक जीवन शैली का अभिन्न अंग बने और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 21 जून योग दिवस की महत्ता विश्व मानव कल्याणकारी सिद्ध हो।

आत्म-विश्वास का महत्व

वफा समरीन
पत्नी मेराज अहमद,
कनि. अनुवादक/प्र.का./द.म.रे.

जिस मनुष्य का अपने आप पर विश्वास होता है वह जीवन में कुछ न कुछ मुकाम हासिल कर ही लेता है. बिना विश्वास के किसी चीज को करते रहना ऐसा ही है जैसा किसी हारे हुए खेल को बार-बार खेलते रहना. जिस तरह सफलता के लिए मेहनत आवश्यक है उसी तरह खुद पर विश्वास होना भी आवश्यक है. विश्वास एक ऐसी चीज है जो आपको हमेशा कुछ नया करने के लिए प्रेरित करती रहती है.

किसी भी काम में आप तभी सफल होंगे जब आपके अंदर से आवाज आती हो कि हां मैं ये कर सकता हूं क्योंकि मुझे खुद पर विश्वास है इसी तरह पढ़ाई में भी खुद पर विश्वास होना बहुत आवश्यक है.

अगर आप किसी परीक्षा की तैयारी करते हैं और दिन रात पढ़ाई करते हैं लेकिन मन ही मन में यह सोचते रहते हैं कि मैं सफल नहीं हो पाउंगा तो इस परीक्षा को पास करना आपके लिए बहुत मुश्किल हो जाएगा क्योंकि आप पढ़ाई तो कर रहे हैं लेकिन आपका विश्वास पास होने की तरफ कम और फेल की तरफ ज्यादा है.

बहुत समय पहले की बात है एक आश्रम में एक साधु रहा करता था जहां दूर-दूर से बच्चे पढ़ने के लिए आते थे उन सब के बीच एक लड़का ऐसा था जो एकदम बेवकूफ था और पढ़ाई में बहुत कमजोर था, लेकिन उसे अपने गुरु पर बहुत विश्वास था उसके गुरु उससे हमेशा यह बात कहते थे कि तुम भले पढ़ाई में कमजोर हो मगर तुम्हें खुद पर विश्वास रखना चाहिए कि तुम दूसरों से बेहतर हो और वो सब कर सकते हो जो दूसरे नहीं कर सकते.

अपने गुरु के द्वारा कही गई बातों को शिष्य मानता था आश्रम में मौजूद बाकी शिष्य उससे ईर्ष्या करते थे क्योंकि उनके गुरु भी उस शिष्य से बहुत प्यार करते थे, सबको लगने लगा था कि आगे चलकर यही लड़का इस आश्रम को संभालेगा इसलिए दूसरे शिष्य मिलकर उस लड़के को आश्रम से हटाने का विचार बनाने लगे.

एक दिन गुरु सभी शिष्य को दूसरे आश्रम लेकर जा रहे थे और बीच रास्ते में एक नदी पड़ी, नदी पार करने के लिए सब नाव की प्रतीक्षा करने लगे ऐसे में अन्य सभी शिष्यों के मन में शैतानी उठने लगी और उन्होंने उस शिष्य से कहा तुम क्यों नाव का इंतजार कर रहे हो तुम्हारा तो विश्वास बहुत पक्का है तुम तो नदी को चलकर ही पार कर लोगे, उनकी बातें सुनकर वह शिष्य उठा और नदी पार करने के लिए नदी पर चलने लगा उसके गुरु ने उसे ऐसा करते हुए देखा और उसे नदी में जाने से रोक लिया.

शिष्य बोला, 'मुझे विश्वास है कि मैं आपकी शक्ति और अपने विश्वास के दम पर ये कर लूंगा' ऐसा कहते हुए वह नदी पार करने लगा थोड़ी ही देर में उसने नदी पार कर ली और किनारे पर पहुंच गया. ये सब देखकर उसके गुरु हैरान हो गए और मन ही मन सोचने लगे कि यह अज्ञानी मेरी शक्ति और अपने विश्वास के दम पर पानी पर चल सकता है तो मैं भी अपनी शक्तियों के दम पर यह सब कर सकता हूं, फिर वे भी चलकर पार करने का प्रयास करने लगे लेकिन नदी में थोड़ा आगे जाकर ही वह डूब गए क्योंकि उन्हें दूसरों की बातों पर विश्वास किया ना कि खुद पर.

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि विश्वास किसी अज्ञानी व्यक्ति को भी पार लगा देता है लेकिन विश्वास की कमी ज्ञानी व्यक्ति को भी डुबा देती है. अगर आपके अंदर भी विश्वास की कमी है तो आप भी जीवन में सफल नहीं हो पाएंगे.

इस कहानी के अनुसार अपने आप पर विश्वास होने का मतलब यह नहीं है कि आप भी पानी पर चलें बल्कि खुद पर विश्वास होने का मतलब यह है कि आप अपनी मंजिल को पा सकते हैं, बस आपको सही दिशा में फोकस करना है. अगर आपके अंदर विश्वास होगा कि आप किसी भी चीज को हासिल कर सकते हैं तो आपका मन कभी भी असफलता के बारे में नहीं सोचेगा बल्कि आपका मन हमेशा सफलता पर फोकस करेगा.

इसलिए अपने आप पर विश्वास रखो बस यह सोचो कि हां मैं यह कर सकता हूं कुछ भी असंभव नहीं है जब आप ऐसी सोच रखेंगे तभी आपका खुद पर विश्वास बढ़ेगा और आप उन कामों में भी सफलता पा लेंगे जो अभी आपको असंभव लगते हैं.

हमें आशा है कि इस कहानी से आपके दिमाग पर सकारात्मक असर पड़ेगा.

जीवन का आशय

अजय कुमार पाण्डेय
सीनियर पैसेंजर ट्रेन मैनेजर
सिकंदराबाद मंडल

बिना लड़े कब मिल पाया है जीवन का आशय बोलो,
बिना बढ़े कब मिल पाया है जीवन में आश्रय बोलो।

लहरों की धारा संग चलकर गहराई का ज्ञान हुआ,
आत्म विभूषित हुआ जहाँ राहों का अनुमान हुआ।
अनुमानों के बिना मिला कब संकल्पों को आशय बोलो,
बिना बढ़े कब मिल पाया है जीवन में आश्रय बोलो।

अरुणोदय का बोध नहीं तो चन्द्र रश्मियाँ व्यर्थ रहीं,
जब तक ताप नहीं मिलता है शीतलता का अर्थ नहीं।
धूप-ताप जो सहा नहीं है छाँवों का आशय बोलो,
बिना बढ़े कब मिल पाया है जीवन में आश्रय बोलो।

उच्च कभी तो निम्न कभी है अपने जीवन की रेखा,
पौरुष का सम्मान किया जो उसने मरु में जल देखा।
अनुदानों में मिलने वाले सपनों का आशय बोलो,
बिना बढ़े कब मिल पाया है जीवन में आश्रय बोलो।

बेटी हूं अभिशाप नहीं

दुष्येन्द्रजीत
ट्रैकमैन-III/वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/रेल पथ/ का
सिरपुरकागज नगर

थमती सांसे धड़कन रुकती, कोख मिली पर जनम नहीं.
मत मारो मुझको भी जीने दो, बेटी हूं अभिशाप नहीं.
था तिमिर गर्भ में जननी के,
देखा तनिक प्रकाश नहीं.
न देख सकी दुनिया दारी,
न डोर किसी से बांध सकी.
न बनी पूत मैं बनी सुता इसमें तो मेरी भूल नहीं.
मत मारो मुझको------------.
अपने जीवन का भूत देख,
उस मां ने क्या तू
जनी.
बन गई कोख शमशान तेरी मां,
उससे पहले क्यूं मरी नहीं.
क्या ह्दय नहीं था सीने में,
या ममता हो गई लोप कहीं.
मत मारो मुझको भी जीने दो-----------.

'ऐ लड़की' उपन्यास में स्त्री की सामाजिक अस्मिता
(कृष्णा सोबती)

वी.निर्मला

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक कार्यालय
सिकंदराबाद मंडल

'ऐ लड़की' उपन्यास का शीर्षक से ही संबोधित होता है कि मां अपने बेटी को अमानवीय सा शब्दों का प्रयोग कर रही है। परंतु इस शब्द में मां के जीवन की संपूर्ण कथा संप्रेषित होती है।

'ऐ लड़की' शीर्षक से ही हमें जान पड़ता है कि यह एक संबोधन मात्र ही नहीं बल्कि संपूर्ण स्त्रियों को सावधान करने की दृष्टिकोण से इस शब्द का प्रयोग कृष्णा सोबती ने अपने इस लघु उपन्यास में किया है।

कृष्णा सोबती ने 'ऐ लड़की' जैसा लघु उपन्यास नब्बे दशक की शुरुआत में लिखा। यह वह दशक था, जब भारत की अर्थव्यवस्था और समाज को बदलने में स्त्रियों की भूमिका अहम थी। स्त्रियां अपने अधिकारों से परिचित हो रही थीं। उसी समय सोबती ने 'ऐ लड़की' उपन्यास में अम्मू के माध्यम से समाज के उस सच्चाई से हमें रूबरू कराया, जिससे स्त्रियों के जीवन को एक नई दिशा मिली। अम्मू एक आदर्श पत्नी, मां, सास एवं दादी के स्वरूप में एक अनमोल योगदान समाज को देती है। उसने लगभग 80 से 90 वर्ष की उम्र में जो भी अनुभव किया है उस अनुभव के पिटारा को वह अपने आने वाले कल को समर्पित करना चाहती है। वह हर उस छोटी सी छोटी चीज के ज्ञान को अपने अनुभव के छलनी में छानकर अपनी बेटी को प्रस्तुत करती है। चाहे वह सामाजिक रूप में हो, पारिवारिक रूप में हो, सांस्कृतिक रूप में हो, आर्थिक रूप में हो, वह इन विभिन्न संबंधों के माध्यम से संपूर्ण स्त्री जाति को संवारना चाहती है। वह अपने अनुभव रूपी आशीर्वाद के अनुकंपा से सभी के जीवन को सुसज्जित और सुथरी बनाना चाहती है। इस कहानी में 'मां और पुत्री' के बीच एक ऐसी बातचीत है जो एक मां अपने संचित अनुभव को मृत्यु के अंतिम समय वस्तुनिष्ठ ढंग से देना चाहती है। बेटी भी जानना चाहती है कि उसकी मां का जीवन कैसा रहा?, कौन सी परिस्थितियों का सामना उसे करना पड़ा? किन-किन बातों पर उसका दिल दुखा? क्या उसके दिल की हर तमन्ना पूरी हुई? इन सारी बातों को विस्तृत रूप में जानना चाहती है। असमानता की नींव तो समाज ने ही डाली है। माता- पिता इसे पुख्ता करते हैं। माता-पिता ही बेटी का भविष्य अंधेरे में डाल देते हैं। माता-पिता बेटी को बेटा नहीं समझते, बल्कि समाज के रूढ़िवादी विचारों के अनुसार उन्हें परिवार का ग़ुलाम समझते हैं। उनकी अपनी कोई सत्ता नहीं, कोई पहचान नहीं, उनका एक मात्र काम है समाज के बनाये गये नियमों का पालन करना। उसकी अपनी कोई स्वतंत्रता नहीं। स्त्री को अपनी स्वतंत्रता का हक है। उन्हें भी अपने मन मुताबिक काम करने की इजाज़त होनी चाहिए। उनका जीवन पुरुषों के समान ही है। वह भी इसी समाज में रहती है। उन्हें भी अधिकार हैं। अपने हिसाब से जीने, मरने, काम करने की। **ऐ** लड़की, यह ताकत है। सामर्थ्य। शक्ति। समझ रही हो न?" अम्मू चाहती है कि लड़की भी आर्थिक रूप से सुदृढ़ हो। वह नारी की स्वतंत्रता का पक्षधर है। वह चाहती है कि सुसन और चित्रा दोनों आत्मनिर्भर हो, जिससे किसी के सामने हाथ फैलाने की नौबत न आए। वह स्पष्ट शब्दों में कहती है कि स्त्री को अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी। अपने अस्तित्व को खुद बचाना होगा। अगर स्त्री को सशक्त होना है। तो उसे समाज में आर्थिक और मानसिक दोनों रूप से आत्मनिर्भर होना ही पड़ेगा। आज का समय भौतिकतावाद युग का है।

कृष्णा सोबती 'ऐ लड़की' के माध्यम से समाज की उस स्थिति का वर्णन करती है जिसे एक स्त्री स्वयं समाज से, परिवार से अनुभव करती है। इसके पहले जितनी भी स्त्रियां थीं उन्होंने परिवार और समाज में जिस अनुभव की अनुभूति की वह अपने साथ ही मरने के बाद लेकर चली गई। जिसका लाभ आने वाली पीढ़ियों को न हो सका। ऐसी ही सीख का वर्णन 'ऐ लड़की' में है। जिसमें मां बेटी आपस में वार्तालाप करते हुए। एक नई दुनिया का सृजन करने की बागडोर अपने कंधे पर ले लेती हैं। हर पल नई सीख, सलाह, उलाहन, अफसोस, षड्यंत्र को उजागर करती हुई आगे बढ़ती हैं तथा समाज की गंभीर समस्याओं के खत्म होने की संभावनाएं भी देती हैं।

सावन आया है

जितेश आनंद, 9वीं कक्षा
सुपुत्र श्री प्रणय कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक, सिकंदराबाद मंडल

प्यासी धरती की प्यास बुझाने आया है,
देखो फिर से सावन आया है.
बादल प्रेम सुधा बरसाने आया है,
मन में हर्ष और उल्लास जगाने आया है.
देखकर भू की मनोहर हरियाली,
मन में प्यास बुझाने वाली,
नवतन में प्रीत जगाने आया है.
नभ में प्रेमगीत सुनाने आया है,
अपने रंग-बिरंगे नवरूप भर लाया है,
देखो फिर से सावन आया है.
गूंज उठे है डमरू की धुन सुनाने,
उमड़ रहे है जन-जन की प्यास बुझाने.
ढंक कर चादर नवयोवन का रसपान कराने आया है,
देखो झूम-झूम कर फिर से सावन आया है.
ये रुत जो नव जीवन संग लाया है,
देखो फिर से वह सावन लौटकर आया है.

<u>तथागत मनुष्य और बाँस</u>

दीप नारायण चौहान
कनिष्ठ अनुवादक
सिकंदराबाद मंडल

काशीनाथ सिंह को पढ़ना सीधे जिन्दगी से बातें करना है. उनकी कहानियों के प्रत्येक प्रश्न किसी न किसी घटना को केन्द्र में लेकर चलते हैं जो हमारे मस्तिष्क को उद्वेलित करते रहते हैं. सच तो यह है कि उनकी कथा, कथा नहीं कहती उस जिन्दगी से हमें रूबरू कराती है जो अनुभवों से फूटती है और हमें उस स्थान पर लाकर खड़ा करती है जो हमें सोचने के लिए मजबूर करता है.

काशीनाथ सिंह की कथा यात्रा 1960 के बाद से आरंभ होती है. इनकी कहानियों में चित्रित समाज का अपना एक अलग मिज़ाज़ था जो प्रवृत्ति नई कहानी की प्रवृत्ति से बिल्कुल इतर था. काशीनाथ सिंह की कहानियाँ समाज के अंतर्विरोधों की पहचान कराती है और इस पहचान की प्रक्रिया में जहाँ वे शत्रुपक्ष की ओर इशारा करती हैं वहीं ऐसे पात्रों को भी सामने लाती हैं जो सामाजिक रूपांतरण के लिए संघर्ष करते हैं. एकरूपता और यांत्रिकता से बचने के लिए वे जहाँ एक ओर कहानी के पर्याप्त लचीले हो आए ढाँचे को तटस्थता प्रदान करते हैं, तो वहीं दूसरी ओर वर्णनत्मकता और प्रत्यक्ष कथन से हटकर कभी अपनी नाटकीय उपस्थिति द्वारा तो कभी सांकेतिक रूप में अपनी बात कहने की कोशिश करते हैं. काशीनाथ सिंह अपने दौर के उन कथाकारों जैसे नहीं थे जिन्होंने अपनी कहानी के केन्द्र में पारिवारिक घुटन, संत्रास और व्यक्तिगत संबंधों के नाम पर स्त्री-पुरूष के यौन–संबंधों को रखा. काशीनाथ जी ने कहानी के दूसरे आयामों को भी खोलने का काम किया. इस दूसरे आयाम को समझने के लिए जिस कहानी से बात शुरू की जा सकती है वह कहानी है ‘बाँस’. वैसे तो बाँस का पौधा पौराणिक काल से शुभ माना गया है इसे वास्तु कला के अनुसार सकारात्मक सोच एवं सुख-समृद्धि और धन प्राप्ति का भंडार माना गया है. बाँस ही एक मात्र ऐसा पौधा है जो हर परिस्थिति एवं परेशानियों का सामना करता हुआ सीधा खड़ा रहता है. इसी बाँस को काशीनाथ सिंह ने अपनी कहानी का ऐसा कैनवास संजोया जो अकल्पनीय है.

बाँस कहानी तीन दृश्यों में वर्णित है. पहले ही भाग में लेखक कहीं न कहीं हमें इस कहानी की अंतर्वस्तु को हल्के में लेने वाले को सचेत करते हैं उनका साफ-साफ कहना है कि “कुछ कहानियाँ होती हैं जिन्हें हम सुनते हुए भी नहीं सुनते. कुछ कहानियाँ होती हैं जो इस कान में आती हैं और उस कान से निकल जाती हैं कुछ कहानियाँ होती हैं जो कान में आती हैं, कुछ समय के लिए अंदर पड़ाव डालती हैं, अंत में डेरा-डंडा उठाकर चल देती हैं. मगर कुछ कहानियाँ ऐसी भी होती हैं जो दिल और दिमाग में अपना घर बनाती हैं और वहीं बस जाती हैं हमेशा के लिए.”

कहानी के अगले भाग में हम पाते हैं कि एक पुरुष ऐसी विकट परिस्थितियों में पड़ा है कि उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया है वह सोच नहीं पाता कि क्या करे क्योंकि उस शांत जंगल में जहाँ एक ओर शेर उसे निगलने के लिए आतुर है तो दूसरी ओर प्रचंड हिलोरे मारती नदी है. वह असमंजस की स्थिति में है. अगर इस स्थिति से किसी कारणवश बाहर निकल जाता है तो उस कारण को भगवान मान लेता है और उसी को अपने जीवन का उद्देश्य बना लेता है जब कहानी आगे बढ़ती है तो ऐसी ही स्थिति नायक की होती है वह भी नदी में पड़ी बाँस की वजह से बच निकलता है और उस बाँस के प्रति कृतज्ञ हो जाता है उसी को अपना धर्म–कर्म यहाँ तक की भगवान मान बैठता है. उसकी यह धारणा उसकी मानसिकता को संकुचित करती है.

अमूमन मनुष्य की यह धारणा होती है कि वह स्वतंत्र है, अपनी इच्छानुसार कुछ भी कर सकता है. लेकिन यह धारणा भ्रामक है वह कहीं भी पूर्णतः स्वतंत्र नहीं है उसका संस्कार या यों कहे उसकी परंपराएं, उसके व्यक्तित्व को हमेशा प्रभावित करते रहे हैं उसे हमेशा अंधेरे में रखते आए हैं. काशीनाथ सिंह की कहानी बांस में नायक भी उसी प्राचीन परंपराओं से ग्रस्त है वह बाँस के प्रति इतना कृतज्ञ है कि वह उसे छोड़ नहीं पाता जब तथागत उससे प्रश्न करता है कि हे आर्य ! बाँस की लंबाई और उसका भार तुम्हारे भार से दुगनी है तो तुम इसे क्यों ढोकर ले जा रहे हो, क्या तुम्हारे पतनग्राम में ऐसा बाँस नहीं हैं? या यह कोई विशेष जाति का बाँस है आपको देखकर मुझें बड़ी दया आ रही है आर्य "आप हाँफ रहे हैं, पसीने से तर-बतर है, भूखे-प्यासे हैं .... आप से खड़ा तक नहीं हुआ जा रहा है. फिर भी इस बोझ को निरुद्देश्य ढोने का क्या प्रयोजन ?" तब आर्य कहता है कि, "जिसे आप बोझ समझ रहे हैं, वह मेरा ईश्वर है." अगर यह बाँस नहीं होता तो मेरा भी अस्तित्व नहीं होता इसने मेरी जान बचाई है तो मैं इसके प्रति कृतघ्न कैसे हो जाऊँ. तथागत उसके प्रश्न का उत्तर बड़े ही विनम्र भाव से देते हैं कि जिसने आप की जान बचाई पर आर्य इसे जो करना था कर चुका अब यह मात्र बोझ है इसे ढोते जाने का कोई प्रयोजन नहीं हैं क्योंकि जिसने आपकी जान बचाई वह फिर आपके प्राण ले रहा है यह कहाँ का न्याय है. बुद्ध का उपदेश कहीं न कहीं बहुत सार्थक है एक बाँस की नांव नदी पार करने के लिए होती है हमें उसका उपयोग करना चाहिए पर जीवन भर कृतज्ञ भाव से उसका बोझ ढोते नहीं रहना चाहिए क्योंकि अचेतन बाँस हमारी भावना को नहीं समझ सकता इसलिए हमें चेतनाशील होना चाहिए.

हमें इसे और स्पष्ट रूप से समझना है तो गौतम बुद्ध के सिद्धांतों से अवगत होना होगा. गौतम बुद्ध किसी परंपरा किसी लीक को नहीं मानते थे. वे ऐसा नहीं कहते कि अतीत के ऋषियों मुनियों द्वारा जिस परंपरा का निर्वाह होता आ रहा है वह एकदम सटीक है इसलिए मान लो. वे ऐसा नहीं कहते हैं कि वेद में ऐसा लिखा है इसलिए मान लें, वे ऐसा भी नहीं कहते कि जो मैं कह रहा हूँ, उसे स्वीकार लो. कहीं न कहीं कहानी के अंत में वे हमारे ऊपर छोड़ देते हैं कि इसका क्या परिणाम है तुम खुद सोचो. गौतम बुद्ध कहते हैं कि जब तक तुम न परख लो तब तक विश्वस्त मत हो जाओ. जीवन को खोज में लगाओ. मानने में जरा भी शक्ति व्यय मत करना. अन्यथा मानने में ही फंस जाओगे. मान मानकर ही लोक विचलित हो गए है. बुद्ध न तो परंपरा की दुहाई देते, न वेद पुराण की. न वे कहते हैं कि हम जो कहते हैं, वह ठीक होना ही चाहिए. वे केवल इतना ही कहते है कि ऐसा मैंने देखा इसे मानने की जरूरत नहीं है. इसे अगर परिकल्पना (हाइपोथीसिस) की तरह लो तो अच्छा होगा. सौ डिग्री तक पानी गर्म करने से पानी भाप बन जाता है मानने की कोई जरूरत नहीं, चूल्हा तुम्हारे घर में है जल उपलब्ध है, आग उपलब्ध है चढ़ा दो चूल्हे पर जल को परीक्षण कर लो. इससे यह स्पष्ट हो जायेगा कि सत्य क्या है और असत्य क्या है? तब ऩिष्कर्ष पर पहुंचो. बुद्ध पारंपरिक नहीं है, मौलिक है. विचार परंपरा होती है, विचार अतीत से प्रभावित होता है पर दृष्टि वर्तमान से जुड़ी होती है और अपनी होती है. इसलिए कहानी के अंतिम भाग में उस आर्य को अगाह करते हुए कहते हैं कि तुम इस बाँस को फेंक दो और अपने मन, मस्तिष्क से सोचो और परखो. काशीनाथ सिंह और उनकी इस कहानी की विशेषताओं पर नज़र डाले तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हमारी हजारो वर्षों पुरानी परंपरा अत्यंत समृद्ध होते हुए भी आज के संदर्भ में पूरी तरह प्रासंगिक नहीं है मनुष्य की दृष्टि, रहन-सहन, भाषा लगातार बदल रही है संस्कृति भी मनुष्य द्वारा निर्मित है, वह भी अपना स्वरूप बदल रही है और इस बदलाव को स्वीकार करना जरूरी है. इसलिए नए मूल्यों को तो स्वीकार करे, लेकिन यह भी देखें कि पुरानी बातों का कितना हिस्सा आज हमारे लिए किस हद तक उपयोगी है. उनको भी आत्मसात करे. पर जो परंपराएं और मूल्य आज प्रासंगिक नहीं हैं, जो व्यक्ति और समाज के संतुलित विकास में अवरोधक है उसे छोड़ देना चाहिए. अगर शरीर का कोई अंग संक्रामक रोग से ग्रस्त हो गया है और

उसकी वजह से पूरे शरीर को खतरा है तो जरूरी होगा कि उस अंग को शरीर से विच्छेद कर दे. अगर कोई रोगी डॉक्टर की चिकित्सा से स्वस्थ हो जाए तो हमारे द्वारा उसे भगवान मानकर ज़िंदगी भर उसी से सभी रोगों का इलाज कराना मूर्खता का परिचायक है उसके प्रति कृतज्ञ होना सही नहीं. डॉक्टर का कर्त्तव्य है रोगी को बचाना. आज जीवन शैली और जीवन मूल्य इस कदर बदल रहे हैं कि उसके साथ समन्वय करना जरूरी हो गया है.

अंततः काशीनाथ सिंह के संस्कार पारंपरिक हैं पर मन आधुनिक है. इसलिए परंपरा के भीतर वे लगातार अंतर्विरोध और मनुष्य के संघर्ष को तलाशते हैं और इसी के माध्यम से मानव धर्म को समझने की कोशिश करते हैं उसे शुष्क, नीरस और मूल्यहीन होने से बचाते हैं.

समय का सदुपयोग

प्रणय कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
सिकंदराबाद मंडल

समय मानव जीवन का एक अमूल्य रत्न है. यह मानव जीवन का एक ऐसा हिस्सा है जिस पर प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह अमीर हो या गरीब सभी लोगों का अपना अधिकार होता है. समय के हाथ पांव नहीं होते हैं फिर भी यह अपने रफ्तार के साथ आगे बढता ही जाता है. एक बार यदि समय चला जाता है तो दोबारा लौटकर नहीं आता है. प्रत्येक व्यक्ति को समान समय है लेकिन कुछ लोग इसका सही सदुपयोग करते हैं तो कुछ लोग समय का दुरुपयोग करते हैं. समय का कालचक्र हमेशा तेज रफ्तार में रहता है जिसकी गति कोई अवरूद्ध नहीं कर सकता. मानव जीवन परमात्मा का दिया हुआ सबसे बड़ा उपहार है जिनमें उनके अलग-अलग रूप, सोच-विचार तथा भावनाओं का समावेश होता है. लेकिन मानव जीवन के कर्म पर किसी का अधिकार नहीं होता है जो उनके व्यक्तित्व के साथ-साथ सृजित होते हैं जिसमें समय की भूमिका अहम होती है. जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में हर एक पल का महत्व समझते हुए समय का सदुपयोग किया है उन्हें जीवन में अवश्य सफलता मिली होगी. समय का महत्व बताते हुए **फ्रैंकलिन का कथन है-**

"तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है तो समय को व्यर्थ मत गंवाओ क्योंकि जीवन इसी से बना है. समय ही एक ऐसी वस्तु है जिसे खोकर पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है".

प्रत्येक क्रिया या वस्तु का एक निश्चित समय होता है वह वस्तु या क्रिया उसी समय के लिए मूल्यवान होती है जब समय उपयुक्त होता है अगर वह चीज समय पर न मिले तो वह कितनी भी जरूरी क्यों न हो हमारे लिए निरर्थक होती है जैसे कृषकों के लिए कहा गया है-

"समय चूकि पुनि का पछिताने का वर्षा जब कृषि सुखाने"

वर्षा का मूल्य उसी समय है जब वह समय पर हो जो किसी का मूल्य निर्धारित करता है. इसी प्रकार उस न्याय को न्याय नहीं माना जाता जो समय पर न मिले जिसके लिए मार्टिन लूथर की एक महत्वपूर्ण कहावत प्रचलित है-

"Justice delayed is justice denied".

समय का एक-एक क्षण जीवन के लिए महत्वपूर्ण है. हमें अपना हर कार्य करने के लिए एक सुनिश्चित कार्यक्रम बना लेना चाहिए और फिर उसी के अनुरूप अपने कार्यों को संपन्न करने की कोशिश करनी चाहिए. समय एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से हम अपने जीवन के प्रत्येक कार्यों को सुनिश्चित करते हैं. समय के सही सदुपयोग से हम अपने कार्यक्षेत्रों में ख्याति प्राप्त करते हैं. यदि हम अपने जीवन में इसका सही सदुपयोग नहीं करते हैं तो हमें ठोकरें खानी पड़ती हैं.

कुछ लोग कभी भी अपना काम समय पर पूरा नहीं कर पाते हमेशा वे समय की कमी का रोना रोते रहते हैं. वे आज का काम कल और कल का काम परसों में टालते रहते है. ऐसे लोग कोई भी काम समय पर पूरा नहीं करते हैं.

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि –

"समय की प्रतीक्षा करके स्वयं को मूर्ख मत बनाइए क्योंकि सही समय तभी आएगा जब आप उसे बनाने के लिए प्रयास करेंगे".

मनुष्य का जीवन क्षणभंगुर है. अत: जीवन के प्रत्येक क्षण को मूल्यवान समझकर कार्य में जुटे रहना चाहिए. मानव जीवन की सफलता का रहस्य समयरूपी रत्न के भोग में ही छिपा है. जो व्यक्ति अपने अमूल्य समय का लाभ नहीं उठाते, अवसर पाकर चूक जाते हैं, उन्हें वह दोबारा नहीं मिलता. अत: हमें समय की गति और स्वभाव की पहचान कर एक-एक क्षण का मूल्य समझना चाहिए. हमारे जीवन की सफलता-असफलता समय के सदुपयोग तथा दुरुपयोग पर निर्भर करती है. कहा भी गया है- **क्षण को क्षुद्र न समझो भाई, यह जग का निर्माता है**".

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में भाग्योदय के क्षण आते हैं, जो उस क्षण का सदुपयोग कर लेता है. वह जीवन में सफलता की सीढियां चढता चला जाता है.

समय का सही सदुपयोग कैसे करें:-

- महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता दें- कार्य जो अधिक आवश्यक है और और जिन्हें जल्द से जल्द पूरा करने की आवश्यकता है, उन्हें प्राथमिकता दें.
- सही मैनेजमेंट- यदि पहले से ही योजना बनाई जाती है तो कुछ भी हासिल किया जा सकता है. सही मैनेजमेंट हमारे काम को आसान बनाता है.
- लक्ष्य बनाएं- किसी भी काम को अपने निर्धारित समय में पूरा करने के लिए लक्ष्य बनाएं कि उस काम को उसी समय में पूरा करना है.
- स्मार्ट वर्क करें- स्मार्ट वर्क से उन चीजों को जल्दी कर सकते हैं, जिन्हें करने में आलस होती है.
- काम और सोच में संतुलन बनाएं- सोचने में समय बर्बाद करने के बजाय काम करना बेहतर है, किसी भी कार्य को सकारात्मक सोच के साथ करें जिससे काम में सामंजस्य बना रहे जिससे कोई भी कार्य आसानी से कर सकते हैं.

यदि लोगों की दिनचर्या पर ध्यान दें तो पता चलेगा कि अधिकांश समय वे गप्पें मारने में लगे रहते हैं. कुछ लोग तो ऐसे होते हैं जिन्हें कामचोर कहा जाता है. ऐसे लोग काम से जी चुराते हैं और यदि काम सिर पर आ जाए तो उससे कन्नी कटाना चाहते हैं. काम से बचने के लिए वे बहाने ढूंढते रहते हैं. सरकारी-गैर सरकारी दफ्तरों में भी ऐसे बहुत से कर्मचारी होते हैं. इनके टाल-मटोल के कारण फाइलों का बोझ बढ़ता जाता है. फलस्वरूप महत्वपूर्ण निर्णय समय पर नहीं लिए जाते हैं. इससे देश का नुकसान होता है.

आजकल की युवा पीढी इसी दौर से गुजर रही है. वे समय के महत्व को न समझकर फालतू बातों पर ज्यादा ध्यान देते हैं. युवाओं में आत्मनिर्भरता की कमी ज्यादा देखने को मिलती है. वे समय के साथ अपनी जिम्मेदारियों को भूल बैठकर गलत कार्यों में ज्यादा अभ्यस्त रहते हैं. मोबाइल देखना, मूवी पर जाना, नशा करना, जुआ खेलना करना आम बात हो गई. नतीजा यह होता है लोगों के उम्र के साथ-साथ जिम्मेदारियां तो बढती ही हैं उसके साथ-साथ बेरोजगारी भी अपने चरम सीमा पर होती है. देश की युवाशक्ति निरर्थक आंदोलनों के जरिए धरना, प्रदर्शन, जुलूस और रैलियों का आयोजन करने में अपना समय व्यर्थ करती रहती हैं. तोड़-फोड़ और आगजनी के द्वारा राष्ट्रीय संपत्ति का नुकसान तो अब आम बात बन गई है. यदि यही शक्ति रचनात्मक कार्यों में लग जाए तो देश की काया पलट जाए और खुशहाली का साम्राज्य छा जाए यही प्रगति का मूल मंत्र है. यदि देश का प्रत्येक नागरिक कर्मठ हो और समय का सदुपयोग करे तो भारत को विकसित होने में अधिक समय नहीं लगेगा.

<u>धैर्य और साहस</u>

निरंजन कुमार
तकनीशियन-II
विद्युत लोको शेड/विजयवाड़ा

एक बार की बात है बाबा भोलेनाथ और माता पार्वती देवलोक से चलकर पृथ्वीलोक पर घूमने के लिए निकले । दोनों एक जंगल की ओर से गुजर रहे थे तभी माता पार्वती की नजर, कुएं के किनारे एक भूखे सर्प और एक लाचार मेढ़क पर पड़ी, दोनों ही अपनी जिंदगी की जंग लड़ रहे थे। तभी माता पार्वती को दया आ गई और उन्होंने बाबा भोलेनाथ से कहा कि - हे स्वामी आप तो देवाधिदेव महादेव हैं, आप तीनों लोकों के स्वामी और कर्ताधर्ता हैं, आपसे एक विनती है कि आप दोनों की कुछ मदद करें क्योंकि दोनों ही प्राणी आपके बड़े भक्त हैं।

(एक वह सर्प था जो कई दिनों से भूखा था और भगवान से प्रार्थना कर रहा था - हे प्रभु किसी तरह मैं इस मेढ़क को खा सकूं और अपना प्राण बचा लूं तो वहीं दूसरी ओर मेढ़क अपनी जिंदगी की भीख मांग रहा था)

तभी बाबा भोलेनाथ ने सर्प और मेढ़क दोनों को अपनी जिंदगी बचाने की तरकीब बताई - उन्होंने सर्प के कानों में कहा कि - तुम मेढ़क को जोर से पकड़े रहना और तब तक नहीं छोड़ना जब तक कि वह अपना दम ना तोड़ दे। फिर जाकर उन्होंने मेढ़क के कानों में कहा कि तुम तब तक बिना हिले-डुले शांत रहना, जब तक कि सर्प अपने जबड़े की पकड़ ढ़ीली ना कर दे। इतना कह कर बाबा भोलेनाथ माँ पार्वती के साथ वहां से चले गए।

लाचार और बेबस मेढ़क वैसा ही साहस और धैर्य के साथ शांत पड़ा रहा जैसा उसे बाबा जी ने कहा परंतु वहीं एक ओर कुछ समय बीतने के बाद सर्प को ऐसा लगा कि लगता है मेढ़क ने अपना दम तोड़ दिया और जैसे ही सर्प ने अपने जबड़े की पकड़ छोड़ी, मेढ़क तुरंत ही छलांग लगाकर कुएं में कूद पड़ा और उसने साँप से अपनी जान बचा ली।

इस कहानी से तात्पर्य है कि अगर हम अपना कार्य धैर्य, साहस और पूर्ण निष्ठा के साथ करें तो निश्चित ही हमें सफलता मिलती है।

ऑनलाइन के माध्यम से शिक्षा और इसकी सार्थकता

रौशन कुमार "प्रिय"
तकनीशियन ॥
सीसेइंजी/ वि./औ. व सं. / विजयवाड़ा

रोटी, कपड़ा और मकान मानव जीवन की मूलभूत आवश्कता है। लेकिन जिसकी वजह से मानव ये तीनों चीजें आसानी से प्राप्त कर सकता है, वह विद्या है। इसीलिए कहा गया है कि बिना ज्ञान के मनुष्य पशु के समान है।

मेरे कहने का यह तात्पर्य बिल्कुल नहीं है कि विद्या सिर्फ जरूरतों की पूर्ति का माध्यम मात्र है । यह तो मनुष्य को सभ्य, सुसंस्कृत, संस्कारी और समाज में रहने के योग्य बनाता है।

इस संदर्भ में हितोपदेश का यह श्लोक मेरी इन्हीं बातों को सार्थकता प्रदान करता है -

विद्यां ददाति विनयं,
विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति,
धनात् धर्मं ततः सुखम्॥

अर्थात् विद्या विनय देती है, विनय से पात्रता आती है, पात्रता से धन आता है, धन से धर्म होता है और धर्म से सुख प्राप्त होता है।

मानव जैसे-जैसे प्रगति के पथ पर आगे बढ़ा शिक्षा और शिक्षा के माध्यम में सदैव सकारात्मक परिवर्तन हुआ है।

आदि काल से इन सब परिवर्तनों का साक्षी हमारा देश भारतवर्ष अतीत के गौरवमयी गुरुकुलों से होते हुए नालंदा, विक्रमशिला जैसे महान विश्वविद्यालयों की गौरव गाथाओं का इतिहास समेटे हुए वर्तमान में मेडिकल और इंजीनियरिंग के बड़े - बड़े शैक्षणिक संस्थानों का सफ़र तय कर चुका है। इसके साथ ही आज के इस इंटरनेट युग में ऑनलाइन शिक्षा की ओर कदम बढ़ा चुका है, जो कि शिक्षा के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी क्रांति मानी जा सकती है।

ऑनलाइन के माध्यम से शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह हैं कि अब शिक्षा सर्व सुलभ हो गई है। गांव हो या शहर, सब जगह इस इंटरनेट आधारित शिक्षा की धमक देखने को मिल रही है। बीते वर्षों में कोरोना महामारी के दौरान जब घर से निकलना दूभर हो गया था। शिक्षा के तमाम केंद्रों को अनिश्चित कालीन समय के लिए बंद कर दिया गया था। उस समय शिक्षा का यही माध्यम छात्रों की मरनासन्न हो चुकी पढ़ाई के लिए संजीवनी बना। इस तरह हम यह भी कह सकते हैं कि, खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में जो महत्व हरित क्रांति का है, शिक्षा के क्षेत्र में वही महत्व इस इंटरनेट आधारित शिक्षा का है।

इंटरनेट आधारित शिक्षा के कारण अब ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को उत्तम शिक्षा के लिए शहरों के नामी गिरामी शैक्षणिक संस्थानों पर निर्भर रहना नहीं पड़ रहा है और न ही किसी गरीब के बच्चे को इस बात का मलाल होता है कि पैसे के कारण वो अपनी पढाई पूरी नहीं कर पाया।

आज लगभग सभी शैक्षणिक संस्थान इंटरनेट के माध्यम से घर- घर तक अपनी पहुंच बना चुके हैं।

शिक्षा का यह माध्यम केवल छात्रों के लिए ही नहीं बल्कि उन तमाम शिक्षकों के लिए वरदान साबित हुआ है जिनके शैक्षणिक संस्थान कोरोना महामारी के भेंट चढ़ चुके थे।

इंटरनेट आधारित शिक्षा ने उन्हें उस समय भी आर्थिक रूप से कमजोर नहीं होने दिया । इंटरनेट आधारित यह शिक्षा प्रतिभावान शिक्षकों को न केवल एक पहचान दिला रही है बल्कि उनकी बेरोजगारी भी दूर कर रही है।

इसके साथ ही जो शिक्षक गरीब प्रतिभावान विद्यार्थियों की सहायता करना चाहते हैं तो यह उसमें भी मददगार साबित हो रही है।

इसके अलावा देश भर में और भी ऐसे कई शिक्षक हैं, जो ऑनलाइन के माध्यम से मामूली फीस में बच्चों को ज्ञान का दान देकर मानव समाज के लिए अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे हैं।

कहते हैं मनुष्य जब जब मशीनों पर आश्रित हुआ है, उसे उसके फायदे के साथ साथ नुकसान भी झेलना पड़ा है।

आज इस ऑनलाइन शिक्षा का जहां इतना अधिक महत्व है, वहीं उसकी कुछ खामियों को भी हम नजरंदाज नहीं कर सकते।

शिक्षा के इस माध्यम से बच्चों को स्कूल जाने की जरूरत नहीं होती है, जिससे वो लापरवाह हो जायेंगे।उन्हें न तो समय से स्कूल जाने की जल्दी होगी, न होम वर्क बनाने का टेंशन और न ही किसी शिक्षक से अनुशासन भंग करने पर सजा पाने का भय।

स्कूल में बच्चों को सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं दिया जाता, बल्कि उन्हें एक सभ्य, सुसंस्कृत और संस्कारी बनाने के लिए समाजिक और नैतिक ज्ञान भी दिया जाता है। उसे अनुशासन में रहना और समय के सदुपयोग का भी ज्ञान दिया जाता है।

अगर बच्चे स्कूल नहीं जाएंगे तो इन सब बहुमुल्य रत्नों को पाने से वंचित रह जायेंगे। इतना ही नहीं अगर अभिभावक इन पर नजर न रखें तो बच्चे मोबाइल के जरिए गलत चीजों की ओर बहुत जल्दी आकर्षित होने लगते हैं और बुरी आदतों के शिकार हो जाते हैं। पब्जी जैसे आनलाइन गेम को प्रतिबंधित, बच्चों को इसी तरह की गलत आदतों से बचाने के लिए किया गया था।

इस तरह हम यह निष्कर्ष पाते हैं कि, ऑनलाइन शिक्षा का यह माध्यम विद्यार्थियों के लिए वरदान तो है, मगर इसका सदुपयोग भी बहुत जरुरी है। मेरा मानना है कि इस इंटरनेट आधारित शिक्षा का अधिकार अभिभावकों की देख - रेख में दसवीं के बाद के विद्यार्थी को ही दिया जाना चाहिए क्योंकि, तब तक अधिकतर बच्चे अपने भविष्य की राह और अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर चुके होते हैं। इसके अलावा अभिभावक इस बात पर ध्यान दें कि, बच्चों को कभी सुविधाभोगी नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हे तो परिश्रमी , ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ होना चाहिए। तभी वे समाज में एक सभ्य नागरिक बन सकेंगे और तभी वे अपने समाज और अपने देश के विकास में अपना योगदान दे सकेंगे।

होली

आलोक कुमार
तकनीशियन-III
सीसेइंजी/कार्य/जल प्रबंध/का/विजयवाड़ा

मन में आशा दिल में खुशियाँ, लोग यहाँ हैं बैठाए
इस फागुन में मिल-जुल कर, एक-दूजे को रंग लगाए।

गली-मुहल्ले, सड़कें, बस्ती सब की सब रंग जाएं
कोई मारे गुब्बारे तो कोई गुलाल उड़ाये ।

गुजियाँ, पापड़, पूड़ी-सब्जी लोग हैं घर पर बनाते
एक दूसरे के घर जाकर मिल बाँट कर खाते।

घोल लिया रंग है पानी में, भर गई है पिचकारी
कोई न जा पायेगा बचके, आएगी सबकी बारी।

तेरा मेरा मिलन शेष है, बाकी बातें हो गई सारी
इस साल होली में अपने, हाथ लगी लाचारी।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

तिरुमलाशेट्टी लिखिता
सुपुत्री वी. साईं लक्ष्मी (तकनीशियन-II)
मंयांइंजी/वैगन डिपो/का/विजयवाड़ा

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डिजिटल उपकरणों और तेज इंटरनेट के माध्यम से हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है. सरकार से लेकर व्यवसाय तक सभी क्षेत्रों के लोग समस्याओं को हल करने और प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के लिए एआई का उपयोग तेजी से कर रहे हैं. एआई भविष्य में लोगों के जीवन को बहुत आसान कर देगा, लेकिन इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी है जिन पर ध्यान देना आवश्यक है. एआई का उपयोग एक सीमित मात्रा में किया जाना चाहिए और इस पर संपूर्ण निर्भरता भी नहीं होनी चाहिए.

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्या है

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक प्रकार की तकनीक है जो कंप्यूटर और मशीनों को इंसानों की तरह सोचने औऱ सीखने में सहायता करती है. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंप्यूटर को ऐसे कार्य करने में मदद कता है जिनके लिए आमतौर पर मानवीय बुध्दि की आवश्यकता होती है. जैसे कि अलग अलग प्रकार से लिखी हुई भाषा समझना चित्रों में देखकर पैटर्न को पहचानना, लॉजिकल और क्रिटिकल समस्याओं को हल करना और निर्णय लेना आदि. हमारे फोन में एआई सिरी या एलेक्सा जैसै वर्चुअल असिंस्टेंट से हम मानव की तरह बात कर सकते हैं. ये हमारी इच्छा अनुसार फोन में कार्य भी करते है. डॉक्टरों को बीमारियों का निदान करने में भी यह मदद कर रहा है. एआई कार्यों को स्वचालित करके और स्मार्ट समाधान प्रदान करके हमारे जीवन को आसान बना रहा है.

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रकार

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को हम मुख्यतः सात प्रकारों में बांट सकते हैं-

नैरो एआई – यह विशिष्ट कार्यों को करने के लिए डिजाइन और प्रशिक्षित एआई है. वर्चुअल असिंस्टेंट जैसे- सिरी और एलेक्सा नेटफ्लिक्स और अमेजॉन द्वारा उपयोग की जानेवाली एआई हैं.

सामान्य एआई

एआई जो ज्ञान को समझने सीखने और ज्ञान को विभिन्न प्रकार के कार्यों में लागू करने की क्षमता रखता है, बिल्कुल मनुष्य की तरह, वह सामान्य एआई है.

सुपरइंटेलिजेंट एआई

यह ऐसा एआई है जो मानव बुध्दिमत्ता से आगे निकल जाता है और मानव क्षमताओं से परे कार्य कर सकता है. यह एआई का एक काल्पनिक रूप है यह एक ऐसा एआई होगा जो हर क्षेत्र में मानव से अधिक योग्य होगा.

रिएक्टिव मशीन

यह ऐसा एआई सिस्टम है जो पिछली घटनाओं की किसी भी स्मृति के बिना केवल वर्तमान स्थितियों पर प्रतिक्रिया कर सकते है. जैसे 1 बीएम का डीप ब्लू, शतरंज खेलने वाला एआई कंप्यूटर आदि.

लिमिटेड मेमोरी

यह एआई सिस्टम वर्तमान निर्णयों को सूचित करने के लिए पिछले अनुभवों का उपयोग करते है. स्व-चालित कारें जो बेहतर ड्राइविंग निर्णय लेने के लिए अन्य कारों की गति और दिशा का निरीक्षण करती है.

थ्योरी आफ गाइड

यह सिस्टम मानवीय भावनाओं, विश्वासों, इरादों को समझते हैं और सामाजिक रूप से बातचीत कर सकते हैं. इस प्रकार का एआई अभी भी शोध में चरणों में है और अभी तक उपलब्ध नहीं है.

सेल्फ अवेयर एआई

इस एआई की अपनी चेतना, आत्म–जागरूकता और समझ है. यह एआई की एक काल्पनिक अवधारणा है और वर्तमान में मौजूद नहीं है.

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का छात्र जीवन पर प्रभाव

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस छात्रों को उनके अनुभवों को पर्सनलाइज्ड करके और सहायता प्रदान करने, छात्र जीवन को महत्वपूर्ण रूप से बेहतर बनाता है. एआई से संचालित उपकरण व्यक्तिगत, आवश्यकताओं के अनुसार पढ़ाई में सहायता करते हैं. इससे छात्रों को अपनी असिस्टेंट और चैटबॉट तत्काल सहायता और ट्यूशन प्रदान करके सहायता प्रदान करते है. एआई छात्रों को शैक्षिक संसाधनों तक आसानी से पहुंचने और उन्हें व्यवस्थित करने में मदद करता है, जिसमें सीखना अधिक कुशल और प्रभावी हो जाती है, इसके साथ छात्र केवल उसी कंटेंट पर ध्यान देते हैं जो उनके लिए आवश्यक होता है.

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अलग अलग क्षेत्रों में अनुप्रयोग

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अलग अलग क्षेत्रों में विविध अनुप्रयोग हैं. स्वास्थ्य सेवा में एआई बीमारियों के निदान और उपचार योजनाओं में सहायता करता है. शिक्षा में यह सीखने के अनुभवों को बेहतर करता है और छात्रों को वर्चुअल ट्यूशन भी प्रदान करता है. एआई चैटबॉट के माध्यम से ग्राहक सेवा को भी बढाता है. भविष्य की संभावनाओं के विश्लेषण से सात व्यावसायिक संचालन में सुधार करता है. कार्य में हुई यह धोखाधडी का पता लगाता है और व्यापार का संचालन करता है. एआई परिवहन में सेल्फड्राइविंग कॉरों को भी शक्ति प्रदान करता है. मनोरंजन में एआई की भूमिका फिल्म और संगीत के लिए रिकमंडेशन सिस्टम शामिल है. जबकि कृषि में यह खेती और फसल निगरानी में मदद करती है.

एआई तकनीकी इनोवेशन में सबसे आगे है, जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में क्रांति ला रहा है. इसके अनुप्रयोग स्वास्थ सेवा और शिक्षा से लेकर वित्त और परिवहन तक के उद्योगों में फैले हुए हैं, यह जटिल समस्याओं के समाधान प्रदान करते हैं और सुविधा के लिए अपार अवसर प्रस्तुत करता है. यह गोपनीयता नौकरी के खतरे और सामाजिक प्रभाव के बारे में नैतिक चिंताओं को भी जन्म देता है. इसलिए जब हम अपने जीवन में जन्म देता है. इसलिए जब हम अपने जीवन में का उपयोग जारी रखते हैं तो यह सुनिश्चित करते हुए सोच समझकर आगे बढना महत्वपूर्ण है कि संभावित जोखिमों को कम करते हुए इसके लाभों को अधिकतम किया जा सके. जिम्मेदारी के साथ इसका उपयोग किया जाए. एआई भविष्य को बेहतर बनाने, मानव क्षमताओं को बढाने और अभूतपूर्व तरीकों से प्रगति को बढावा देने की क्षमता रखता है.

राष्ट्र निर्माण में युवाओं का महत्व

नितिन कुमार नायक
सुपुत्र के.सी. नायक
उप वाणिज्य टिकट निरीक्षक/स्लीपर विजयवाड़ा

वर्तमान युग में युवा राष्ट्र की एक शक्तिशाली संपत्ति है जिसमे प्रचुर मात्रा में ऊर्जा और उत्साह है जो समग्र उन्नति के लिए आवश्यक माना जाता है. युवावस्था विकास का एक महत्वपूर्ण चरण है. अनिश्चितता की अवधि है जब सब कुछ उथल-पुथल में होता है. युवा कल की आशा है. वे देश के सबसे ऊर्जावान वर्गो में से एक है और इसलिए उनसे बहुत उम्मीद है. सही मानसिकता और क्षमता से युवा देश के विकास में योगदान दे सकते हैं और उसे आगे बढा सकते हैं.

आज की युवा पीढी विभिन्न चीजों को पूरा करने की जल्दी में है और अंतिम परिणाम प्राप्त करने के लिए इतनी प्रेरित है कि वह अपने द्वारा चुने गए साधनों पर ध्यान नहीं देती है. जब कि विज्ञान प्रौद्योगिकी, गणित वास्तुकला, इंजीनियरिंग और न जाने क्या-क्या क्षेत्र में कई प्रगति हुई है. हम इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकते कि समय के साथ अपराध दर में भी वृद्धि हुई है. आज दुनिया में पहले से कहीं अधिक हिंसा हो रही है और इसका बड़ा हिस्सा युवाओं को माना जाता है.

यूथ इन इंडिया रिपोर्ट-2022

यूथ इन इंडिया 2022 रिपोर्ट राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 29 जून 2022 को प्रकाशित की गई थी. यह श्रृंखला का चौथा अंक है. रिपोर्ट में (युवा) को 15 से 29 वर्ष की आयु के सभी नागरिक के रूप में परिभाषित किया गया है.

यह सामाजिक आर्थिक संकेतकों के माध्यम से इस जन सांख्यिकीय के पहलुओं पर प्रकाश डालता है. जिसमें लिंग और वैवाहिक स्थिति, आयु, विशिष्ट मृत्यु-दर, एनीमिया की घटना शिक्षा स्तर नामांकन और उच्च शिक्षा में लिंग समानता आदि के आधार पर वितरण शामिल है.

यूथ इन इंडिया रिपोर्ट-2022 निम्नलिखित बातों को उल्लेखित करता है

- रिपोर्ट में कहा गया है कि 29 साल की औसत आयु के साथ यह दुनिया की सबसे युवा आबादी वाले देशों में से एक है.
- भारत सरकार के स्वास्थ्य और पारिवारिक मामलों के मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2021 में देश की कुल आबादी में युवाओं (15-29 वर्ष की आयु) की हिस्सेदारी 27.2 प्रतिशत है. यह हिस्सेदारी 2036 तक घटकर 22.7 प्रतिशत होने की उम्मीद है. फिर भी लगभग 345 मिलियन युवा आबादी बड़ी होने का अनुमान है.
- भारत के अधिकांश राज्यों में युवा आबादी का अनुपात गिरना शुरु होने से पहले 2011 में अपने उच्चतम बिंदु पर पहुंचा था, हॉलांकि केरल में युवा आबादी 1991 में अपने चरम पर पहुंच गई और 2036 तक 11 प्रतिशत था.
- रिपोर्ट में उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण का हवाला देते हुए कहा गया है कि पिछले कुछ वर्ष में उच्च शिक्षा में सकल नामंकन अनुपात (जीईआर) लगातर बढा है. यह 20.8 प्रतिशत (2011-12) और 24.5 प्रतिशत (2015-16) से बढ़कर 2019-20 में 27.1 प्रतिशत हो गया है. 2019-20 मे महिला के लिए जीईआर (27.3) प्रतिशत पुरुषों (26.9 प्रतिशत) की तुलना में अधिक था.

- 15-29 वर्ष की आयु की महिलाओं में कुल प्रजनन दर 2017-18 में 17.8 प्रतिशत से घटकर 2020-21 में 12.9 प्रतिशत हो गई.
- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण(एनएफएचएस) के आकडों का हवाला देते हुए रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में 15 साल से कम उम्र में शादी करने वाली लडकियों में से 1.7 प्रतिशत की शादी 15 वर्ष की आयु तक हो चुकी थी. यह एनएफएचएस-3(2005-06) में दर्ज 11.9 प्रतिशत से कम थे.
- रिपोर्ट में कहा गया है कि 15-29 वर्ष की आयु की महिलाओं मे कुल प्रजनन दर (टीएफआर) 1971 मे आयु महिला 5.2 बच्चों से घटकर 2019 में 2.1 बच्चों पर आ गई है और शहरी क्षेत्रों में टीएफआर (1.7) बच्चे ग्रामीण क्षेत्रों (2.3) के बच्चों की तुलना में कम है.
- भारत में 15-19 वर्ष वाले आयु वर्ग के लिए किशोर मृत्य दर 1971 में प्रति 1,000 जनसंख्या पर 2.4 मृत्यु से घटकर 2019 से 0.7 मृत्यु हो गई है. 20-24 वर्ष की आयु वाले के लिए मृत्यु दर प्रति 1,000 जनसंख्या पर 1 मृत्यु दर थी और वृद्ध लोगों के लिए 25-29 वर्षों में यह प्रति 1,000 जनसंख्या पर 1.2 मृत्यु थी.
- श्रम बल भागीदारी दर (एलीएफपीआर) जनसंख्या के भारत श्रम बल की हिस्सेदार को मापना है. 2017-18 के दौरान श्रम बल में युवाओं की भागीदारी 38.2 प्रतिशत थी. 2020-21 के दौरान यह थोडा बढकर 41.4 प्रतिशत हो गया. रिपोर्ट में यह भी कहा गया था कि श्रम बल में युवा महिलाओं की भागादारी युवा पुरुषों की तुलना में बहुत कम है.
- 2020-21 में, 15-29 वर्ष की आयु के व्यक्तियो में, 5.85 प्रतिशत 'साक्षर नहीं' थे और 11.1 प्रतिशत 'प्राथमिक तक साक्षर' थे. रिपोर्ट में कहा गया है कि इस आयु वर्ग के लगभग 58.29 प्रतिशत लोगों ने माध्यमिक स्कूल शिक्षा या उससे आगे तक शिक्षा प्राप्त की है. 87.94 प्रतिशत के साथ केरल में माध्यमिक स्तर या उससे अधिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों (15 से 29 वर्ष की आयु के बीच) का प्रतिशत सबसे अधिक था.
- समानता सूचकांक (जीपीआई) पुरुषों और महिलाओं की शिक्षा तक सापेक्ष पहुंच का मापक 1 से कम है- जीपीआई बताता है कि सीखने के अवसर लड़कियों को लड़कों की तुलना में अधिक नुकसान होता है और 1 से अधिक का जीपीआई 2011-12 में 0.92 से बढकर 2020-21 में 1.03 हो गई है.

युवा सशक्तिकरण

युवा सशक्तिकरण का तात्पर्य 'युवाओं को अपने जीवन पर नियंत्रण रखने और अपने भविष्य को आकार देने के लिए आवश्यक उपकरण संसाधन और अवसर देने की प्रक्रिया से है.

इसमें शिक्षा, सहायता और संसाधनों के निर्णय लेने की शक्ति तक के पक्ष प्रदान करना शामिल है. ताकि युवा अपने और अपने संदर्भित लोगों के लिए बेहतर भविष्य बनाने में सक्रिय रूप से भाग ले सके.

युवाओं के सशक्तिकरण से गरीबी में कमी आर्थिक विकास में वृद्धि और एक सशक्त समाज बन सकता है. जापान में औसत आबादी वृद्ध और अधेड़ उम्र के व्यक्तियों की है जबकि भारत में औसत आबादी युवा वर्ग की है वह भी तब जब जापान दो बार परमाणु हमलों को झेलने के बाद भी हमेशा अन्य देशों की अपेक्षा कहीं ज्यादा विकसित है. इसकी वजह है, वहां के युवाओं का सशक्तिकरण और स्वयं की कीमत को समझना.

युवा सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले कारक

- **शिक्षा:-** युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच प्रदान करना जो उन्हें समुचित निर्णय लेने और सक्रिय नागरिक बनाने के लिए ज्ञान कौशल और महत्वपूर्ण सोचने की क्षमता से युक्त करती है.
- **कौशल विकास:-** प्रशिक्षण और परामर्श कार्यक्रम की पेशकश जो युवाओं को कार्यबल में सफल होने और अपने समुदाय में पूरी तरह से भाग लेने के लिए आवश्यक तकनीकी और जीवन कौशल विकसित करने में मदद करती है.
- **नागरिक सहभागिता:-** युवाओं के नेतृत्व वाले संगठनों, युवा सांसदों और समुदाय-आधारित पहलुओं सहित निर्णय लेने की प्रक्रियाओं और सार्वजनिक चर्चा में भाग लेने के लिए युवाओं को अवसर प्रदान करना.
- **स्वास्थ्य और कल्याण:** शिक्षा और नेतृत्व वाले संगठनों, युवा सांसदों और गहराई तक पहुंचने के माध्यम से युवाओं को रचनात्मक और सांस्कृतिक रूप से खुद को अभिव्यक्त करने और सांस्कृतिक गतिविधि में भाग लेने के लिए सशक्त बनाना जो उनके जीवन और समुदाय को समृध्द बनाते हैं.

युवा सशक्तिकरण का लाभ

अपराध दर में कमी

खराब शिक्षा, गरीबी और बेरोजगारी युवाओं के अपराध और हिंसा में शामिल होने के प्रमुख कारण हैं. इन कारकों के साथ समाज में हमेशा उच्च स्तर की अपराधिक गतिविधियां घटित होंगी. युवा सशक्तिकरण से अपराध दर में कमी आ सकती है क्योंकि यह युवाओं को सकारात्मक जीवन, अच्छाइयों को चुनने और समाज में उत्पादक और जिम्मेदार सदस्य बनने के अवसर, संसाधन और सहायता प्रदान करता है. जब युवाओं के पास शिक्षा, रोजगार और अन्य संसाधनों तक पहुंच है, तो उनके अपराधिक गतिविधियों में शामिल होने की संभावना कम होती है और समाज के उत्पादक सदस्य बनने की अधिक संभावना होती है.

गरीबी उन्मूलन

गरीबी उन्मूलन युवा सशक्तिकरण के सबसे महत्वपूर्ण लाभों में से एक है. युवाओं को सशक्त बनाने से कई तरह से गरीबी उन्मूलन में मदद मिल सकती है. अच्छी शिक्षा प्रदान करके युवाओं को अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी प्रदान की जा सकती है, युवा अच्छी तनख्वाह वाली नौकरियां प्राप्त करने और आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं. बदले मे उनके जीवन स्तर में सुधार हो सकता है और उन्हें गरीबी से बचने में मदद मिल सकती है. इसके अतिरिक्त जब युवा सामुदायिक विकास परियोजनाओं में शामिल होते हैं और उन्हें अपनी व्यवस्था शुरु करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, इससे युवा रोजगार के अवसर पैदा कर सकते हैं.

आज के युवाओं की मुख्य समस्याएं

आज के युवा निम्नलिखित समस्याओं के शिकार हैं - इनमें से कुछ के लिए ये स्वयं जिम्मेदार हैं जबकि कुछ के लिए जिम्मेदार कुछ अन्य कारक हैं.

“आप केवल एक बार युवा होते हैं, और यदि आप इसमें सही तरीके से काम करते हैं तो एक बार ही काफी है”.

अवसाद

इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर बहुत अधिक समय बिताने से युवा अपने साथियों के साथ व्यक्तिगत गतिविधियों जैसे खेल आदि से वंचित हो सकते हैं जो अवसाद को दूर करने में मदद कर सकते हैं.

नशे का प्रयोग

2021 में सर्वेक्षण में शामिल लगभग 3% किशोरों (8वी ,10वी और 12वी कक्षा मे) ने प्रतिदिन नशीली दवाओं का उपयोग करने की सूचना दी.

भारत में भी ज्यादातर ग्राणीण क्षेत्रों में छोटे बच्चे घर में घडों को गुटखा पान और सिगरेट का सेवन करते देखते हैं और बहुत ही कम उम्र में वे भी इनका सेवन करने लगते हैं.

सोशल मीडिया

फेसबुक, इंस्टाग्राम और ट्विटर एक-दूसरे से जुड़ने के बेहतरीन माध्यम हो सकते हैं. लेकिन सोशल मीडिया कई कारणों से समस्याओं का कारक भी हो सकता है.

रोजगार का सृजन

युवाओं को सशक्त बनाने से रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे. शिक्षा, संशोधन और नौकरी प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करके, युवा अच्छी तनख्वाह वाली नौकरियां प्राप्त करने और समाज के उत्पादक सदस्य बनने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं.

जब युवाओं को उद्यमी बनने और व्यवसाय शुरु करने के लिए सशक्त और प्रोत्साहित किया जाता है तो इससे नए उत्पादों और सेवाओं के विकास, नई और नवीन प्रौद्योगिकियों की शुरुआत और नए बाजारों के विकास को बढावा मिलेगा. इससे युवा रोजगार के अवसर पैदा कर सकते है और देश की आर्थिक वृद्धि में योगदान दे सकते हैं.

राजनीतिक कार्यों में वद्धि

जब युवा सशक्त होते हैं तो वे राजनीतिक रूप से अधिक सक्रिय और संलग्न हो जाते हैं जिससे अधिक जानकारीपूर्ण और भागीदारीपूर्ण लोकतंत्र बनता है.

नवीनता और रचनात्मकता में वृद्धि

सशक्त युवा अक्सर अधिक नवीन और रचनात्मक होते हैं, जो सामाजिक समस्याओं के लिए नए विचार और संशोधन उत्पन्न करने में मदद करता है.

बेहतर वैश्विक नागरिकता

वैश्विक चिंताओं को दूर करने और अधिक शंतिपूर्ण और टिकाऊ दुनिया को बढ़ावा देने के लिए युवा सशक्तिकरण युवाओं को इसमें अपना स्थान बनाने और उचित कार्रवाई करने में सक्षम बनाता है.

बेहतर आत्मविश्वास और आत्मसम्मान

सशक्त युवा बेहतर निर्णय लेते हैं, सशक्तीकरण से उनका-सम्मान और आत्मविश्वास बढता है.

जोश और ऊर्जा से भरे किसी बड़े सपने को सजाने के लिए युवावस्था का काल स्वर्ण काल होता है. हालांकि, यह दौर रोमांच से भरा भी है. फिर भी उन्हें खुली आँखों से देखाना होगा. यही समय है जब हम समाज के आर्थिक विकास के लिए अपने विचारों को मूर्त रूप दे सकते हैं. नाटककारों परियोजनाओं, खेल और अन्य में सक्रिय भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना अत्यधिक कल्पना को नियंत्रित करने के बहुत अच्छा तरीका है.

अनहोनी कहानी (यथार्थ घटना)

पी. पावनी
कनिष्ठ अनुवादक,राजभाषा अनुभाग
विजयवाड़ा

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूहों में निकोबार एक छोटा-सा द्वीप है, जहां की जनसंख्या बहुत ही कम है. ऐसे स्थान पर मोहन, लोक निर्माण विभाग में अभियंता के रूप में स्थानांतरण पर आए थे. मोहन अपने परिवार के साथ वहां क्वार्टर में शिफ्ट हुए. मोहन का परिवार छोटा और सुखी परिवार था. उनका परिवार बहुत खुश था. मोहन की पत्नी नीलिमा एक संस्कारी गृहणी थी. सुबह-सुबह जल्दी उठना, घर की साफ-सफाई करना, अपने पति और बेटी पूर्णिमा के लिए नाश्ता बनाना, पति मोहन के लिए लंच बाक्स तैयार करना, यही नीलिमा की दिनचर्या थी. पूरी तरह से देखा जाए तो नीलिमा एक आदर्श पत्नी, अच्छी मां एवं सुशील गृहणी थी.

तब तक सब अच्छा ही चल रहा था लेकिन अचानक उस दिन 26 दिसंबर, 2004 की सुबह 6.00 बजे की बात थी. उस क्वार्टर के सभी लोग लगभग सो रहे थे. वहां पर कुछ ही लोग उस समय जगे हुए थे. उनमें नीलिमा और मोहन भी थे. उस समय नीलिमा आंगन की सफाई कर रही थी. अचानक उसे जमीन के हिलने का एहसास हुआ. वह सोचने लगी कि ये सब उसका वहम था. तभी अचानक उसकी नज़र अपने क्वार्टर के नज़दीकी समुद्र पर पड़ी. वह देखने लगी कि समुद्र में लहरें नहीं है और समुद्र पीछे जाने लगा. नीलिमा को कुछ समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है. वह अपने पति को बुलाकर दिखा ही रही थी, इतने में समुद्र, देखते ही देखते पूरे बडे-बड़े लहरों के साथ भयानक रूप धारण करके सब तहस-नहस कर रहा था. कुछ ही क्षणों में समुद्र का भयानक रूप इन्हें भी निगल लेता, तब तक वे दोनों अपनी बेटी पूर्णिमा को लेकर अपनी जान हथेली पर लेकर पहाड़ की ओर भागने लगे. कुछ ही समय में पहाड़ के ऊपर चढ़कर देखा तो पाया कि समुद्र ने उग्र रूप धारण करके प्रकृति का विकृत रूप धारण कर रहा था. तेज और बड़ी लहरों की वजह से मकान डूब गए थे गाडियां बहने लगीं, जो लोग सुबह अपने घरों में चैन की नींद सो रहे थे वे शाश्वत रूप से नींद में ही रह गए. बहुत लोग मर गए. बहुत कम लोग इस विनाश से बच पाए थे.

तीन दिन तक मोहन के परिवारवाले जंगल में भटकते रहे. खाने-पीने के लिए कुछ भी नहीं था. कोई संचार का साधन भी उपलब्ध नहीं था. बाहर की दुनिया से इन लोगों का संपर्क पूरी तरह से टूट गया था. पूरी रात जंगल में बिताकर अगले दिन जब वे लोग अपने क्वार्टर पहुंचे तो पता चला कि यह सुनामी यानि एक समुद्री भूकंप है. इस सुनामी ने सब कुछ बरबाद कर दिया. हर जगह लाशें ही लाशें दिखाई दे रही थी, जिन लोगों से एक दिन पहले ही मुलाकात हुई थी आज वे लोग लाश बनकर पड़े थे. चारों ओर सिर्फ लाशें और विनाश ही दिख रहा था. लोग अपने परिवारवालों को खो चुके थे. बहुत सारे बच्चे अनाथ हो गए थे. इस घटना ने अचानक से सब के जीवन में उथल-पुथल मचा दिया. हमारे जीवन में कुछ अनहोनी घटना ऐसे घटती है जिसे चाहकर भी भूल नहीं पाते. नीलिमा और मोहन ने ऐसी घटना को अपने आंखों से देखा था, आज भी वे उस घटना को भूल नहीं पाए. उस सुनामी के कहर ने नीलिमा के परिवार से सब कुछ छीन लिया. हँसते–खेलते परिवार ने कुछ ही क्षणों में अपना सब कुछ खो दिया. नीलिमा के मन में सुनामी के कहर की बर्बादी ऐसी छपी कि उस घटना की वजह से उसके रातों की नींद गायब हो गई. उसे अपने साधारण जीवन में वापस आने के लिए कई साल लग गए. किसी भी तरह से वह परिवार अब सामान्य जीवन जीने लगा है. दिन गुजरने लगे लेकिन आज की तारीख में भी अगर वे उस घटना के बारे में सोचते हैं या किसी को बताते हैं तो उनकी रूह कांपने लगती है.

<u>गुलाब</u>

जे.विजय कला
कार्यालय अधीक्षक,
वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी का कार्यालय
गुंतकल

फूलों में रानी है तू
काँटेदार होने पर भी कितनी कोमल, कितनी प्यारी है तू
शिशु से लेकर बड़े तक
सबको अपनी मोहकता से करती है आकर्षित तू

बगीचे में चाहे कितने भी फूल खिलें हो
सब तुम्हारे पास खिंचे चले आते हैं
रंग बिरंगी होते हुए भी तू,
कहलाती "गुलाब" है.

गुलाबी रंग तुझसे बना,
गुलाल भी .....तुझीसे
हे... गुलाब... तू है....
सुंदरता का प्रतीक
तुम्हारे काँटेदार जिस्म से,
झांक रहा है मृदु सा हृदय,

चाहे परिस्थितियां कितनी ही,
असहज या फिर हो विकल,
अमीरी-गरीबी का भेद न कर,
निरंतर आपस में प्रेम की ज्योति जलाने का,
देती है तू संदेश

फूलों में रानी है तू
तेरी खुशबू से महकता उठता सारा गुलिस्ता
मानो ईश्वर ने तुझे स्वर्ग की अप्सरा सी
धरती पर मानवता को सवारने के लिए भेजा है.....

मेरी महाबलीपुरम की यात्रा

ज्ञान रंजन
मेल एक्सप्रेस गाड़ी प्रबंधक
तिरुपति, गुंतकल मंडल

हमलोग तिरुपति से चेंगलपट्टू रेलवे स्टेशन पहुँचे. वहाँ से बस में प्राकृतिक दृश्यों को निहारते हुए अप्रतिम सौंदर्य व पौराणिक शहर महाबलीपुरम पहुँचे. महाबलीपुरम, जो अपने भव्य मंदिरों, स्थापत्य और सुन्दर सागर तटों के लिए प्रसिद्ध है, 07वीं सदीं में यह शहर पल्लव राजाओं की राजधानी रही है. यहाँ पर बड़े- बड़े शिलाओं को काटकर मूर्ति, मंदिर और जानवरों की मूर्तियाँ निर्मित की गई हैं. हमलोगों ने बस स्टैंड के नजदीक एक कमरा किराया पर लिया. कमरे में लगी महाबलीपुरम के एतिहासिक इमारतों और मंदिरों के तस्वीरों ने मन मोह लिया. द्रविड़ शैली के बेहतरीन नमूनों को देखने के लिए मन बेचैन हो उठा. हमलोग एक टैक्सी किराये पर लेकर सर्वप्रथम रथमंदिर पहुँचे, जिसे पाण्डव रथ मंदिर भी कहा जाता है. पांच पाण्डव रथों को एकल चट्टान पर निर्मित किया गया है. शिलाओं को खूबसूरत तरीके से काटकर हाथी और नंदी बनाया गया है. तत्पश्चात हमलोग कृष्ण मंडपम् की ओर चल पड़े, जहाँ कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत को उठाकर चरवाहों और गोपियों को भारी बारिश और बाढ़ से बचाने को चित्रित किया गया है. तत्पश्चात हमलोगों ने पेट पूजन के लिए अडयार आनंद भवन होटल में शुद्ध शाकाहारी तमिलनाडु भोजन का लुत्फ उठाया. भोजन उपरांत होटल से सीधे गणेश रथ मंदिर पहुँचे. इस मंदिर को भी एक चट्टान पर ही उकेरा गया है. इसके बाद हमलोगों ने पीले नारियल पानी का सेवन किया और वराह गुफ़ा मंदिर पहुँचे, ग्रेनाइट पहाड़ी की चट्टानों पर एक उत्कृष्ट मंदिर का निर्माण किया गया है. तत्पश्चात्त हमलोगों ने कच्चे आम के सलाद का मजा लेते हुए ओलकानेश्वर मंदिर पहुँचे, जिसे ओल्ड लाइटहाउस भी कहा जाता है. भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर पहाड़ी पर निर्मित है, जहाँ से शहर के मनोरम दृश्यों को देखा जा सकता है, हमलोगों ने बहुत सारी सेल्फी तस्वीरें भी लीं जो सदा यादगार रहेंगी. अंत में हमलोग महाबलीपुरम के तट मंदिर पहुँचे, जिसे 08वीं सदी में निर्मित किया गया है. मंदिर की अनोखी नक्काशी और सौंदर्य को देखकर आंखें फटी की फटी रह गईं. जैसा सुना था उससे कहीं ज्यादा सुन्दर पाया. यहाँ तीन मंदिर हैं मध्य में भगवान विष्णु का मंदिर और दोनों तरफ से शिव मंदिर है. तट मंदिर परिपक्व द्रविड़ वास्तुकला के सभी तत्वों को प्रदर्शित करता है. मंदिर के पीछे वाले क्षेत्र में अलौकिक सुन्दर सागर तट है, जो सागर प्रेमियों और सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र है. प्रधानमंत्री मोदी जी के साथ चीन के राष्ट्रपति के महाबलीपुरम और तट मंदिर आने के बाद पर्यटन उद्योग में चार चांद लग गये हैं. हमलोग रात को वापसी के लिए बस द्वारा ढ़ेर सारी सुनहरी मीठी यादें और उल्लास व ताजगी के साथ महाबलीपुरम से चेंगलपट्टू रेलवे स्टेशन के लिए निकल पड़े.

🌙🌙 चंदा मामा 🌙🌙

राखी कुमारी
पत्नी - ज्ञान रंजन
मेल एक्स्प्रेस गाड़ी प्रबंधक
तिरुपति, गुंतकल

आसमान में चंदा मामा

अकेले विचरण क्यों करते हो ??

कोई साथी नहीं मिला क्या चंदा मामा

चेहरे पर मुहांसों के जो दाग हैं !

क्यों इलाज नहीं कराते हो चंदा मामा

हरदम हँसी बिखेरते रहते हो

क्या ग़म है, जिसे छिपाते हो चंदा मामा ??

कभी दिखते हो तो कभी छिपते हो

बोलो किससे डरते हो चंदा मामा ??

कभी दिखते हो छोटे और

तो कभी बहुत बड़े दिख जाते हो !

बोलो क्या राज है चंदा मामा ??

कभी रात को जल्दी आते हो !

और कभी बहुत देर से आते हो

बोलो ऐसा क्यों करते हो चंदा मामा ??

लगता है नाना के डर से !

सब उल्टा-पुल्टा करते हो चंदा मामा ।

<u>देव भूमि हरिद्वार की यात्रा</u>...........

दीपक कुमार साव
कनि. अनुवादक
वरि. मंकाधि/का/गुंतकल

देव भूमि हरिद्वार के दर्शन

आज हम देव भूमि हरिद्वार की यात्रा के दौरान अपने अनुभव को साझा करेंगे जहाँ से पतित पावनी, पाप नाशिनी गंगा पर्वतों को छोड़ धरती पर आती है। इस शहर की हवा में सोंधी सी खुशबू है।

दूर से दिखते अडिग पर्वत, कलकल कर के बहती पवित्र गंगा, दूर - दूर से आए श्रद्धालु और चारों ओर गूंजते गंगा मईया की जय ....के जयकारे । ये रमणीय दृश्य आँखों के द्वार से होते हुए सीधे हृदय में समा जाती हैं ।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यहाँ प्रतिदिन एक त्यौहार सा माहौल होता है - गंगा मैया का त्यौहार । सूर्योदय के स्नान से आरंभ होकर संध्या आरती तक हर एक क्षण एक त्यौहार जैसा ही तो है। प्रतिदिन हज़ारों श्रद्धालु देश के कोने-कोने से यहाँ गंगा दर्शन के लिए आते हैं और गंगा में स्नान करके जन्म-जन्मांतर के पापों से मुक्त हो जाते हैं। देव भूमि हरिद्वार में कई अति मनोरम मंदिर व दर्शनीय स्थल हैं। यहाँ के बाजार बड़े लुभावने हैं । हर तरफ रौशनी है, रौनक है। खाने के शौकीन लोगों को हरिद्वार बिल्कुल भी निराश नहीं करता, यहाँ स्वादिष्ट पकवानों की खूब सुंदर दुकानें सुबह से ही सज जाती हैं और जो ग्राहकों को अपनी ओर खींचती हैं । बच्चे भी इसके आकर्षण से नहीं बच पाते और अपने माता-पिता से खिलौनें दिलाने के लिए जिद कर बैठते हैं।

पूजा की सामग्री व हिन्दू धार्मिक किताबों की भी बहुत सी दुकाने हैं। भारत के हर प्रांत के लोग यहाँ आते हैं और गंगा जी के पवित्र जल को बोतलों में भर कर अपने साथ ले जाते हैं क्योंकि ऐसी मान्यता है कि समुद्र मंथन से निकली अमृत की कुछ बुँदे यहाँ गिरी थीं इसीलिए इस स्थान को ब्रह्म कुंड कहते हैं। गंगा घाट व बाज़ारों में गंगा जल से भरी रंग - बिरंगी बोतलों से सजी दुकाने देखी जा सकती हैं।

दूर - दराज़ से आए यात्री गंगा के पावन जल में स्नान करके अपनी सारी थकान भूल जाते हैं और हर-हर गंगे का जाप करते हुए इस नगरी के मनमोहक दृश्यों को अपने हृदय में समेट लेते हैं। सायं काल की आरती का दृश्य बड़ा ही मनोरम होता है। श्रद्धालु आरती देखने के लिए गंगा घाट पर बनी सीढ़ियों पर बैठ जाते हैं। गंगा जल में दिखाई देती आरती की ऊपर उठती ज्वालाएं ऐसा प्रतीत होती हैं जैसे सैकड़ों दीपक गंगा जल में डुबकियां लगा रहे हों।

<u>हर की पौड़ी व ब्रह्मकुंड</u>

गंगा मंदिर के नीचे बनी सीढ़ियों को हर की पौड़ी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि सागर मंथन के समय के अमृत की कुछ बुँदे यहाँ गिरी थी इसीलिए इस स्थान को ब्रह्मकुंड कहते हैं तथा ग्रंथों में यहाँ स्नान करने पर बड़ी महिमा वर्णित है। ब्रह्मकुण्ड से थोड़ी दूरी पर अस्थि विसर्जन घाट है। कुछ शास्त्रों के अनुसार, गंगा में अस्थियां विसर्जित करने से मृत की आत्मा को मोक्ष मिलता है. ऐसा भी कहा जाता है कि जब तक मृत व्यक्ति की अस्थियां हरिद्वार के ब्रह्मकुंड में रहती हैं, तब तक उसकी आत्मा स्वर्ग में बनी रहती है.

<u>मनसा देवी मंदिर व चंडी देवी मंदिर</u>

हरिद्वार का माता मनसा देवी मंदिर, उत्तराखंड राज्य के पवित्र शहर हरिद्वार में शिवालिक पहाड़ियों के बीच बना है. यह मंदिर 52 शक्तिपीठों में से एक है और उत्तर भारत के सबसे प्रसिद्ध शक्ति मंदिरों में से एक माना जाता है. मंदिर का निर्माण मनीमाजरा के राजा गोपाल सिंह ने करवाया था. उन्होंने अपनी मनोकामना पूरी होने पर करीब 200 साल पहले, वर्ष 1815 में इस मंदिर का निर्माण करवाया था. मंदिर को अब सरकार ने विरासत स्थल के रूप में बनाए रखा है. मान्यता है कि यहां भक्त जो मुराद लेकर आते हैं, उनकी मनोकामनाएं देवी मां पूरी करती हैं. कहा जाता है कि यहां धागा बांधने से हर इच्छा पूरी हो जाती है. इसलिए, जो भी व्यक्ति माता के मंदिर में आता है, वह अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए मंदिर परिसर में स्थित पेड़ की शाखाओं में धागा बांधता है. एक

बार जब उनकी मनोकामना पूरी हो जाती है, तो लोग पेड़ से धागा खोलने के लिए दोबारा इस मंदिर में आते हैं. हर की पौड़ी से कुछ 800 मीटर की दूरी पर मनसा देवी अपने भक्तों की मनोकामनाएं पूरी करने के लिए सुशोभित है। मनसा देवी जाने के दो रास्ते हैं, एक पैदल यात्रा का और दूसरा उड़नखटोले के जरिए ।

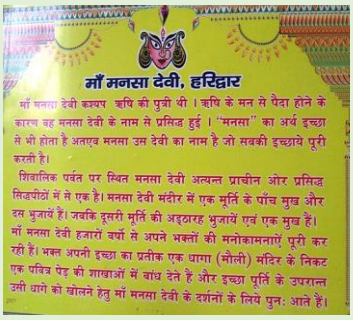

मनसा देवी मंदिर से 3 कि. मी. की दूरी पर स्थित है चंडी देवी मंदिर। यह मंदिर माँ शक्ति के चण्डिका रूप को समर्पित है। चंडी देवी दर्शन के लिए पैदल यात्रा की जा सकती है या रोप वे के उडन कटोरे में बैठ कर समग्र हरिद्वार को देखते हुए माँ के दरबार में पहुंच सकते हैं। यह मंदिर नील पर्वत की पहाड़ियों पर स्थित है। इस पर्वत के पास से बहने वाली गंगा की धारा को नील गंगा कहा जाता है। चंडी देवी के मंदिर से हरिद्वार नगरी का मनोहर दृश्य दिखता है। इन पर्वतों पर माता के जयकारे निरंतर गूंजते रहते हैं । देवी के इन दोनों ही मंदिरों में दर्शन पाने के लिए श्रद्धालुओं की लंबी कतार लगी रहती है ।

अन्य मंदिर

हरिद्वार में अनेकों मंदिर हैं, सबकी अपनी-अपनी महिमा है। इनमें से कुछ हैं माया देवी के लिए बना माया देवी मंदिर, भगवान शिव को समर्पित दक्ष महादेव मंदिर. कहा जाता है कि यहीं पर दक्ष प्रजापति ने वह यज्ञ किया था जिसमें महादेव को आमंत्रित न करने पर तथा यज्ञ स्थल पर शिव का अपमान किए जाने से देवी सती ने अपने पिता दक्ष से क्रोधित होकर यज्ञ की धधकती अग्नि में कूदकर देह त्याग कर दिया था। भारत माता मंदिर आधुनिक युग का एक मंदिर है । यह एक आठ मंज़िला भव्य मंदिर है प्रत्येक मंजिल एक-एक के लिए निर्दिष्ट है यथा भारत माता, शूर वीर, मीरा, सावित्री जैसे प्रशंसनीय नारी के लिए मातृ मंदिर, संतों के लिए संत मंदिर, असेंबली हॉल, शक्ति स्वरूपा देवी के कई रूप की मूर्तियां स्थापित मंडप, भगवान विष्णु के दशावतार की छवि प्रदर्शित मंदिर और आठवीं मंजिल में शिव का मंदिर बना है.

विशेष आग्रह

गंगा को स्वच्छ रखने में अपना सहयोग दें और ऐसा कोई कार्य न करें जिससे गंगा के प्रति आस्था और गंगा की पवित्रता भंग हो। हर हर गंगे । जय माँ गंगे ।

<u>एक सक्षमकर्ता के रूप में प्रौद्योगिकी की भूमिका</u>
<u>“ स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा के साथ आत्मनिर्भरता”</u>

मोहम्मद मुख्तार आलम
मुख्य डिपो सामग्री अधीक्षक
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, गुंतकल

बुद्धि शासन की गुणवत्ता को बढ़ाती है,
ज्ञान सिद्धांत और व्यवहार का संयोजन है।
यह शासक को अधिक सक्षम और अधिक कुशल बनाता है।

वर्तमान में टेक्नोलॉजी और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया बहुत उन्नत हो गया है जिसकी मदद से हम अपने समाज से भ्रष्टाचार को रोक सकते हैं या मिटा सकते हैं। भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसमें इंटरनेट, मोबाइल फोन, ब्रॉडबैंड, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, ई-कोर्ट आदि शामिल हैं। यह सब ई-गवर्नेंस के अंतर्गत आते हैं। अब, ई-शासन क्या है? ई गवर्नेंस का मतलब भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ना या इन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से सतर्क रहना है।

भ्रष्टाचार से लड़ने में तकनीक कैसे मदद करती है : कई सरकारी कार्यालयों में जब अधिकारी और कर्मचारी किसी भी काम को करने के लिए या कोई प्रमाण पत्र आदि जारी करने के लिए रिश्वत लेते हैं। अगर हम इस वीडियो फुटेज को बिना ध्यान दिए रिकॉर्ड करते हैं और यदि सभी इसे सार्वजनिक रूप से दिखाते हैं या मीडिया के करीब जाते हैं लोग तो पूरा मामला सुर्खियों में आ जाएगा। इस तरह लोग रिश्वत लेने से डरेंगे।

आभूषण की दुकान में सोने का व्यापारी हमेशा अधिक कीमत लेकर आम लोगों को ठगने की कोशिश करता है। यदि हमारे पास एक स्मार्ट फोन है और सोने की मौजूदा कीमत की जांच करें तो व्यापारी ऐसा करने में असफल होगा। यह प्रौद्योगिकी सूचना का अधिकार अधिनियम भ्रष्टाचार को रोकने में भी मदद करता है। किसी को भी किसी भी सरकारी नौकरी के बारे में कोई संदेह है, आधिकारिक जानकारी के बारे में रिक्तियों को हम उस विशेष संगठन, विभाग के पोर्टल पर लॉग इन करके इंटरनेट पर देख सकते हैं।

हम किसी भी दुकानदार, किसी भी वित्तीय एजेंसी, हमारे खिलाफ भ्रष्टाचार करने वाले बैंक के खिलाफ उपभोक्ता फोरम की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर शिकायत दर्ज कर सकते हैं। इसे ई-शिकायत कहा जाता है। कई कार्यालयों में रिश्वत लेना आदतन कार्रवाई है। इसलिए सरकार दस्तावेज, ई-ऑफिस फैक्स रिटर्न, पासपोर्ट आवेदन, वीजा आदि जमा करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक

माध्यम पर जोर देती है। इस तरह अधिकारियों को आम लोगों से पैसा इकट्ठा करने का कोई मौका नहीं मिलेगा।

हाल ही में माननीय प्रधान मंत्री ने भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने पर जोर दिया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की मदद से उन्होंने स्विस बैंक ऑफ स्विटजरलैंड में हजारों मिलियन डॉलर में काला धन रखने वाले व्यक्तियों के नामों का पता लगाने की कोशिश की है। पहले यह बैंक किसी भी व्यक्ति के खाते की जानकारी साझा नहीं करता था। लेकिन भारत सरकार के बहुत दबाव और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के दबाव के कारण उन्होंने उन भारतीयों की सूची देने के लिए मजबूर किया जिनके पास एक बड़ा खाता शेष है।

वोटिंग बूथ में भी शुरुआती दिनों में भ्रष्टाचार होता है। सत्ताधारी दल अपने प्रतिनिधि द्वारा जबरदस्ती मतदान कराकर धांधली करता है। लेकिन अब एक दिन संवेदनशील क्षेत्रों में जहां इस तरह की गतिविधियां होती थीं, सरकार डिब्बे में क्लोज सर्किट या सीसी टीवी कैमरों का उपयोग करती है और पूरी प्रक्रिया को लाइव टेलीकास्ट करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भी नियुक्त करती है। इस तरह कोई भी कदाचार करने की कोशिश नहीं करेगा।

आजकल सोशल नेटवर्किंग साइट्स, फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्स एप आदि भी कुछ हद तक भ्रष्टाचार को रोकने में मदद करते हैं। क्योंकि अगर कोई देखता है या कुछ भी गलत हो रहा है, तो वे तुरंत सार्वजनिक रूप से स्थिति साझा करते हैं। इस तरह लोग भ्रष्टाचार करने से डरेंगे।

टेक्नोलॉजी को इस हद तक अपग्रेड किया गया है कि कोई भी इसके चंगुल से भाग नहीं सकता। यदि कोई राजनेता या कोई सरकारी अधिकारी फोन पर पैसे मांगता है, तो ट्विटर, व्हाट्स एप आदि पर आवाज की बातचीत को रिकॉर्ड करने और व्यक्ति कहां से कॉल कर रहा है, रिकॉर्ड करने का भी प्रावधान है। इस तरह सी.बी.आई. ने कई भ्रष्ट अधिकारियों और राजनेताओं को गिरफ्तार किया है यह भ्रष्टाचार को रोकने में भी मदद करता है।

भ्रष्टाचार को रोकने के लिए प्रौद्योगिकी हमेशा उन्नत और सहायक होती है लेकिन हमें देश के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में इस कुप्रथा को जड़ से यानी शून्य स्तर तक मारने के लिए प्रौद्योगिकी के लाभों का उचित उपयोग करना चाहिए।

अगर हमारे देश का या किसी भी संगठन का हर व्यक्ति भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने की शपथ लेता है तो दिन दूर नहीं हैं, हम भारतीय खुद आगे बढ़ेंगे और इसे एक विकासशील देश से विकसित देश में उच्च प्रति व्यक्ति के साथ परिवर्तित करने में सक्षम होंगे। आय, बेहतर संचार सुविधाओं और बेहतर शिक्षा सुविधाओं, उद्योगों, बेहतर चिकित्सा सुविधाओं आदि के साथ। इतना ही नहीं हम गरीबी निरक्षरता को दूर करेंगे और मृत्यु दर को कम करेंगे।

दहेज एक सामाजिक अभिशाप

रोबिन कुमार
कार्यालय अधीक्षक
वमंकाधि /का/गुंतकल

यह घटना बिहार के मुंगेर जिले की है जहाँ एक धनी परिवार की बेटी वंदना की शादी प्रमोद कुमार नामक लड़के से होती है। शादी के बाद इनकी दो संतान हुई । बाद में वंदना की कुछ हरकतों से ससुराल वाले नाराज रहने लगे । प्रमोद को वंदना की मानसिक स्थिति खराब रहने का पता चला । धीरे-धीरे वंदना की तबीयत और बिगड़ने लगी । उसे डॉक्टर को दिखाने के लिए प्रमोद के पिता जी ने प्रमोद को पत्र लिखा । वंदना को डाक्टर के पास ले गए और कुछ समय बाद वह ठीक हो गई. वह ठीक होने के बाद भी प्रमोद ने पत्नी को उसके मायके में छोड आया। बहुत समय तक लड़का वंदना को लेने नहीं आया तो उसके पिता को शंका हुई। वंदना के पिता ने उसके ससुराल के मुखिया जी से मिलकर प्रमोद और उसके पिता, भाई, माँ के खिलाफ एफ.आई.आर दर्ज कराई । प्रमोद के पिता, भाई, माँ को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। दोनों तरफ से मुकदमा चला । अदालत ने वंदना और उसके दोनों बच्चों को जीवन यापन करने के लिए मासिक खर्च देने का आदेश दिया । किंतु प्रमोद ने ऐसा गरीबी का सबूत अदालत में पेश किया, जिससे अदालत ने पुनः सुनवाई करते हुए प्रमोद के हक में फैसला सुनाया जिससे उसकी पत्नी एवं बच्चों को मासिक खर्च से वंचित होना पड़ा । उक्त अदालत के न्यायाधीश ने दंपत्ति को बुलाकर दोनों को साथ में रहने के लिए सलाह दी । लेकिन प्रमोद ने निजी कारणों का हवाला देते हुए पत्नी को साथ रखने से मना कर दिया और कहा कि सर इसके पिता ने मेरी माँ, पिता, भाई को जेल भिजवाकर उन्हें पिटवाया। इसलिए मैं उसे अब नहीं रख सकता । कुछ दिन बाद, वंदना के पिता ने एक वृद्ध व्यक्ति से उसकी शादी करवा दी। प्रमोद ने वंदना के पुनर्विवाह की फोटो अदालत में पेश कर दिया । कुछ दिनों बाद प्रमोद को वंदना की मृत्यु के बारे में पता चला और अदालत ने प्रमोद को उस मामले में एकतरफा निर्णय दे दिया । अब प्रमोद दूसरी शादी करने के लिए कानूनी रूप से वैध था । उसने कुछ दिनों बाद पुनः विवाह कर लिया और अपने जीवन को खुशी से व्यतीत करने लगा । समाज में ऐसी कई घटनाएं घटित होती हैं जिसमें किसी लड़की की शादी एक नौकरी पेशा लड़के से की जाती है । लड़के के परिवारवाले, कभी-कभी स्वयं लड़के के कारण भी एक नव विवाहिता लड़की का जीवन टूट कर बिखर जाता है । मामला न्यायालय तक जाता है । लड़के द्वारा गलत सबूत पेश कर मामले को अपने हक में मोड़ लिया जाता है । लड़की के निःसहाय पिता बेटी की दूसरी शादी बेमेल वर से कर देते हैं । लड़का भी उक्त मामले का फायदा उठाकर दूसरी शादी कर लेता है ।

उक्त घटना से यह बात स्पष्ट होती है कि लड़की की शादी सोच- समझकर करनी चाहिए । केवल पैसे के बल पर और दूसरे के बहकावे में आकर नहीं करनी चाहिए. यदि लड़का-लड़की के बीच कोई मनमुटाव हो तो उसे आपसी सामाजिक, पारिवारिक सामंजस्य से सुलझाना चाहिए अन्यथा दहेज वह दानव है जो सब-कुछ नष्ट कर देगा । आए दिन अखबारों, दूरदर्शन में हम यह देख सकते हैं कि आज खुद को सभ्य समाज का मानव कहने वाले भी दहेज रूपी दानव के चंगुल से नहीं बच पाए हैं । दहेज के कारण न जाने कितने परिवार की बेटियों की जीवन लीला असहनीय मानसिक और शारीरिक पीड़ा के बाद समाप्त हुई है लेकिन हम सभ्य समाज के लोग अब भी बेटे और बेटियों में फर्क करते हैं । लड़के के नाम पर **शोहर गवाया** जाता है....आखिर क्यों ? क्या लड़कियाँ इसकी पात्र नहीं.... लिंग विभेद तो घर की चाहरदीवारी से शुरु होती है । अतः दहेज के कारण समाप्त होते हुए जीवन को बचाने के प्रयास हेतु उच्चत्तम न्यायालय को इस संदर्भ में विचार करते हुए धारा 498 ए में संशोधन करना चाहिए ।

मेरी पहली रेल यात्रा

एल.रवि कुमार
कनि. अनुवादक
वमंकाधि /का/गुंतकल

मेरा नाम रवि कुमार है, मेरी दादी ने मुझे बताया था कि जब मैं छोटा था तो मैंने रेल गाड़ी (ट्रैन) से यात्रा की थी लेकिन मुझे कुछ भी याद नहीं है. मैंने अपनी इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूरी करने के बाद वर्ष 2002 में पहली बार यात्रा की. मैं टी.टी.सी कोर्स के लिए आवेदन करने के लिए डोन से कर्नूल गया. मैंने डोन से टिकट लिया और गाड़ी में चढ़ गया. मैं एक खिड़की वाली सीट पर बैठकर बाहर की ओर देख रहा था. उस समय सुबह के करीब 7 बज रहे थे. सूरज की पहली किरण की आभा खिड़की से मेरे चेहरे पर पड़ रही थीं तो कभी हरे-भरे फसलों वाले खेतों से आ रही ठंडी हवा में धरती की सोंधी खुशबू मुझे बहुत अच्छी लग रही थी. इन मनोरम दृश्यों को देखते हुए मुझे समय का ध्यान ही नहीं रहा. इसी बीच कर्नूल स्टेशन आ गया. मैं गाड़ी से उतरा, स्टेशन से बाहर जाकर नाश्ता कर कॉफ़ी पी और तांड्रपाडु नामक गांव के लिए बस से चला गया. मैं वहां कॉलेज में आवेदन करने के लिए लाइन में खड़ा था. इसी बीच एक लिपिक (क्लर्क) आया और उसने आवेदन के साथ दिए जाने वाले फोटोकॉपी प्रमाणपत्रों और उन पर सत्यापन के बारे में जानकारी दिया. मेरे पास सभी फोटोकॉपी प्रमाणपत्र थे लेकिन मैंने सत्यापन नहीं कराया था. फिर मैं क्लर्क के पास गया और सत्यापन न करवाने के बारे में बताया. उन्होंने पूछा कि क्या आपके पास मूल (ओरिजिनल) प्रमाणपत्र हैं? मैंने हां कह दिया. हां कहने पर क्लर्क ने कहा कि, यहां पास में एक सरकारी डॉक्टर है तुम उनके पास जाकर फोटोकॉपी प्रमाणपत्र पर सत्यापन करा के लेकर आओ. मैंने कहा ठीक है और मैं सरकारी डॉक्टर के पास पहुंचकर सत्यापन करा लिया. कॉलेज में आवेदन देने के बाद मैं वापसी यात्रा के लिए कर्नूल स्टेशन आ गया. तब मेरे पास सिर्फ 20 रुपये ही शेष थे. मैं पहले से ही बहुत भूखा था, लेकिन चाहकर भी न कुछ खरीद कर खा सकता था और न ही रेल के टिकट कटा सकता था, क्योंकि फिर बस से अपने गॉव तक जाने के लिए किराये के पैसे कम पड़ जाते. मैं इसी उधेड़-बुन में था कि इतने में गाड़ी आ गई. मैं बिना टिकट लिए ही गाड़ी में चढ़ गया, यह सोच कर कि जो होगा ठीक ही होगा. मैं सीट पर बैठ गया लेकिन मेरा हृदय तेजी से धड़क रहा था. यह सोचकर कि कहीं टी.सी आ गया तो मैं क्या जवाब दूंगा? एक तरफ टी.सी का डर, दूसरी तरफ भूख की तीव्रता, मैं अपने सीट पर ठीक से बैठ भी नहीं पा रहा था. भूख से तो किसी तरह निपट रहा था लेकिन टी.सी का डर मेरे हृदय को प्रकंपित कर रहा था। जैसे ही मेरे मन में ये विचार चल रहे थे सहसा टी.सी मेरे डिब्बे में आ गए. मैं सहमा हुआ ,एक निर्जीव की भांति यू ही पड़ा रहा, मेरा पूरा शरीर पसीने से भीग गया था. सहसा मैं उठा और मेरे पास जो 20 रुपये थे, अपनी पैंट की गुप्त जेब में रख लिया और दरवाजे पर चला गया. टी.सी. सभी के टिकट चेक कर रहे थे. वे जितने करीब आ रहे थे मैं उतना ही अधिक तनावग्रस्त होते जा रहा था, मेरे दिल की धड़कन और तेज हो गई थी जिसे मैं स्पष्ट सुन सकता था. कुछ समय बाद टी.सी. मेरे पास से गुजरे. मुझे खुशी हुई कि चलो बला टली. थोड़ी देर बाद वे फिर से वापस आ गए और जैसा मैंने सोचा था वे आए और टिकट मांगे, मैंने उनसे कहा कि सर मेरे पास पैसे नहीं है इसलिए मैंने टिकट नहीं लिया. लेकिन उन्होंने मेरी

बात पर विश्वास नहीं किया, उन्होंने मेरी जेब टटोलते हुए कहा कि सभी छात्र हमेशा ऐसी ही कोई मनगढ़ंत कहानी सुनाते हैं. उन्हें वो 20 रुपये मिल गये. फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि पैसे होने के बावजूद तुमने टिकट क्यों नहीं लिया. उन्होंने पैसे लिए, टिकट लिखा और मेरी बात सुने बिना चले गये. मैं दरवाजे के पास बैठ कर रोने लगा, अब मैं क्या करूँ. बस के लिए किराया कहाँ से लाऊं. कुछ समय पश्चात टी.सी. पुनः आए, आकर मुझसे बोले कि दरवाजे के पास मत बैठो सीट पर जाकर बैठ जाओ. मैं रो रहा था तो उन्होंने पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो. मैंने फिर से अपनी बात बताई, फिर उन्होंने मुझे एक सीट पर बैठाया और मुझसे मेरे परिवार के बारे में पूछा, मेरे गाँव के बारे में और मेरी शिक्षा के बारे में सब कुछ पूछा और यह भी कहा कि अच्छे से पढ़ाई करो. इतने में एक वडा बेचने वाला आया तो टी.सी ने मुझसे पूछा कि तुमने कुछ खाया है, मैं चुप रहा. उन्होंने अपने पैसे से 10 रुपये का वडा खरीदकर दिया और मेरे गांव जाने का किराया भी दिया. मैं मना करता रहा लेकिन उन्होंने मेरी एक न सुनी, पैसे मेरी जेब में रख दिये और मुझे अच्छे से पढ़ाई करने को कहा और चले गये. मैंने मन ही मन उन्हें धन्यवाद कहा और अपने स्टेशन पर पहुंच कर बस में चढ़कर अपने गांव चला गया. 2009 में मुझे उसी रेलवे में नौकरी मिल गई. यात्रा के दौरान मुझे वही घटना याद आई. मैं उनकी अच्छाइयों को याद करते हुए अतीत में चला गया.

छऊ - एक शास्त्रीय नृत्य शैली

शिलाजीत साहा
कनिष्ठ अनुवादक
सवारी डिब्बा कारखाना लालागुडा

छऊ मार्शल आर्ट और लोक परंपराओं से युक्त एक अर्ध शास्त्रीय भारतीय नृत्य है। यह नृत्य परंपरागत रूप से सभी पुरुषों का समूह है, जो पूर्वी क्षेत्र में हर साल विशेष रूप से वसंत के दौरान मनाया जाता है, और इसे एक समन्वित नृत्य का रूप भी कहा जा सकता है जो शास्त्रीय नृत्यों और प्राचीन क्षेत्रीय जनजातियों की परंपराओं के मिश्रण से उभरा है। यह नृत्य विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के लोगों को उत्सव और धार्मिक भावनाओं को एक साथ जोड़ता है। इस नृत्य में मार्शल आर्ट, कलाबाज़ी और एथलेटिक्स को शामिल किया जाता है साथ ही विभिन्न पौराणिक विषयों पर प्रदर्शन किया जाता है। छऊ नर्तकों द्वारा अभिनीत कहानियों में अधिकतर हिंदू महाकाव्य जैसे रामायण और महाभारत, पुराण और अन्य भारतीय साहित्य की कहानियां हैं।

कुछ साहित्यिक विद्वानों के अनुसार छऊ शब्द संस्कृत शब्द छाया से लिया गया है, जिसका मूल अर्थ मुखौटे, छाया या चित्र है, जबकि अन्य विद्वानों का मानना है कि यह शब्द चौनी से लिया गया है जिसका अर्थ सैन्य शिविर है.

यह शैववाद, शक्तिवाद और वैष्णववाद में पाए जाने वाले धार्मिक विषयों के साथ एक संरचित नृत्य है। अलग-अलग शैलियों में वेशभूषा भिन्न होती है, पुरुलिया और सराइकेला में चरित्र की पहचान के लिए मुखौटों का उपयोग किया जाता है.

पुरुलिया छऊ नृत्य सूर्य उत्सव के दौरान मनाया जाता है। पुरुलिया छऊ और मयूरभंज छऊ के बीच मुख्य अंतर मुखौटे के उपयोग में है। पुरुलिया छऊ नृत्य में मुखौटों का उपयोग होता है, लेकिन मयूरभंज छऊ में मुखौटे नहीं होते हैं.

परंपरागत रूप से, छऊ नृत्य मार्च महीने में आयोजित किया जाता है जब एक कृषि चक्र समाप्त होता है और एक नया चक्र शुरू होता है। पुरुलिया छऊ नर्तक मिट्टी और नाटकीय मुखौटा पहनते हैं जो पौराणिक पात्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मिट्टी से मुखौटे की आकृति बनाने के बाद उसे रंगकर शोला व अन्य चीजों से सजाया जाता है। पुरुलिया का छऊ मुखौटा भौगोलिक संकेतों के तहत पंजीकृत है। पुरुलिया छऊ के मूल अंतर के रूप में मुखौटा अद्वितीय और पारंपरिक है.

परंपरागत रूप से, छऊ नृत्य मार्च महीने में आयोजित किया जाता है जब एक कृषि चक्र समाप्त होता है और एक नया चक्र शुरू होता है। पुरुलिया छऊ नर्तक मिट्टी और नाटकीय मुखौटा पहनते हैं जो पौराणिक पात्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मिट्टी से मुखौटे की आकृति बनाने के बाद उसे रंगकर शोला व अन्य चीजों से सजाया जाता है। पुरुलिया का छऊ मुखौटा भौगोलिक संकेतों के तहत पंजीकृत है। पुरुलिया छऊ के मूल अंतर के रूप में मुखौटा अद्वितीय और पारंपरिक है.

पुरुलिया छऊ में निभाए जा रहे चरित्र के आकार के व्यापक मुखौटों का उपयोग किया जाता है; उदाहरणस्वरुप , एक शेर के पात्र के चेहरे पर शेर का मुखौटा होता है और शारीरिक वेशभूषा भी वही होती है और अभिनेता चारों पैरों पर चलता है। ये मुखौटे कुम्हारों द्वारा तैयार किए जाते हैं जो

हिंदू देवी-देवताओं की मिट्टी की छवियां बनाते हैं और इन्हें मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले से प्राप्त किया जाता है.

पुरुलिया छऊ नृत्य यूनेस्को की विश्व धरोहर नृत्यों की सूची में सूचीबद्ध है। 2017 में भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी स्टाम्प, में पश्चिम बंगाल के छऊ का मुखौटा दर्शाया गया और इस नृत्य को स्वीकृति भी मिली।

कलिंग के गजपति के शासन काल में सराइकेला छाऊ का विकास सराइकेला नामक स्थान में हुआ। वर्तमान में सराइकेला खरसावां जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है। सराइकेला छऊ की तकनीक और प्रदर्शनों की सूची इस क्षेत्र के पूर्ववर्ती कुलीनों द्वारा विकसित की गई थी, जो इसके कलाकार और कोरियोग्राफर दोनों थे, और आधुनिक युग में सभी पृष्ठभूमि के लोग इसका नृत्य करते हैं। सराइकेला छऊ को प्रतीकात्मक मुखौटों के साथ प्रदर्शित किया जाता है, और अभिनय के माध्यम से उसी भूमिका को स्थापित की जाती है.

वहीं मयूरभंज में छऊ का प्रदर्शन बिना मुखौटे के किया जाता है और तकनीकी रूप से यह सराइकेला छऊ के समान है.

पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में पुरुलिया छऊ और मयूरभंज जिले में मयूरभंज छऊ, ओडिशा के सराइकेला जिले के सरायकेला छाऊ इन तीनों उपशैलियों में सबसे प्रमुख अंतर मुखौटे के उपयोग से है। जबकि, छऊ की सराइकेला और पुरुलिया उपजातियाँ नृत्य के दौरान मुखौटों का उपयोग करती हैं, मयूरभंज छऊ किसी भी मुखौटे का उपयोग नहीं करती हैं जिसमे शरीर की गतिविधियों और हावभाव के साथ चेहरे की अभिव्यक्ति जुड़ी रहती है.

ये छऊ मुखौटे सूत्रधार समुदाय के कलाकारों द्वारा बनाए जाते हैं। मुखौटे का निर्माण विभिन्न चरणों से होकर गुजरता है। मिट्टी के सांचे पर महीन राख का पाउडर छिड़कने से पहले नरम कागज की 8-10 परतों को पतले गोंद में डुबाकर सांचे पर एक के बाद एक चिपकाया जाता है। चेहरे की विशेषताएं मिट्टी से बनी हैं. मिट्टी और कपड़े की एक विशेष परत लगाई जाती है और फिर मुखौटे को धूप में सुखाया जाता है। इसके पश्चात, सांचे को पॉलिश किया जाता है और कपड़े और कागज की परतों को सांचे से अलग करने से पहले धूप में सुखाने का दूसरा दौर किया जाता है। नाक और आंखों के लिए छेदों की फिनिशिंग और ड्रिलिंग के बाद, मुखौटे को रंगा जाता है और सजाया जाता है.

यह विभिन्न सामाजिक तथ्यों और जातीय पृष्ठभूमि के लोगों को विविध सामाजिक प्रथाओं, मान्यताओं, व्यवसायों और भाषाओं के साथ एक साथ बांधता है। इसमें वह है जो भारत में किसी अन्य

नृत्य शैली में नहीं है - एक वाक्पटु, अभिव्यंजक नृत्य शब्दावली जो केवल पैरों और धड़ का उपयोग करते हैं। पशु, पक्षी, आत्माएं, दिव्य प्राणी और महिलाएं जो अपना दिन गुजार रही हैं - सभी इस अतिरिक्त, उत्तम रूप में जीवंत हो उठते हैं। यहां कोई हाथ के इशारे नहीं हैं, कोई चेहरे का अभिनय नहीं है, यहां तक कि गीत भी नहीं हैं, केवल शुद्ध शारीरिक काम है.

भरतनाट्यम और कथक जैसे भारत के अधिक स्थापित नृत्य रूपों के पीछे छऊ नृत्य की सुंदरता और विशिष्टता को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। छऊ कलाकार महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कहानियाँ बताने और आने वाली पीढ़ियों के लिए परंपरा को जीवित रखने का प्रयास करते हैं। इसमें वास्तव में विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ और तकनीकें हैं, जो बहुत समृद्ध और विविध हैं और इसमें महारत हासिल करने के लिए कई वर्षों लगते हैं.

विडम्बना यही है की बहुत से लोग इसे ठीक से नहीं समझते या इसकी कद्र नहीं करते ।हालाँकि पहले इस नृत्य में पारंपरिक रूप से केवल पुरुष मंडली शामिल होते हैं, लेकिन महिलाओं ने भी खुद को कुशल कलाकार के रूप में स्थापित करना शुरू कर दिया है.

ये सामाजिक वस्तुएं और छोटे शहरों की भारतीय परंपराओं का प्रतिबिंब हैं जो पीढ़ियों से चली आ रही प्रथाओं को दर्शाती है जैसे कि कैसे मछुआरे समुद्र में जाते हैं और मछली पकड़ते हैं या किसान फसल के मौसम के दौरान फसलों की खेती कैसे करते हैं। कुछ प्राचीन परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जैसे कि पत्नी-चयन समारोह या अपनी मंगेतर को जीतने के लिए पुरुष का असाधारण विवाह नृत्य। आज के सूचना प्रौद्योगिकी के युग में भी छऊ नृत्य के माध्यम से ये प्रथाएं भी जीवित है.

भारत सरकर को कला के इस धरोहर को बचाने के लिए कलाकारों को प्रेरित करते रहना चाहिए जिससे यह कला लुप्त न हो जाए और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत कायम रहे.

टिकट मैसेज

बी. राजेश
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर
सवारी डिब्बा कारखाना, लालागुडा

आज मैं आपके साथ मेरी एक रेल यात्रा से जुड़े वृतांत का अनुभव साझा कर रहा हूं। पिछले साल दिसंबर की बात है। उस दौरान मुझे रेल टिकट के साथ कुछ कड़वे अनुभव का स्वाद चखना पड़ा।

मैने, गाड़ी संख्या 17016, विशाखा एक्सप्रेस में सिकंदराबाद से विशाखापट्टनम तक तृतीय वातानुकूलित यान में 22 दिसंबर 2023 के लिए आरक्षण ऑन लाइन के माध्यम से करवाया और उस समय प्रतीक्षा सूची सं. 39 और 40 था।

22 दिसंबर 2023 को गाड़ी रवाना होने से पूर्व दोपहर 1:00 बजे मेरे फोन पर एक मैसेज आया जिसे खोल कर देखा तो मेरा टिकट बी3 कोच के सीट सं.7 और 8 में कंफर्म हो गया. कंफर्म टिकटों का मैसेज देखकर मैं फूले न समाया. मै बहुत खुश था और गाड़ी शाम 16:50 की थी. मैं अपनी धर्मपत्नी के साथ खुशी-खुशी सिकंदराबाद स्टेशन पर शाम 16:30 बजे तक पहुंच गया।

हम दोनों, बी 3 के सीट संख्या 7 और 8 के पास पहुंचकर सामान रख कर बैठने की तैयारी कर ही रहे थे कि एक महाशय आ धमके. उस महाशय ने हमारे पास आ कर बताया कि यह सीट नंबर 7 और 8 उनके नाम पर बुक हैं और हमें वहां से उठ जाने के लिए कहा.

उनकी इस बात को सुनकर मैं हैरान था, पर अपने आप को रोकते हुए मैंने उनसे कहा, महाशय यह मेरी फोन पर आया हुआ मैसेज देखिए, इसमें क्या लिखा है. उन्होंने मेरे हाथ से फोन लेते हुए उस मैसेज को मन ही मन पढ़ा और कहा महाशय यह आरक्षण तो आज ही के दिन का है पर इसमें गाड़ी संख्या कुछ और है. यह आरक्षण इस गाड़ी सं. 17016 के लिए नहीं अपितु गाड़ी संख्या 12704 के लिए है.

यह सुनते ही और मैसेज पढ़ते ही मेरे तो होश ही उड़ गए, कयोंकि मेरा टिकट विशाखा एक्सप्रेस के बदले फलकनुमा एक्सप्रेस में कंफर्म हुआ था । जबकि फलकनामा एक्सप्रेस गाड़ी सिकंदराबाद स्टेशन से आधे घंटे पहले, अर्थात शाम 15:55 पर निकल चुकी थी जिसे पकड़ना मेरे लिए अब असंभव था. शायद मैने ऑन लाइन बुकिंग के दौरान अन्य गाड़ी का विकल्प दिया होगा.

असल में मेरी सीटों का आरक्षण विशाखा एक्सप्रेस से बदलकर फलकनामा एक्सप्रेस में रेल विभाग द्वारा बदल दी गई. साथ ही मेरा पीएनआर संख्या को बदलकर सीटों को प्रतीक्षा सूची से कंफर्म कर दिया और इसका मैसेज मेरे फोन नंबर पर कर दिया गया, जिसे तब मैंने ध्यान से नहीं देखा. उस मैसेज को शुरू से न पढ़कर, सीटें कंफर्म होने की खुशी में पूरी मैसेज को अति आत्मविश्वास के कारण, ध्यान से नहीं पढा, जिससे मैंने और मेरी धर्मपत्नी ने फलकनुमा एक्सप्रेस के कंफर्म सीटों को खो दिया साथ ही साथ विशाखा एक्सप्रेस में भी यात्रा न कर सके।

भगवान की कृपा मानिए कि, उसी शाम 20:00 बजे कटक जाने वाली अवकाश स्पेशल गाड़ी में दो सीटें स्लीपर क्लास में तत्काल कोटा के तहत मिल गई। मेरे अति आत्मविश्वास के कारण हम दोनों पति-पत्नी अगले दिन सुबह 8:00 बजे के बदले दोपहर 14:00 बजे विशाखापट्टनम पहुंचे।

रेल विभाग द्वारा टिकट का पी एन आर बदलकर गाड़ी संख्या भी बदल दी गई और सीटों को कंफर्म कर दिया पर मेरे उस मैसेज जिसमें इस परिवर्तन का उल्लेख है उसे सही ढंग से न पढ़ने के कारण मुझे और मेरी पत्नी को अत्यधिक मानसिक एवं शारीरिक पीडा उठानी पड़ी, जो हमें हमेशा याद रहेगा।

आप रेल विभाग द्वारा भेजे गए मैसेज को ध्यान से पढें और विशेष कर प्रतीक्षा सूची वाले टिकटों को ध्यानपूर्वक देखें।

तमस

अभिषेक सिंह
सहायक /विद्युत विभाग
सवारी डिब्बा कारखाना, लालागुडा

भीष्म साहनी जी का जन्म 8 अगस्त 1915 को रावलपिंडी पाकिस्तान तत्कालीन अखंड भारत में हुआ था। इनका निधन 11 जुलाई 2003 को दिल्ली यानी आज़ाद भारत में हुआ था। उन्होंने ग़ुलामी से आज़ादी तक का सफ़र सीमावर्ती इलाकों में रहकर कर देखा भी था और झेला भी। जिसकी झलक "तमस"उपन्यास में साफ़ दिखाई पड़ती है। इनकी पहली कहानी इंटर कॉलेज की पत्रिका में तथा दूसरी कहानी 'नीली' आँखें 'हंस' में छपी। उन्होंने 'कबिरा खड़ा बाज़ार में', 'मुआवज़े' जैसे प्रसिद्ध नाटक लिखे हैं। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार जैसे कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। साहित्य में इनके योगदान को देखते हुए उन्हें भारत सरकार द्वारा 1998 में 'पद्म-भूषण' से सम्मानित किया गया।

इसके लेखर भीष्म साहनी जी ने तमस का अर्थ अज्ञानता या समाज में व्याप्त अंधकार से है। इनकी भाषा हिन्दी है। इनके द्वारा चयनित शब्द सरल और सहज होते हैं। घटनाएँ भी आम जीवन पर आधारित होती हैं। "तमस" उपन्यास में कवि संप्रदायिक वैमनस्य को प्रस्तुत किया है। लेखक ने इस उपन्यास में विभाजन के समय के अप्रैल 1947 के पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्र के कुल 5 दिनों के घटनाक्रम का वर्णन किया है। उस समय हो रहे सांप्रदायिक दंगों का जीवंत चित्र प्रस्तुत किया है। लेखक ने तमस माध्यम से अज्ञानता के उस अंधकार की बात की है जहाँ व्यक्ति अपने मानवीय मूल्यों को भूलकर अनुचित कार्य करने पर उतारू हो जाता है। अज्ञानतावश एक-दूसरे धर्म के लोगों को जान से मारने को उतारू हो जाते हैं। लेखक ने कुछ ऐसे उदाहरण भी प्रस्तुत किए हैं जहाँ कुछ लोग धार्मिक मतभेद भुलाकर एक-दूसरे की मदद भी करते हैं, लेकिन तमस की एक ऐसी आँधी चलती है जहाँ ऐसे दीपक बुझ ही जाते हैं। लेखक ने पहली पंक्ति में ही स्पष्ट कर दिया है कि जब हवा का झोंका आता है तो दीपक बुझ जाता है। दीपक के लौ से धुआँ निकल कर छत को काला कर देता है। यह अंधकार हमारे समाज में भी व्याप्त है। पहली पंक्ति में लेखक ने पूरा भाव स्पष्ट कर दिया है। जब अज्ञानता का अंधकार हमारे दिमाग़ पर हावी होने लगता है तब ज्ञान रूपी दीपक को बुझाकर हमारे पूरे समाज को अंधकारमय बना देता है। तमस के माध्यम से सांप्रदायिकता का ऐसा चित्र प्रस्तुत किया है। जिसे पढ़कर नि:संदेह ही मन कुंठित हो जाता है। अतः लेखक ने इस उपन्यास का शीर्षक "तमस" रखा है, जो प्रासंगिक भी है।

नत्थू, बक्शी जी, मास्टर रामदास, मेहता जी, अजीतसिंह, रिचर्ड(अंग्रेज उच्चायुक्त), लिजा, मौला दाद, मुराद अली आदि इसके पात्र हैं. शुरुआत होता है नत्थू से जो चमार जाति का था। वह चमड़े की रंगाई सिलाई का काम करता था। मुराद अली नामक अंग्रेज के चमचे द्वारा दवा बनाने के नाम पर सुअर चमड़े की माँग करता है। नत्थू के मना करने पर जेब में 5 रुपये रख कर चला जाता है और दूसरे दिन वही सुअर का चमड़ा मस्जिद की सीढ़ियों पर मिलता है। मुसलमान आक्रोशित हो जाते हैं तभी बक्शी जी कुछ कांग्रेस कार्यकर्ता के साथ जाकर मस्जिद से सुअर को हटाकर छिपा देते हैं। उसी दिन एक गौ हत्या की ख़बर ने आग में घी डालने का काम किया। तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए बख्शी जी कुछ समाजसेवियों के साथ अंग्रेज उच्चायुक्त रिचर्ड से मिलकर शांति बहाल करने के लिए कर्फ़्यू लगाने की माँग करते हैं। वे भूल जाते हैं कि फूट डालने वाले कभी दंगे शांत करा सकते हैं क्या?

अंग्रेजों से कोई मदद नहीं मिलती है इधर दंगा विकराल रूप धारण कर लेता है। 117 गाँव जला दिए जाते हैं। कहीं हिंदू तो कहीं मुसलमानों की लाशें दिखाई देती हैं। चारों तरफ़ डर का माहौल

छा जाता है। जिस मंदिर के हर-हर महादेव, मस्जिद के अल्ला हो अकबर, गुरूद्वारे के जो बोले सो निहाल के नारों से शरीर में ऊर्जा का संचार होना चाहिए था, परंतु आज इन नारों से शरीर भय उत्पन्न हो उठता था। इंसानियत भी शर्मसार हो जाती है जब बलात्कार की घटनाओं को अंजाम दिया जाता है। कई सिख स्त्रियाँ तो अपनी आबरू बचाने के लिए कुएँ में कूद कर आत्महत्या कर लेती हैं। ऐसी घटनाओं को अंजाम देने वाले दरिंदों के लिए कोई भी सज़ा कम है। दरिंदा है अगर आज़ाद तो अपमान सबका है, लूटी अगर एक बेटी तो लुटा सम्मान सबका है। बनो इन्सान पहले छोड़कर तुम बात मज़हब की लड़ो मिलकर दरिंदों से ये हिन्दुस्तान सबका है।

कई गांव-शहर तबाह हो जाते हैं। अंत में अंग्रेज द्वारा हस्तक्षेप जाता है और कर्फ़्यू लगाया जाता है। जल्द ही स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने यह साफ़ दर्शाया है कि कैसे अंग्रेजों ने इस तमस का भरपूर फ़ायदा उठाया, तभी तो जब हमें एक होकर अंग्रेजों के ख़िलाफ़ लड़ना था देश की आज़ादी के लिए, तब हम इस क़दर तमस का शिकार हो गए हैं कि हमें उन्ही से मदद की गुहार लगानी पड़ती है। दंगों के तत्कालिक कारण अगर सुअर और गौ हत्या था तो क्या यह सुअर और गाय को मालूम था कि वह किस धर्म के हैं। गीता, क़ुरान, बाइबिल, गुरुग्रंथ साहिब पढ़ने के बाद भी मुझे मालूम नहीं पड़ा वह कौन सा धर्म था जो इस अनुचित कार्य को भी सही ठहराता हो। असल बात तो ये हैं कि कोई भी धर्म या मज़हब आपस में बैर करना नहीं सिखाता ।

मैं हिंदू हूँ तुम मुस्लिम हो, हैं दोनों इंसान।
ले तू मेरा गीता पढ़, ला दे मैं पढ़लू तेरा क़ुरआन॥
अपना तो भई बस यही है अरमान,
एक ही थाली में खाए, पूरा हिन्दुस्तान॥

परंतु दुःख की बात है कि इसी अज्ञानता के कारण 'सोने की चिड़िया' कहा जाने वाला हमारे देश के इतिहास के पन्नों को पलटने पर पता चलता है कि हमारा देश हमेशा से विदेशी आक्रमण और ग़ुलामी झेलता रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अब हम इस उम्मीद में थे कि भारत की मज़बूत लोकतांत्रिक व्यवस्था से धर्मवाद, क्षेत्रवाद और जातिवाद का ख़ात्मा हो जाएगा परंतु आज तो यह न सिर्फ़ सामाजिक व्यवस्था में वरन् राजनीति व्यवस्था में इस क़दर छाया हुआ है कि आज इससे पूरे देश की एकता और अखंडता प्रभावित हो रही है। आज जब कोई व्यक्ति सांप्रदायिक तनाव बढ़ाने वाले संदेशों को फ़ेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, ट्विटर के माध्यम से प्रसारित करता है तब उसे यह उपन्यास पढ़ने की ज़रूरत है। नि:संदेह जब वह इसके भयावह परिणामों को देखेगा तो वह व्यक्ति कभी 'तमस' का शिकार नहीं होगा। इस उपन्यास की इसी प्रासंगिकता को देखते हुए टीवी पर धारावाहिक के रूप में इसे दूरदर्शन पर दो बार प्रसारित किया गया। आज सांप्रदायिकता में हम लोगो ने रंगों को भी इस क़दर बाँट रखा है कि तिरंगे का रंग तो धूमिल हो गया है। वसुधैव कुटुम्बकम की शिक्षा देकर विश्व गुरु बना हमारा देश आज इसी सम्प्रदायिक तमस के कारण नहीं है विश्व पटल पर पिछड़ गया है। आज ज़रूरत है तो धार्मिक स्थानों पर अंतर्धार्मिक आवागमन बढ़ाने की। कम से कम जाकर समझें तो जुम्मा के ख़िदमे में क्या बात सिखायी जाती है? मंदिरों में 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' मन्त्र उच्चारण का अर्थ क्या है। तभी आपसी प्रेम बढ़ेगा वरना यह ग़लत फ़हमी राष्ट्र निर्माण में बाधा बनी रहेगी।

इस उपन्यास के माध्यम से भीष्म साहनी जी ने बढ़ाया है एक क़दम।
अब हमारी बारी है एक साथ मिल कर बोले वंदे मातरम, वंदे मातरम्, वंदे मातरम॥

इक तेरे बाद ...

श्री मो. रुहुलअमीन
कार्यालय अधीक्षक
क्षे.रे.प्र.सं./ मौलाअली

दर तो खुले थे उनके दिल के सभी,
इक हम ही थे जो दिल में समां न सके
अपने ही जहां में कुछ खोए थे ऐसे
कि निकल कर जहां से हम आ न सके
दर तो खुले थे उनके दिल . . . .

जब दिल पे लगे हों, यादों के मेले
फिर कैसे कोई धड़कन से खेले
सामने थे उजाले जिंदगी के मगर
हम दिल का अंधेरा मिटा न सके
दर तो खुले थे उनके दिल . . . .

जिंदगी है खफा, कुछ मेरे करम से
नहीं जीने की चाह, क्या कहते सनम से
माना मिल जाता तन्हाइयों को सहारा
पर हाले - दिल उनको सुना न सके
दर तो खुले थे उनके दिल . . . .

होते न मजबूर हम दिल से अगर
पीते न दर्दे - उल्फत का ये ज़हर
समझते वो भी हाले दिल हमारा
पर राजे - दिल उनको बता न सके
दर तो खुले थे उनके दिल . . . .

थे इरादे संग साथ चलने के कभी
पल में चूर – चूर हो गए सभी
हसरतों का क्या है, मचल जाते कभी भी,
पर किसी से कभी फिर दिल लगा न सके
दर तो खुले थे उनके दिल . . . .

जीवन की समस्याओं से कैसे निपटें

आर.वी. हनुमंत प्रसाद
वरिष्ठ अनुदेशक/वाणिज्यिक
क्षे.रे.प्र.सं./मौलाअली

जब आप जीवन में समस्याओं से जूझ रहे होते हैं, तो ऐसा लगता है कि आप अकेले ही मुश्किलों के दौर से गुज़र रहे हैं. किंतु, ऐसा नहीं हैं. जीवन में सुख-दुख, आधि-व्याधि, अच्छा – बुरा आदि लगा ही रहता है और व्यक्ति को इनका सामना करना ही पड़ता है, भले ही वे आपको तोड़ें या फिर आप उन पर विजय प्राप्त करके उन्हें पीछे छोड़ें. समस्याओं का जुड़ाव शारीरिक, मानसिक, वित्तीय, सामाजिक, भावनात्मक इत्यादि हो सकता है, किंतु इनका प्रभाव व्यक्ति के मन-मस्तिष्क पर ही पड़ता है और इनका सामना किए बिना हार मान लेना ठीक नहीं है. ऐसे में एक बड़ी प्रसिद्ध कहावत है – जो लड़ता है, वह कभी नहीं हारता, वह या तो जीतता है या फिर सीखता है. अतः, समस्याओं का जीवन में होना एक आम बात हैं, किंतु उनका सामना किए बिना हार मान लेना उचित नहीं है. आइए, कुछेक समस्याओं की प्रवृतियों और उनके समाधान खोजने का प्रयास करते हैं -

1. वित्तीय समस्याएं और समाधान

जीवन में वित्तीय संकट कभी भी आ सकते हैं. हालाँकि आपको हमेशा अपनी वित्तीय स्थिति का आकलन करते रहना चाहिए और यदा-कदा आनेवाली वित्तीय संकटों से जुझने के लिए तैयार भी रहना चाहिए. कई बार ये अचानक आ घेरती है या कभी यह आपकी वर्षों में जोड़ी गई पूंजी पर भारी भी पड़ जाती हैं या यूं कहें कि कई बार यह संकट आपके द्वारा वर्षों के की गई तैयारी से कहीं अधिक बड़ी हो सकती है. ऐसे संकटों से आपकी आजीविका प्रभावित होती है और अंततः आप वित्तीय संकट की चपेट में आ जाते हैं.

ऐसे वित्तीय संकट से उबरने के लिए सबसे पहले अपने वित्त प्रबंधन को ठीक से देखें, समझें और फिर अपनी वित्तीय प्राथमिकताओं को सही तरीके से निर्धारित करके यह जानें कि किन - किन वित्तीय आवश्यकताओं में कैसी-कैसी कटौतियां करके आप इस संकट को कम या पूरी तरह खत्म कर सकते हैं. तदनुसार, अपने खर्चों को कम करें और एक निर्धारित समय-सीमा तैयार करें कि वह वित्तीय संकट पूरी तरह समाप्त हो जाए. यदि तब भी काम न बने तो आप रिश्तेदारों या बैंक से ऋण लेकर भी अपने वित्तीय संकट को दूर कर सकते हैं, किंतु इस ऋण को चुकाना भी आपका उत्तरदायित्व हो जाता है, जिसे आप समय-समय पर आंशिक रूप से पूरा कर सकते हैं

2. पारिवारिक व सामाजिक समस्याएं और समाधान -

प्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक अरस्तु ने कहा है कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है और समाज के बीच रहकर ही उसे व्यक्ति विशेष से उठकर सामाजिक भूमिका भी निभानी पड़ती है. समाज का संबंध हमारे घर-परिवार से सीधा जुड़ा रहता है. ऐसे में यह भी संभव है कि हमारी व्यैक्तिक या पारिवारिक समस्या कहीं न कहीं समाज से भी जुड़ी हो, भले ही वह घर – घर में होनेवाले आपसी रिश्तों में खट-पट, पढ़ाई-लिखाई, नौकरी, शादी-विवाह आदि हो. जब तक हम अपने घर तक सीमित हैं, हमारी सामाजिक भूमिका अक्सर निमित्त मात्र होती है, किंतु जब हम बाहरी जीवन में शामिल होते हैं, तो हमारी समस्या सामाजिक हो जाती है और कई बार यह विकराल रूप भी ले लेती है.

जहां चार बर्तन होंगे, वहां खट-पट तो होगी ही, यही बात घर – परिवार, समाज पर भी लागू होती है. पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं से निपटने का सबसे आसान और बेहतर तरीका है – आपसी मत-भेद को मिटाकर, प्रेम व सद्भाव से, एक-दूसरे के प्रति आदर प्रकट करके, साथ बैठकर दोनों पक्षों में बेहतर संवाद स्थापित कर, समस्याओं की गहराइयों में जाकर पूर्ण हल खोजकर समस्याओं का

पूर्ण समाधान. यदि समस्या मानसिक हो, तो घर के बड़े-बुजुर्ग या फिर मनोचिकित्सक को दिखाकर मानसिक संतुलन को सुव्यवस्थित किया जा सकता है, अच्छी किताबें पढ़ सकते हैं, जो संबंधित चुनौतियों को संबोधित करती हों.

पति-पत्नी की पारिवारिक समस्याओं का एक अंतिम समाधान यह भी है कि यदि समाधान के सभी विकल्प बंद हो गए हों, तो बेहतर है उस रिश्ते को सकारात्मक सोच के साथ सदा के लिए समाप्त कर दें, सभी पहलुओं पर आपस में सोच-विचार करके अलग हो जाएं और अलग होने के बाद एक – दूसरे के प्रति कोई वैमनस्य-भाव न रखें. हालांकि, यह कुछ समय तक अलगाव आपको झकझोर कर रखेगा, किंतु समस्या के साथ जीते रहने से बेहतर यही होगा कि आप एक ठोस निर्णय लेकर सुखमय भविष्य के लिए कांटोभरा रास्ता चुन लें.

सामाजिक समस्याओं से निपटते समय हमारा दृष्टिकोण भी बदल जाता है. यदि व्यक्ति विशेष सामाजिक समस्या से सीधे जुड़ा हो, तो संभवतः वह अपनी शान को सामने रखकर अपना पक्ष ऊपर रखेगा, यही बात सामनेवाले पक्ष पर भी निर्भर करती है. कई बार दोनों पक्ष अपनी बात पर अड़ जाते हैं. अतः, थोड़ा झुककर, आपसी मतभेद भुलाकर और सामंजस्य बिठाकर ही ऐसी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है.

3. कार्यस्थल की समस्याएं और समाधान -

कार्यस्थल पर हम कर्तव्यनिष्ठा से वो सेवाएं देते हैं, जिसके लिए हमें वहां पर रखा गया है. वहां पर कर्मचारियों में कार्य के प्रति, पदोन्नति के प्रति,आपसी - प्रतिस्पर्धा या किसी भी अन्य कारण से बैर होना स्वाभाविक है, जो कार्यालय में अनावश्यक तनाव पैदा करके हमारी उत्पादकता को कम कर सकता है. चूंकि, आमतौर पर कार्यस्थल हमारा स्थायी ठिकाना नहीं होता है और यहां होनेवाली सभी समस्याओं का मूल कारण हमारे द्वारा किए जानेवाला काम ही होता है.

अतः, कार्यालय में आनेवाली किसी भी समस्या को सबसे पहले पेशेवर तरीके से सुलझाने का प्रयास करना चाहिए. ऐसे में हमें नरमी और समझदारी से काम लेना होता है, क्योंकि वहां सारे हमारे सहकर्मी ही होते हैं और किसी भी व्यक्तिगत टकराव से बचने का प्रयास करना चाहिए. यदि समस्या अधिक गंभीर न हो, तो जिस सहकर्मी से मन-मुटाव हो, उसे चाय - कॉफी पर आमंत्रित करके उसके दृष्टिकोण को समझने का प्रयास भी कर सकते हैं. यह आपको उनके स्तर पर उनसे जुड़ने में मदद करेगा और हो सकता है कि आप दोनों एक – दूसरे को बेहतर ढंग से समझकर भविष्य में होनेवाली ऐसी समस्याओं से भी बच जाएं. कार्यालय में अनावश्यक मामलों से अक्सर दूर ही रहें और जो विषय आपसे संबंधित न हो, उस विषय में दिलचस्पी न दिखाकर आप अनावश्यक समस्याओं से बच सकते हैं.

4. जीवन में असफल होने पर समस्याएं और समाधान -

जीवन की समस्याओं में से एक समस्या असफलता भी है. यह जीवन में निराशा ला सकती है और प्रगति की गति को धीमा कर सकती है. चूंकि, आपकी प्रत्येक क्रिया की एक प्रतिक्रिया होती ही है, तो संभव है कि आपके द्वारा किया गया हर काम सफल न भी हो और उससे आप में दुख, चिंता, निराशा घर कर सकती है. कई बार व्यक्ति बार – बार असफल होने पर हताश हो जाता है और वह प्रगति-पथ पर चलने से ही कतराने लगता है.

असफलता की समस्या से उबरने का समाधान है कि हम सफलता के मूल मंत्र को जानें, जो है – निरंतर प्रयास करते रहना. हमें अपने मन में यह बात गांठ बांध लेनी है कि भले ही मैं इस प्रयास में असफल रहा, किंतु मेरा अगला प्रयास इस प्रयास की तुलना में और अधिक प्रबल होगा. सफल बनने के लिए आप प्रेरणादायक, बेहतर पुस्तकें पढ़ सकते हैं, जीवन को प्रेरित करनेवाली फिल्में देख सकते हैं,

किसी असफल व्यक्ति से भी पूछ सकते हैं कि उसकी मेहनत में क्या कमी रह गई थी. आप उन सभी कारणों का पता लगाएं कि वे कौन से कारक थे, जो आपको विफल कर रहे थे. उन सभी बातों को जानने के बाद आप एक नई ऊर्जा से पुनः प्रयास करें और निश्चय ही आप अपने प्रयासों में अवश्य सफल होंगे.

5. अवसाद ग्रस्त होना और समाधान -

जीवन है तो सुख – दुख लगा ही रहेगा. व्यक्ति का स्वभाव है – सुख को तो भूल जाता है किंतु दुख को बरसों याद रखता है. भले ही वह दुख हमें अपने परिवार, कार्यालय, स्कूल के मास्टर, वैवाहिक जीवन या राह चलते किसी अंजान से मिला हो. दुखी होने पर हमारा मन निराश होकर उसी एक दुख पर केंद्रित हो जाता है, हम उसके आगे का जीवन नहीं देख पाते और कई बार तो अत्यधिक निराशा का शिकार बन जाते हैं, जिसे डिप्रेशन आम भाषा में अवसाद कहते हैं, का शिकार हो जाते हैं.

किसी भी दुख का एकमात्र व सबसे सरल समाधान होता है, वह वस्तु पा जाना या वह काम हो जाना, जिसके लिए हम दुखी हैं. किंतु ऐसा होना अक्सर संभव नहीं होता है. ऐसे में, सबसे पहले हमें अपने सगे – संबंधी या अच्छे मित्र, जो हमारी भावना की कद्र करते हों, के साथ अपना दुख साझा करना चाहिए. इससे हमें भावनात्मक बल मिलता है और संभवतः दुख से उबरने या समस्या का हल भी मिल सकता है. यदि आपका ऐसा कोई सगा-संबंधी न हो, तो एकांत में जाकर अपनी पूरी कथा-व्यथा पर सकारात्मक सोच से स्थिति का आकलन करना चाहिए और अपनी समस्या का समाधान तलाश करना चाहिए. अवसाद में डूबकर पुरानी बातों पर रोने की बजाय समस्याओं के हल तलाश करना ही आपको जीवन में प्रवृत करेगा. अक्सर देखा जाता है कि व्यक्ति अकेला पड़कर अवसाद से घिर जाता है. ऐसे में प्रयास यह करना चाहिए कि अपने आप को अपने दैनिक जीवन में व्यस्त रखें, उन सभी प्राथमिकताओं को कागज पर लिखें और एक – एक करके वे सारे काम पूरा करें, जो आपके दुखी होने के कारण छूट गए थे या अधूरे रह गए थे. ऐसे समय में आप अपने अधूरे कामों को पूरा करके एक बेहतर परिणाम दे पाएं, तो यह आपके लिए पुनर्जन्म के समान ही होगा.

आप दुख से उबरने के लिए अपने आप को किसी सामाजिक उपकार की तरफ भी मोड़ सकते हैं, किसी वृद्धाश्रम, किसी अनाथालय, किसी गरीब, लाचार की सेवा करके भी आप अपने दुख के क्षणों को जीवन के बेहतरीन पल बना सकते हैं. यह आपमें सकारात्मक चेतना भरेंगे और आपके द्वारा दूसरों के लिए किए कार्य आपमें अत्यंत प्रसन्नता का भाव भरेंगे और आप जीवन जीने के लिए पुनः तैयार हो जाएंगे.

यदि आप अत्यंत भावुक व्यक्ति हैं तो एक बेहतर समाधान यह हो सकता है कि आप अपनी लेखनी से सृजनात्मकता का परिचय देकर कुछ उपयोगी लिख सकें, जिसे आप किसी और के साथ साझा न कर पाए हों, इससे आपको निश्चय ही राहत मिलेगी.

6. स्वास्थ्य समस्याएं और समाधान -

स्वास्थ्य संकट एक बड़ी समस्या है, जो आप या आपके परिजनों के जीवन में कभी भी आ सकती है. इससे निपटने के लिए यह जानना – समझना जरूरी है कि हमारा शरीर चौबीसों घंटे काम करता रहता है, यहाँ तक कि जब हम सो रहे होते हैं, तब भी. यदि आप स्वास्थ्य संबंधी आदतों का नियमित ख्याल नहीं रखते हैं, तो संभव है, आपके स्वास्थ्य में गिरावट आएगी और यदि आप समय रहते इस पर ध्यान नहीं देते हैं, बहुत जल्द ही स्थिति गंभीर हो सकती है. अतः, आवश्यक है कि आप अपनी जीवन-शैली में बदलाव करें. बाहरी जंक फूड न खाएं, स्वच्छ, पौष्टिक और ताजा खाना खाएं, प्रतिदिन व्यायाम अवश्य करें, शुद्ध हवा में सांस लें, कुछ देर धूप में अवश्य बैठें, अपने इष्ट मित्रों – परिजनों के साथ खुल कर बात करें.

7. अन्य समस्याएं और समाधान –

कईयों को बेहतर जीवन के लिए नौकरी, जीवन में अधिक सफल बनने की आपकी चाहत, दूसरों से अधिक ऐशो-आराम, किसी के द्वारा आपके साथ किए गए दुर्व्यवहार पर ग्लानि, मानसिक अशांति, किसी मामले में दूसरों के मुकाबले में कम होना आदि – आदि समस्याएं हो सकती हैं, जो न केवल आपके मानस पटल पर बल्कि आपकी दिनचर्या को भी प्रभावित करती हैं. आप अपने आप में कुढ़ते हैं और कई बार बुरी तरह हताश हो जाते हैं, जो आपके व्यक्तित्व पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है.

अधिकांश समस्याएं, जो केवल आपकी सोच के कारण पनपी हों, उनका निदान बाहर खोजना व्यर्थ होता है. यह मानकर चलना है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी खुशी, प्रगति, विकास, बेहतर जीवन, सुख- सुविधा के लिए जीवन-संघर्ष करता है. ऐसे में यदि आप उनकी प्रगति या किए जा रहे प्रयासों से दुखी होते हैं, तो यह आपकी अपनी मनोवृति की समस्या है. आप भी उसी की तरह मेहनत कर सकते हैं, आपको भी वे सभी अवसर प्राप्त हो सकते हैं, जो दूसरे को हैं. आप भी अपनी काबिलियत से वे सारे सुख प्राप्त कर सकते हैं, जो दूसरों ने प्राप्त किए हैं.

कई समस्याएं, जो आपसे प्रत्यक्ष रूप से आपसे न जुड़ी हों और जब तक वह आपको व्यक्तिगत रूप से प्रभावित नहीं करती हों, तब तक आप अपने को उन समस्याओं से बचा सकते हैं, धैर्य रखकर परिस्थितियों को समझें, समाधान की रणनीति बनाएं और उचित समय पर अपना पक्ष रखें और सामनेवाले को केवल यह मत कहें कि उन्होंने आपके साथ बुरा व्यवहार किया है, बल्कि अपनी बात रखते समय ऐसे उदाहरण भी दें, जिन्हें वे नकार नहीं सकते हों. इससे आपकी बात का पलड़ा भारी रहेगा और सामनेवाला अपनी गलती मान लेगा.

साथियों से मन-मुटाव या आपस में भ्रातियां उत्पन्न हो जाएं, तो उस व्यक्ति से सीधे बात करें और मूल कारणों को जानकर सारे भ्रम दूर करें. याद रखिए ... बातचीत से हल निकलते हैं, किंतु मन ही मन में कुंठित होने से समस्याएं गंभीर हो जाती हैं. अतः, उचित समय देखकर सकारात्मक रवैया अपनाकर बात-चीत से समस्याओं का समाधान ढूंढें.

समस्याएं ही जीवन को जीने लायक बनाती हैं. वे हमें अलग-अलग प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ने और उन पर विजय प्राप्त करने का अवसर देती हैं और अप्रत्यक्ष रूप से हमें बाहर और भीतर से मज़बूत बनाती हैं. हमेशा याद रखें कि जीवन की हर समस्या का समाधान है. उससे निजात पाने के लिए हमारे पास प्रबंधकीय दृष्टिकोण होना आवश्यक है. हमें समस्याओं को समझना होगा, उसके कारणों का पता लगाकर, सही हल निकालने का प्रयास करना होगा. तब ही हम समस्याओं पर विजय पा सकेंगे. समस्याएं हमारे जीवन में बाधक नहीं होती, बल्कि हम उनपर विजय प्राप्त करके साधक बनते हैं. समस्याएं हमें तोड़ने नहीं आती, बल्कि हमें हमारी क्षमता की हमें पहचान कराती हैं. हमे कर्म-पथ पर अग्रसर करती हैं और हमें नित नए मार्ग खोजने का अवसर देती हैं. यदि आपके प्रयास सफल न हों रहे हों, तो दिल बहलाने के लिए गालिब अंतिम उपाय यही है कि यह मानकर चलें कि जीवन क्षण-भंगुर है, नित नए काम होते रहते हैं, जीवन चलता रहता है, समय आता- जाता रहता है. जब सब कुछ पल-प्रतिपल बदल रहा है, तो निश्चय ही आपके दिन भी बदलेगें. जब पुराना समय नहीं रहा, तो यह समय भी नहीं रहेगा. सुख के दिन नहीं रहें तो दुख के दिन भी नहीं रहेंगे. फिर, किसी भी असफलता के लिए अधिक दुखी होने की क्या जरूरत है. जो मिला था, वह ईश्वर ने ही दिया था और जो नहीं है, वह ईश्वर ने वापिस ले लिया है, तो फिर दुख किस बात का, चिंता किस बात की?

क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान/ मौलाअली – एक परिचय

एस. साईं सुधा
वरिष्ठ अनुदेशक/ परिचालन

दक्षिण मध्य रेलवे के परिचालन और वाणिज्य विभाग के कर्मचारियों की सेवा में नियुक्ति के बाद उन्हें व्यवसायिक रूप से प्रशिक्षित करने तथा सेवा के दौरान पुनश्चर्या और पदोन्नति पाठ्यक्रम व परीक्षाओं का आयोजन करने के उद्देश्य से 07 दिसंबर, 1972 को दक्षिण मध्य रेलवे के तत्कालीन महाप्रबंधक श्री पी.एन. कौल ने क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान (जेडआरटीआई) का उद्घाटन किया. इसी उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष यह संस्थान 07 दिसंबर को वार्षिक दिवस के रूप में अपना स्थापना-दिवस मनाता है. यह प्रशिक्षण संस्थान सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जो छोटे से पठार की तलहटी में लगभग 20 एकड़ भूमि पर फैला है.

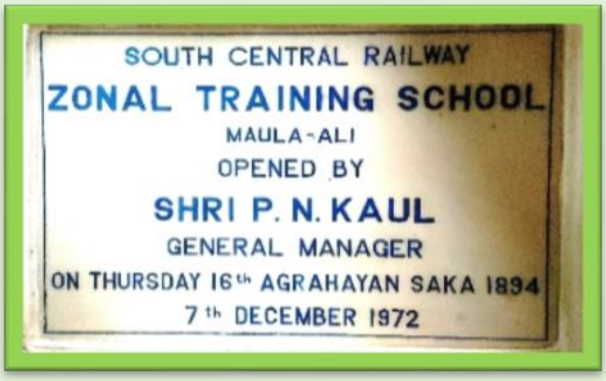

जेड.आर.टी.आई. की आधार-शिला

जेड.आर.टी.आई. का मुख्य प्रवेश द्वार

आरंभ में इस संस्थान का नाम क्षेत्रीय प्रशिक्षण स्कूल था, बाद में क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र रहा और वर्ष 2003 से क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान पड़ा. वर्ष 2003 के बाद से इस संस्थान में रेलगाड़ी के चालकों (ड्राइवरों), जिन्हें आज लोको पायलट के नाम से जाना जाता है, के लिए भी प्रशिक्षण दिया जाता है. साथ ही, यांत्रिक व इंजीनियरी विभागों के रेलपथ पर कार्य करनेवाले सभी कर्मचारियों को भी उनके कार्य के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाता है. संस्थान में दिया जानेवाला प्रशिक्षण संबंधित विभाग और पद के लिए निर्धारित मॉड्यूल के अनुसार दिया जाता है. प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को लोको, यांत्रिक, सिगनल व दूरसंचार इंजीनियरी, सामान्य इंजीनियरी, अग्नि-शमन, प्राथमिक चिकित्सा, भंडार, सुरक्षा जैसे विभागों से संबंधित काम-काज़ का सामान्य परिचय भी दिया जाता है.

संस्थान में प्रशिक्षण सुविधाएं -

- इस संस्थान में प्रशिक्षणार्थियों की प्रशिक्षण सुविधा के लिए प्रत्येक कक्षा में मल्टी फंक्शन डिस्प्ले यूनिट लगा है, जिसमें टी.वी., कंप्यूटर, ब्लैक-बोर्ड, ऑडियो-वीडियो सिस्टम की सुविधा है. प्रशिक्षणार्थियों के व्यवहारिक ज्ञान को विकसित करने के लिए पैनल कक्ष, आई.टी. लैब, वीडीयू (विडियो डिस्पले यूनिट) लैब, यातायात मॉडल कक्ष (टीएमआर), फॉयस लैब, हिंदी और अंग्रेजी के लिए अलग-अलग पुस्तकालय, गैलरी में प्रदर्शित पुराने सिगनलों और ब्लॉक उपलब्ध हैं, जिसका लाभ प्रशिक्षणार्थियों द्वारा उठाया जाता है.

- प्रारंभिक/ पुनश्चर्या प्रशिक्षण के दौरान, इस संस्थान के कुशल अनुदेशकों द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को उनके पाठ्यक्रमों के अनुसार प्रभावी ढंग से और कुशलतापूर्वक ज्ञानवर्धन के लिए सभी इनपुट दिए जाते हैं, जिसमें विभिन्न शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग किया जाता है. नियमों की जानकारी न सिर्फ पुस्तकों के माध्यम से, बल्कि चित्रों-चलचित्रों के माध्यम से भी दी जाती है, ताकि प्रशिक्षणार्थियों को विषय को आसानी और गंभीरता से समझ सके. इसके अलावा, प्रशिक्षकों द्वारा तैयार किए गए पॉवरपाइंट प्रेजेंटेशन से भी नियमों को क्रमबद्ध तरीके से याद रखने में मददगार साबित होता है.

- इस संस्थान में न केवल शैक्षणिक, बल्कि प्रशिक्षणार्थियों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए क्रिकेट, बैडमिंटन, वॉलीबॉल खेल के मैदान, इंडोर गेम्स में टेबल टेनिस, कैरम बोर्ड, कसरत करने हेतु इंडोर और आउटडोर जिम, हरी घास को शानदार प्रांगण, लगभग 400 लोगों द्वारा एक साथ भोजन करने के लिए मेस, योगा व अन्य गतिविधियों के लिए मनोहारी फूलों की क्यारियां का बगीचा और चारों ओर से पेडों के घिरा हरा-भरा बगीचा है, जिसके बीचों-बीच बैठक, मछलियों का तालाब और बगीचे में रात में घूमने के लिए अत्याधुनिक प्रकाश व्यवस्थावाले रास्ते बने हैं.

संस्थान का स्वर्णिम महोत्सव -

अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूरा करने पर संस्थान ने 07 दिसंबर, 2023 को 51वां वार्षिक दिवस मनाया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में दक्षिण मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री अरुण कुमार जैन आमंत्रित थे. साथ ही, प्रधान कार्यालय व अन्य कार्यालयों के प्रमुख विभागाध्यक्षों और विभागाध्यक्षों, वरिष्ठ अधिकारियों ने सम्मानीय अतिथि और विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई. संस्थान को सफलतम रूप से 50 वर्ष पूरा करने पर एक लोगो भी जारी किया गया.

स्वर्ण जयंती पर जारी लोगो

मंचासीन गणमान्य अतिथि

संस्थान की महत्वपूर्ण उपलब्धियां –

- चूंकि, रनिंग कर्मचारियों के लिए निरंतर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आवश्यक है, अन्यथा उन्हें गाड़ीचालन ड्यूटियों पर नहीं लिया जाता है. इसी बात को ध्यान में रखते हुए कोरोना काल में जहां सभी कार्यालयों को लगभग बंद कर दिया गया था, इस संस्थान ने ऑनलाइन के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम को जारी रखकर सभी अपेक्षित कर्मचारियों का प्रशिक्षण निरंतर पूरा किया.

- कोरोना काल की समाप्ति पर लगभग दो-तीन वर्षों से लंबित नए प्रशिक्षणार्थियों को यथाशीघ्र प्रशिक्षण प्रदान कर सेवा में लिए जाने हेतु वर्ष 2023 के दौरान, स्टेशन मास्टर और गाड़ी प्रबंधकों (गार्ड) के प्रारंभिक प्रशिक्षण को निर्धारित समय में पूरा करने हेतु संपूर्ण भारतीय रेल में पहली बार इस संस्थान द्वारा दो शिफ्टों में काम किया गया और 11 महीनों की अवधि में कुल 5,767 नए प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षित किया था. यह इस संस्थान का अनूठा रिकॉर्ड है.

- इस प्रशिक्षण संस्थान की एक और विशेषता है कि यहां वर्ष 2018 में सिमुलेटर प्रयोगशाला संस्थापित की गई, जो भारतीय रेल पर स्टेशन मास्टरों के लिए अपने प्रकार की सबसे पहली प्रयोगशाला थी. इसके माध्यम से स्टेशन मास्टर को गाड़ियों की आवा-जाही, उनके संचलन को नियंत्रण करने, सिगनल दिखाने, पैनल को संचालित करने की क्रिया को एनीमेशन के माध्यम से समझाया जाता हैं. इस प्रयोगशाला में प्रशिक्षणार्थी 20 से अधिक स्टेशनों की कार्यप्रणाली का व्यवहारिक अनुभूति कर सकते हैं.

- उपरोक्त पाठ्यक्रमों के अलावा, स्टेशन पर्यवेक्षकों के लिए वर्ष 2023 से 4 कार्य दिवसीय विशेष पाठ्यक्रम “धृति” आरंभ किया गया है, जिसमें व्यवसायिक पाठ्यक्रम की अपेक्षा प्रशासनिक और प्रबंधकीय कौशल को विकसित करने पर ज़ोर दिया जाता है. इस पाठ्यक्रम में अब तक कुल 200 स्टेशन अधीक्षकों/ यातायात निरीक्षकों को सफलतम रूप से प्रशिक्षित किया जा चुका है.

- इस संस्थान की एक और अनूठी विशेषता है - यहां स्थित 200 वर्ष से अधिक पुराना सीढ़ीनुमा कुआं, जो स्वतंत्रतोपरांत दक्षिण मध्य रेलवे को इसके गठन वर्ष 1966 में विरासत में मिला. संस्थान के 50वें स्थापना अवसर पर जीर्णोद्धार किया गया. इस कुएं से निजाम साम्राज्य के सर मीर तुराब अली खान, सालार जंग-I (1829-1883) यहां के आम के बगीचों की सिंचाई करते थे और यही कुआं पिछले पांच दशकों से अधिक समय से प्रतिदिन लगभग एक लाख लीटर पानी उपलब्ध कराकर क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान की पानी की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा है. इस कुएं की प्रशंसा में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी संज्ञान लिया है.

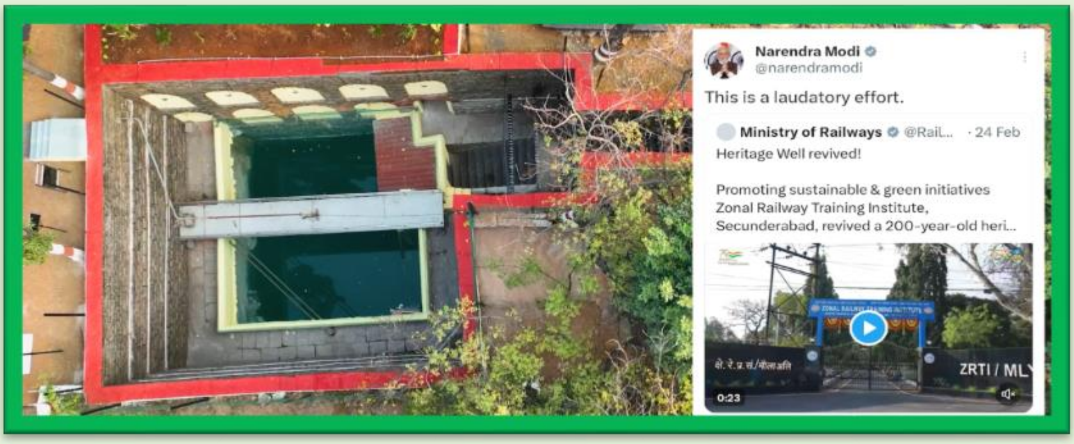

200 वर्ष पुराना विरासती कुआं

संस्थान की अन्य गतिविधियां –

- संस्थान द्वारा प्रशिक्षण के प्रत्येक बैच के उत्कृष्ट प्रशिक्षणार्थियों को पदक और योग्यता प्रमाण-पत्र देकर उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है, जिसका उल्लेख उनके भारमुक्ति पत्र में भी किया जाता है, ताकि सेवा के दौरान उनकी उपलब्धि को ध्यान में रखा जाए. साथ ही, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, वार्षिक दिवस, संक्रांति, बतुकम्मा आदि विशेष अवसरों पर प्रशिक्षणार्थियों के लिए संगोष्ठियां, कार्यशालाएं, चित्रकला, रंगोली, निबंध, अंताक्षरी व गायन, प्रश्नोत्तरी, खेल, सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं आयोजित करके प्रशिक्षुओं का सर्वांगीण विकास किया जाता है.

बतुकम्मा आयोजन की एक झलक

स्वतंत्रता दिवस की एक झलक

- संस्थान प्रतिवर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाता है, जिसमें योग संस्थान के कुशल व अनुभवी योग-गुरुओं द्वारा संस्थान के अधिकारियों/ कर्मचारियों और प्रशिक्षणर्थियों को योग कराया जाता है. इसके अतिरिक्त, संरक्षा – कर्मचारी होने के नाते कर्मचारियों द्वारा काम के दौरान मानसिक और शारीरिक संतुलन को बनाए रखने, काम के तनाव को प्रबंधित करना सिखाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित योग गुरुओं द्वारा ध्यान-योग के तीन सत्र नियमित रूप से चलाए जाते हैं और तनाव प्रबंधन पर मनोचिकित्सकों/डॉक्टरों द्वारा अतिथि व्याख्यान भी आयोजित किए जाते हैं.

ध्यान शिविर का आयोजन

विश्य योग दिवस पर योग

प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित करने के अलावा, संकाय के शिक्षण कौशल को बढ़ाने के लिए सभी संकाय सदस्यों को भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी/वडोदरा द्वारा आयोजित प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और भारतीय रेल यातायात प्रबंधन संस्थान/ लखनऊ द्वारा आयोजित संकाय विकास कार्यक्रम के लिए भी भेजा जाता है.

यह संस्थान अपने प्रधानाचार्य, उप प्रधानाचार्य, मुख्य अनुदेशक/ परिचालन और मुख्य अनुदेशक/ वाणिज्य तथा मुख्य कार्यालय अधीक्षक की निगरानी तथा इनके कुशल प्रबंधन तथा उनकी प्रशिक्षित और अनुभवी टीम के सहयोग से दिन दोगुनी-रात चौगुनी प्रगति पथ पर अग्रसर है. प्रशिक्षणार्थियों को परिचालन विभाग के बारह, वाणिज्य विभाग के आठ तथा कार्मिक और राजभाषा विभाग के एक-एक प्रशिक्षकों द्वारा संबंधित विषयों की सटीक और अद्यतन जानकारी दी जाती है.

अंत में, यह उल्लेख करना उचित है कि अपनी स्थापना के बाद से इस संस्थान ने संरक्षा श्रेणी और अन्य श्रेणियों के कर्मचारियों को प्रभावी ढंग से प्रशिक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए उपलब्धियां हासिल की हैं तथा दक्षिण मध्य रेलवे के जिम्मेदार और अग्रिम पंक्ति के कार्यबल को कुशल प्रशिक्षित व योग्य कर्मचारी के रूप में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर संस्थान के मूल मंत्र- अनुशासन, निष्ठा और ड्यूटी के प्रति समर्पण को जीवंत बनाकर भारतीय रेलवे की प्रगति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है.

क्षे.रे.प्र.सं./मौलाअली का रात्रि का विहंगम दृश्य

<u>कार्यालयों में हिंदी - कार्यान्वयन की समस्याएं</u>

श्री राजेश कुमार पांडे
वरि. अनुदेशक/परिचालन
क्षे.रे.प्र.सं./मौलाअली

हमारा देश भारत विविधताओं से भरा देश है, चाहे वह धर्म हो, जाति हो, रहन-सहन हो, खान-पान हो, पहनावा हो, भाषा हो आदि – आदि. आज हमारे देश में छोटी – बड़ी सभी भाषाओं को मिला दें तो लगभग 1600 से अधिक भाषाएं, बोलियां बोली जाती हैं. ऐसे में किसी एक भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर काम-काज़ी भाषा अर्थात् राजभाषा (कार्यालय में उपयोग हेतु निश्चित करना) के रूप में स्वीकार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है. संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को भले ही हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार करके अपना उत्तरदायित्व पूरा कर दिया था, किंतु इतना भर काम करने से इसे राजभाषा को पूर्ण दर्जा आज तक नहीं मिल पाया है. आज़ादी के 78 वर्षों के बाद भी राजभाषा अपने अस्तित्व की लड़ाई निरंतर लड़ रही है.

भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिंदी को उसका स्थान व सम्मान दिलाने के लिए राजभाषा अधिनियम, 1963, राजभाषा संकल्प, 1968, राजभाषा नियम, 1976, नित नए आदेश जारी करके इसे सरकारी तंत्र की भाषा बनाए रखने के हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं और यह प्रयास अब भी निरंतर जारी हैं. प्रधानमंत्री महोदय की अध्यक्षतावाली केंद्रीय हिंदी समिति, सभी मंत्रालयों की अपनी-अपनी सलाहकार समितियां, संसदीय राजभाषा समिति तथा प्रत्येक कार्यालय की अपनी-अपनी समितियां होने के बावजूद भी आज भी हिंदी भाषा राजभाषा के रूप में अपनाए जाने की राह तक रही है.

कार्यालयों में राजभाषा के रूप में हिंदी भाषा की चुनौतियां –

इस संबंध में, कार्यालयों में हिंदी के उपयोग में आनेवाली समस्याओं पर हम एक नज़र डालकर यह समझने का प्रयास करेंगे कि राजभाषा के प्रयोग – प्रसार में किन - किन प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जो इसे राजभाषा के रूप में पूर्ण सम्मान दिलाने में अड़चनें बनती हैं –

1. राजभाषा हिंदी का कामकाज़ी ज्ञान न होना –

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में यह एक गंभीर समस्या आती है. राजभाषा नियमों के अनुसार प्रत्येक केंद्र सरकारी कर्मचारी को हिंदी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है. एक अनुमान के अनुसार आज लगभग अधिकांश कर्मचारियों को इसका ज्ञान भी है, किंतु जब कार्यालय की फाइलों, रजिस्टरों आदि में हिंदी में काम करने की बात आती है, तो इसकी ज़मीनी हकीकत पता चलती है.

अक्सर देखा जाता है कि कर्मचारी या तो टूटी- फूटी हिंदी का उपयोग करते हैं या फिर हिंदी अक्षरों के साथ-साथ अंग्रेजी अक्षरों का सहारा लेकर अपना काम चलाते हैं. भले ही, कर्मचारियों को हिंदी – अंग्रेजी में काम करने की छूट है, किंतु ऐसी स्थिति में वे न तो इधर के रहते हैं और ना ही उधर के. इसका मूल कारण है कि अधिकांश कर्मचारियों को सरकारी काम हिंदी में करने की पूरी जानकारी नहीं होती है

2. काम करने के लिए अन्य भाषा का विकल्प होना –

यह बात सत्य है कि जब तक कर्मचारियों को अंग्रेजी में सरकारी काम करने का विकल्प होगा, तब तक कामकाज़ी हिंदी पूर्ण रूप से कार्यालयों में अपनी जगह नहीं बना पाएगी. कर्मचारियों को स्कूली स्तर

से हिंदी का ज्ञान नहीं होता है और वे सरकारी कर्मचारी बनकर जब हिंदी परीक्षाएं पास करते हैं, तो उनसे हम स्तरीय हिंदी की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं. अतः, सरकार को पूरे देश में स्कूली स्तर पर हिंदी भाषा सीखना अनिवार्य करना होगा, जिसका दुष्परिणाम हम बंगाल, ओडीशा, तमिलनाडु जैसे कुछेक राज्यों में देखते हैं, जहां के निवासी हिंदी भाषा की बजाय अन्य भाषा पढ़ने को प्राथमिकता देते हैं.

3. सेवाकालीन प्रशिक्षण न होना –

केंद्र सरकार में नियुक्त उन कर्मचारियों, जिन्होंने स्कूली स्तर पर हिंदी भाषा का ज्ञान अर्जन नहीं किया है, ऐसे कर्मचारियों को कार्यालयी स्तर पर हिंदी प्रशिक्षण देने की सुविधा है, किंतु कई बार कर्मचारी इसका लाभ नहीं उठाते हैं और वे हिंदी भाषा को कार्यालयी भाषा के रूप में पूरी तरह अनदेखी कर देते हैं.इसके अलावा, अक्सर कारखानों में नैमितिक स्तर के रूप में नियुक्तकर्मचारी, कार ड्राइवरों, पोर्टरों आदि, जो कार्यालयों में लिपिकीय पदों पर कार्य करने के लिए पदस्थ किए जाते हैं, उन्हें हिंदी का ज्ञान बिल्कुल नहीं होता, जिसका लाभ हिंदी भाषा को बिल्कुल नहीं मिलता है. कई बार देखने में आता है कि उनकी आयु इतनी अधिक हो चुकी होती है कि सेवानिवृति की आयु में आकर हिंदी प्रशिक्षण के लिए तैयार नहीं होते हैं.

4. राजभाषा नियमों की अनदेखी करना–

हिंदी कार्यान्वियन में आनेवाली समस्या का एक कारण यह कि सरकार द्वारा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आनेवाले सभी कागज़ातों को शत-प्रतिशत हिंदी में भी जारी करने का आदेश है. चूंकि, अधिकांश मामलों में इन सभी कागज़ातों को मूलतः अंग्रेजी में ही जारी कर दिया जाता है और इन पत्रके अंतिम पंक्तियों में लिख दिया जाता है –English version follows, जो यदा – कदा ही देखने को मिलता है.जब तक सरकार द्वारा हिंदी या अंग्रेजी का विकल्प दिया जाएगा, यह समस्या बनी रहेगी. इस समस्या का सबसे बढ़िया समाधान यही होगा कि सरकार द्वारा जैसे ही शत-प्रतिशत हिंदी भाषा के ज्ञान की पुष्टि की जाती है, हिंदी एक मात्र भाषा को ही अनिवार्य कर दिया जाए, अन्यथा हिंदी राजभाषा के रूप में अपना अस्तित्व सदा के लिए खो देगी.

5. अंग्रेजी में काम करने की मानसिकता–

कार्यालयों में हिंदी जाननेवाले कर्मचारियों द्वारा अंग्रेजी में काम करने का एक कारण अंग्रेजी मानसिकता या फिर अंग्रेजी में काम करने पर गर्व की अनुभूति करना कहा जा सकता है, भले ही वे अंग्रेजी का टूटा-फूटा ज्ञान रखते हों.राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से राजभाषा हिंदी के नियमों की निरंतर जानकारी दी जाती है, किंतु जब काम करने की बात आती है, अंग्रेजी भाषा में ही काम करने को प्राथमिकता दी जाती है.

6. कंप्यूटर पर अधिकांश काम करना–

हिंदी भाषा के कार्यान्वियन में एक और समस्या आती है – कंप्यूटर में काम करने की. आज जहां, अधिकांश काम कंप्यूटर पर किया जाता है, वहां हिंदी पीछे रह जाती है. हालांकि, कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने की व्यवस्था है, सरकार द्वारा अपनाई गई ई-ऑफिस प्रणाली के माध्यम से भी हिंदी में काम करने विकल्प है, किंतु इसका पालन बहुत ही कम किया जाता है. आज ऑनलाइन अनुवाद की बहुत अच्छी सुविधा है. भारत सरकार द्वारा भी हिंदी अनुवाद टूल्स विकसित किए गए हैं, किंतु इनका ज्ञान सभी कर्मचारियों को नहीं है.कई बार अंग्रेजी का ऑनलाइन अनुवाद करके हिंदी में प्रस्तुत करके फाइलों में रख दिया जाता है, जिसमें हिंदी और अंग्रेजी के वाक्यों में अर्थ का अनर्थ देखने को मिलता है, जो न केवल हास्यास्पद होता है, बल्कि यदि उच्चाधिकारी उस प्रयास के लिए अधीनस्थ कर्मचारी को फटकार लगा दे, तो कर्मचारी का मनोबल मार खा जाता है और वह भविष्य में हिंदी में काम करने से कतराने लगता है.

7. हिंदी में काम, राजभाषा विभाग के नाम–

कार्यालयों में जब हिंदी में काम करने पर अधिक ज़ोर दिया जाता है, तो कई विभाग वांछित काम को हिंदी में करने हेतु हिंदी अनुभाग भेज देते हैं और यह काम दोहरा काम बन जाता है. दूसरे विभाग या कर्मचारी यह मानकर चलते हैं कि यदि हिंदी में काम करना है, तो यह हिंदी विभाग द्वारा ही किया जाना चाहिए. कई बार वे पहले अपने काम को अंग्रेजी में तैयार करते हैं और बाद में अपने स्तर पर उसका अनुवाद करते हैं, जिससे न केवल समय की बर्बादी होती है, बल्कि अनुदित हिंदी अपना मूल रूप खो देती है.

8. अंग्रेजी भाषा की ओर झुकाव–

वैश्वीकरण के इस युग में समुचित दुनिया जिस प्रकार से एक मुट्ठी में सिमट आई है, किसी के लिए भी एक दूसरे का रहन सहन, खान पान, पहनावा ओढ़ावा से अनभिज्ञ रहना आज के समय में संभव नहीं है और इसी कारण लोगों का अंग्रेजी और अंग्रेजियत के तरफ खींचा चले जाना आम बात हो गई है. लोगों की मानसिकता और धारणा यह बन गई है कि अंग्रेजी पढ़ना, लिखना,बोलना और सीखना ही ऐडुकेटेड (शिक्षित) होना है और इसके बगैर आज के समय में सफल हो पाना काफी कठिन है. इसी कारण से सरकार के हिंदी को बढ़ावा देने के इतने प्रयासों के बावजूद भी हिंदी की तरफ उदासीनता निरंतर ही बढ़ती जा रही है और हिंदी भाषा अपने ही देश में निम्नस्तरीय हो रही है.

9. हिंदी में काम न करने पर दंड का विधान न होना–

हिंदी कार्यान्वयन में ढिलाई करने या हिंदी में काम न करने का एक कारण यह भी है कि कर्मचारियों द्वारा हिंदी में काम न करने पर उनपर कोई भी कार्रवाई न करने का कोई नियम-कानून नहीं है. न तो वेतन काटा जाता है, न आरोप-पत्र दिया जाता है, न पास-पीटीओ काटे जाते हैं, न पदोन्नति रोकी जाती है, ना वेतनवृद्धि रोकी जाती है, आदि - आदि. जिस प्रकार आयकर, प्रवर्तन निदेशालय, सतर्कता आदि विभागों को नियमों के उल्लंघन के लिए कर्मचारियों के विरूद्ध कार्रवाई करने का अधिकार दिया गया है, उसी प्रकार यदि राजभाषा का पालन न करने पर दंड का प्रावधान होगा, तो निश्चय ही राजभाषा हिंदी के विकास को अवश्य गति मिलेगी.सरकार पिछले 78 वर्षों से हिंदी को साम-दाम और भेद के नाम पर ही चला रही है, दंड का प्रावधान तो है ही नही. यदि नियम- कानून हैं, तो केवल राजभाषा विभाग के कर्मचारियों के लिए कि वे सरकार द्वारा राजभाषा के लिए निर्धारित लक्ष्यों को पूरा नहीं कर पा रहे हैं. यहां, यह उल्लेख करना आवश्यक है कि नियम सभी पर समान लागू होते हैं, तो राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन भी सभी की जिम्मेदारी है. राजभाषा विभाग का कर्मचारी उन नियमो के क्रियान्वयन में केवल सहयोग देगा, किंतु मान यह लिया जाता है कि हिंदी का काम केवल हिंदी विभाग के कर्मचारी की ही ड्यूटी है, जो कि बिल्कुल गलत है.

हालांकि, राजभाषा का प्रचार – प्रसार कर सरकार इसे निरंतर बनाए रखने का भरसक प्रयास कर रही है, किंतु ऐसे में इसे इसका पूर्ण सम्मान दिलाना अत्यंत कठिन है, जब तक नियमों को सबके लिए सख्ती से लागू नहीं किया जाएगा, तब तक हिंदी सरकारी स्तर पर दूसरी भाषा का ही दर्जा पाकर रह जाएगी. हमें संविधान द्वारा निर्धारित हिंदी को सच्चे मायने में राजभाषा का दर्जा दिलाना है, तो इसे प्रत्येक सरकारी कर्मचारी के दिल में घर कराना होगा, तब ही यह सच्चे अर्थों में देश की राजभाषा हिंदी कहलाएगी.

जय हिंद – जय हिंदी

राष्ट्रीय रेल योजना - 2030

एम.सी. गोपाल कृष्णा
वरि.अनुदेशक/ परिचालन
क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान/ मौलाअली

विश्व के चौथे सबसे बड़े रेल नेटवर्क अर्थात् भारतीय रेल ने राष्ट्रीय रेल योजना (एनआरपी) 2030 तैयार की है. इस योजना का उद्देश्य "भविष्य के लिए तैयार" रेलवे प्रणाली बनाना है, जिसका मुख्य उद्देश्य माल ढुलाई संचलन में रेलवे की हिस्सेदारी को 45% तक बढ़ाने के लिए रणनीति तैयार करना है.

नीति आयोग के निष्कर्षों से पता चलता है कि भारतीय रेलवे की माल ढुलाई में हिस्सेदारी वर्ष 1951 के बाद से निरंतर घटी है. वर्ष 2020 में सड़क मार्ग की 71% हिस्सेदारी की तुलना में रेलवे की हिस्सेदारी मात्र 18% थी, जिसका मुख्य कारण है- अपर्याप्त रेल क्षमता, विशेष रूप से कुछ ऐसे मार्गों पर, जिनपर रेल यातायात अत्यधिक मात्रा में चलता है. सड़क आधारित माल परिवहन का विकास भारतीय रेलवे की माल यातायात की संकल्पना के आधार पर हुआ है. स्वर्णिम चतुर्भुज (गोल्डन क्वाड्रिलेट्रल) और इसके विकर्ण, जो भारत के रेल मार्ग की लंबाई का मात्र 16 प्रतिशत है, देश के लगभग 52 प्रतिशत यात्रियों और 58 प्रतिशत माल ढुलाई का वहन करते है. इसमार्ग के साथ जुड़े राष्ट्रीय राजमार्ग का प्रतिशत भारत के राजमार्ग नेटवर्क के 0.5 प्रतिशत से भी कम हैं, किंतु यह देश के सड़क माल का 40 प्रतिशत वहन करते हैं.

भारत में हवाई मार्ग, जल मार्ग और सड़क मार्ग से की जानेवाली कुल माल ढुलाई की तुलना में रेल द्वारा ढुलाए जानेवाले माल की मात्रा मात्र 36 प्रतिशत है, जबकि चीन में यह दर 47 प्रतिशत तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में 48 प्रतिशत है.इसी कमी को दूर करने के लिए राष्ट्रीय रेल योजना - 2030 तैयार की गई है, जिसके प्रमुख उद्देश्य हैं –

माल ढुलाई में रेलवे की हिस्सेदारी को 45% तक बढ़ाने के लिए परिचालन क्षमताओं और वाणिज्यिक नीति आधारित रणनीति तैयार करना .
मालगाड़ियों की औसत गति को 50 कि.मी. प्रति घंटे तक बढ़ाकर माल के पारगमन समय को काफी कम करना.

राष्ट्रीय रेल योजना के भाग के रूप में, 2024 तक कुछ महत्वपूर्ण परियोजनाओं के त्वरित कार्यान्वयन के लिए **विज़न - 2024** लॉन्च किया गया है, जिसमें निम्नलिखित कार्य पूरे किए जाएंगे -

1. 100% विद्युतीकरण.
2. भीड़भाड़ वाले मार्गों की मल्टी-ट्रैकिंग (एक से अधिक रेलपथों को बिछाना).
3. दिल्ली-हावड़ा और दिल्ली-मुंबई मार्गपर गति को 160 कि.मी. प्रति घंटे तक बढ़ाना.
4. सभी स्वर्णिम चतुर्भुज/स्वर्णिम डेडीकेटेड मार्गों पर सभी समपार फाटकों को समाप्त करना.
5. नये डेडीकेटेड माल गलियारों की पहचान करना.
6. नये उच्च गति वाले रेल कॉरिडोर की पहचान करना.
7. यात्री यातायात के लिए रोलिंग स्टॉक की आवश्यकता के साथ-साथ माल ढुलाई के लिए वैगन की आवश्यकता का आकलन करना.

8. 100% विद्युतीकरण (हरित ऊर्जा) और माल ढुलाई मॉडल हिस्सेदारी बढ़ाने के दोहरे उद्देश्यों को पूरा करने के लिए लोकोमोटिव की आवश्यकता का आकलन करना.
9. कुल आवश्यक पूंजी निवेश का आकलन करें तथा उसका आवधिक ब्यौरा भी दें.
10. रोलिंग स्टॉक के संचालन और स्वामित्व, माल और यात्री टर्मिनलों के विकास, ट्रैक अवसंरचना के विकास/संचालन आदि जैसे क्षेत्रों में निजी क्षेत्र की निरंतर भागीदारी.
11. 2024 तक पूरा करने के लिए कुल 3750 किलोमीटर लंबाई की 58 सुपर क्रिटिकल परियोजनाओं और कुल 6913 किलोमीटर लंबाई की 68 क्रिटिकल परियोजनाओं की पहचान की गई है.

भारतीय रेलवे का भविष्य : चूंकि 2050 तक राष्ट्रीय माल ढुलाई गतिविधि लगभग पांच गुना बढ़ जाएगी, इसलिए भारत के माल परिवहन पारिस्थितिकी तंत्र को भारत की महत्वाकांक्षी प्राथमिकताओं का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी, जिसमें वैश्विक प्रतिस्पर्धा, नौकरी में वृद्धि, शहरी और ग्रामीण आजीविका, और स्वच्छ हवा और पर्यावरण शामिल हैं.

बेहतर रेल मोड शेयर, बढ़ी हुई लॉजिस्टिक्स दक्षता और स्वच्छ वाहन, परिवर्तनकारी माल ढुलाई प्रतिमान के लिए आधारशिला हैं जो भारत की पहुंच में हैं.

समय की मांग :

1. धुरा भार बढ़ाकर मौजूदा नेटवर्क बुनियादी ढांचे में सुधार करना,
2. रेलगाड़ियों की लंबाई बढ़ाना.
3. गाड़ियों को तेज गति से चलाने में सक्षम बनाना .
4. विशेषीकृत भारी ढुलाई गलियारों का विकास करके नई नेटवर्क क्षमता जोड़ना.
5. अधिक समर्पित माल ढुलाई गलियारे बनाना, और
6. अंतरमॉडल परिवहन की उच्च क्षमतावाले गलियारों की पहचान करना और उनका विकास करना.
7. रेल, सड़क और जलमार्गों पर बेहतर मॉडल एकीकरण सुनिश्चित करना.

यह माल ढुलाई मॉडल कम परिवहन लागत के साथ लागत-प्रभावी होगा, बेहतर भागीदारी और परिचालन दक्षता के साथ स्वच्छ और अनुकूल होगा.

झोपड़ी और महल

मेराज अहमद
कनि. अनुवादक,प्र.का./द.म.रे.

यदि मैं किसी पर उसकी खुशहाली के कारण ईर्ष्या कर सकता हूं तो मैं झोपड़ी में रहने वाले से पहले महलों में रहने वालों से ईर्ष्या करूंगा और यदि मन में भ्रम हावी न होता तो गरीब अमीरों के सामने कमजोरी नहीं दिखाते और अमीर फूले नहीं समाते कि गरीबों ने ईश्वर को छोड़कर उन्हें अपना भगवान बना लिया है.

मैं अमीरों से केवल एक ही जगह खुश होता हूं, अगर मैं उन्हें भूखों को सांत्वना देते हुए और गरीबों के प्रति सहानुभूति रखते हुए और अपनी अतिरिक्त संपत्ति को उस अनाथ पर लुटाते हुए देखता हूं जिसके पिता को समय ने छीन लिया है और उस विधवा पर जिसके दिल को भाग्य ने तोड़ दिया है, वह मुसीबत में है और वह अपने हाथ से बेबसी और दुख के आंसू पोंछ रही है.

मैं इस बात से दुखी होता हूं कि अमीर गरीब आदमी पर मुसीबत आने की प्रतीक्षा करता है, और उसकी बची हुई संपत्ति को ऐसा चूस लेता है कि उसके सामने आशा का दरवाजा ही बंद कर देता है. मुझे इस पर भी दुख होता है यदि मैं देखता हूं कि उसका मानना है कि धन मानव पूर्णता का अंत है, इसलिए वह किसी भी उत्कृष्टता की आशा नहीं करता है और खुद को किसी के प्रति जवाबदेह नहीं मानता.

मुझे उसकी मानसिकता पर रोना आता है यदि वह अकड़ कर चलता है और अपनी गर्दन से आकाश की बराबरी करता है और आंख और हथेली के इशारे से सलाम करता है और कनखियों से देखता है कि रास्ते पर चलते समय लोग किस तरह झुक कर उसका स्वागत करते हैं.

अगर वह दयनीय स्थिति में रह रहा है, अपने और अपने परिवार से पीड़ित है तो मुझे इस पर भी दुख होता है कि उसके लोग और उसके परिवार वाले उसे नापसंद करते हैं, उसे लगने लगा है कि उसका जीवन खराब है और उसकी मृत्यु में देरी हो चुकी है.

मेरे अनुसार गरीब आदमी जीवन में सबसे भाग्यशाली होता है और उसे दिली सुकून मिलता है, लेकिन जब वह भ्रमित होता है, तो सोचता है कि अमीर आदमी उससे अधिक भाग्यशाली और भोग विलास में जीवन व्यतीत करने वाला है. ईश्वर ने उसे जो दौलत बहुतायत से दी है उस पर वह ईर्ष्या करने लगता है और उदास होकर अपने घर के एक कोने में बैठकर आहें भरता है और आँसू बहाने लगता है.

यदि यह उसकी अज्ञानता और बुद्धि की कमी के कारण न होता तो उसे पता चल जाता कि वह महलों का मालिक गरीब आदमी की झोपड़ी और उसकी विलासिता के लिए तरसता है और देखता है कि उसकी मंद रोशनी, जो स्वयं को प्रकाशित नहीं कर सकती, उन उज्ज्वल लाइटों की तुलना में बेहतर है जो उसके सामने चमकती है.

बहुत से लोग इतने कमजोर और छोटे हो गए हैं कि वे अमीरों को महत्व देते हैं क्योंकि वे अमीर हैं, भले ही उनसे उन्हें इतना भी नहीं मिलता कि वे अपनी प्यास बुझा सकें या अटका हुआ निवाला निगल सकें. काश ! मैं यह समझ पाता कि यदि उनके लिए धन जहां कहीं भी मिले, उसका सम्मान करना जरूरी है, तो वे सुनारों के हाथ क्यों नहीं चूमते और सोने का पट्टा पहने कुत्तों का सम्मान करने के लिए क्यों नहीं खड़े होते, जबकि वे जानते हैं कि उनमें और इनके बीच कोई अंतर नहीं है.

यदि गरीब कंजूसों के साथ वैसा ही करें जैसा आवश्यक है, तो वे स्वयं उनसे भयभीत हो जाएंगे, और जान लेंगे कि सोने के टुकड़े जो वे बटोरते हैं वे उनके पैरों से लिपटे हुए सांप हैं और उनकी गर्दनों में

लगे हुए फंदे हैं और वे विश्वास करेंगे कि सम्मान शिष्टाचार की पूर्णता में है, सोने की घंटियों में नहीं और महान कार्यों में है, धन के बोझ में नहीं.

इसलिए, मेरे अनुसार लोगों को कुलीनों का सम्मान करना चाहिए और अमीरों का तिरस्कार करना चाहिए और जानना चाहिए कि कुलीनता धन और गरीबी से परे है और खुशी एक ऐसी चीज है जो झोपड़ी और महल से परे है.

"श्रीरामचरितमानस " महाकाव्य की पुस्तक समीक्षा

देव व्रत शर्मा
लेखा लिपिक, विसमुलेधि/निर्माण कार्यालय/सिकंदराबाद

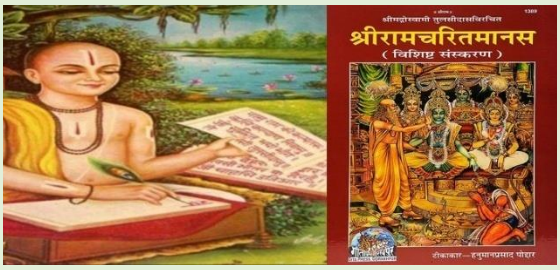

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा 16वीं शताब्दी में अवधी भाषा में रचित श्रीरामचरितमानस केवल हिंदी साहित्य का ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारतवर्ष का प्रसिद्ध महाकाव्य है. इसे सामान्यतः 'तुलसी रामायण' या 'तुलसीकृत रामायण' भी कहा जाता है जिसकी लोकप्रियता अद्वितीय है.

श्रीरामचरितमानस के नायक श्रीराम हैं जिनको एक मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में दर्शाया गया है जो स्वामी हरि नारायण भगवान के अवतार हैं जबकि महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण में श्रीराम को एक आदर्शवादी चरित्रवान मानव के रूप में दर्शाया गया है जो संपूर्ण मानव समाज को ये सिखाता है जीवन को किस प्रकार जिया जाए भले ही उसमे कितने भी विघ्न क्यों न हों. तुलसीदास जी ने श्री राम कथा को रामचरित के रूप में दोहों, चौपाइयों, सोरठों तथा छंदों के साथ वर्णन किया है. गीताप्रेस गोरखपुर के संपादक हनुमान प्रसाद पोद्दार के अनुसार श्रीरामचरितमानस को लिखने में गोस्वामी तुलसीदास जी को 2 वर्ष 7 माह 26 दिन का समय लगा था और उन्होंने इसे विक्रम संवत् 1633 (1576 ई.) के मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में राम विवाह के दिन पूर्ण किया था.

श्रीरामचरितमानस को तुलसीदास जी ने सात काण्डों में विभक्त किया है. इन सात काण्डों के नाम हैं - बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, लंकाकाण्ड (युद्धकाण्ड) और उत्तरकाण्ड. छन्दों की संख्या के अनुसार बालकाण्ड सबसे बड़ा और किष्किंधाकाण्ड सबसे छोटा काण्ड हैं. तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में अलंकारों का विशेषकर अनुप्रास अलंकार का बहुत सुंदर प्रयोग किया है.

इन सात काण्डों में सबसे पहला बालकाण्ड है जिसमें श्रीराम के जन्म से लेकर शिव धनुष को तोड़कर माता जानकी से विवाह तक के प्रसंग को दर्शाया गया है. वैसे तो बालकाण्ड के सभी प्रसंग एवं घटनाएं रोचक हैं परंतु इनमें से प्रभु श्रीराम के शिव धनुष के तोड़ते ही 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' का प्रसंग अत्यधिक रोचक है. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने दसवीं कक्षा के हिंदी पाठ्यक्रम में इस प्रसंग को विशेष स्थान दिया है जिसे छात्र-छात्राएं अत्यधिक रुचि से पढ़ते हैं.

अयोध्याकाण्ड में श्रीराम और माता सीता के विवाह के पश्चात् अयोध्या में घटित घटनाओं से लेकर श्रीराम के वनवास जाने तक की व्याख्या की गई है. इसमें श्रीराम का माता सीता तथा भ्राता लक्ष्मण सहित वनवास जाना, पुत्र के वियोग में राजा दशरथ का निधन तथा चित्रकूट में श्रीराम एवं भरत का मिलाप आदि ऐसे प्रसंग हैं जो मर्मस्पर्शी होने के साथ-साथ भावनाओं से ओत-प्रोत हैं.

अरण्यकाण्ड में श्री राम, लक्ष्मण और सीता के पंचवटी में निवास तथा लंकापति रावण द्वारा माता सीता के हरण से लेकर श्री राम के लंका की ओर बढ़ने तक के दृश्य को बताया गया है. इसमें सीता हरण, रावण जटायु युद्ध, श्रीराम विलाप तथा माता शबरी पर श्रीराम की कृपा आदि प्रकरण अत्यधिक रोचक एवं मर्मस्पर्शी हैं.

किष्किंधाकाण्ड में महावीर हनुमान और सुग्रीव से मिलने एवं वानर सेना द्वारा माता जानकी की खोज के प्रसंग को बताया गया है जिसमें हनुमान सुग्रीव से राम की संधि कराते हैं. राम बालि का वध करते हैं. सुग्रीव पुन: अपने पंपापुर राज्य का राजा बनता है. इसके उपरांत सुग्रीव हनुमान, जांबवंत समेत वानर सेना को माता सीता की खोज में भेजते हैं.

महावीर हनुमान के लंका जाकर माता सीता से भेंट से लेकर पुन: श्री राम तक सूचना पहुंचाने और समुद्र में पुल बनाने तक के प्रसंग को सुंदरकाण्ड में बताया गया है. यह दृश्य ओज से भरा होता है एवं प्रभु श्रीराम की भक्ति की शक्ति को दर्शाता है.

लंकापति रावण से घोर युद्ध के पश्चात् श्रीराम, लक्ष्मण एवं माता सीता के पुष्पक विमान से अयोध्या वापस जाने तक के प्रसंग को लंकाकाण्ड में बताया गया है. यह केवल प्रसंग मात्र ही नहीं बल्कि अधर्म और असत्य पर धर्म और सत्य की जय के रूप में आज भी दीपावली के रूप में संपूर्ण भारतवर्ष में मनाया जाने वाला त्यौहार है.

तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस का अनुपम शैली में दोहों, चौपाइयों, सोरठों तथा छंदों का आश्रय लेकर वर्णन किया है. इसमें कुल श्लोकों की संख्या – 24000 है. कुल सर्ग – 500, कुल चौपाइयाँ – 4608, कुल सोरठों की संख्या – 208 तथा कुल छंदों की संख्या – 86 है. इसमें 12800 पंक्तियां हैं जो 1073 दोहों में विभाजित हैं. श्रीरामचरितमानस गेय शैली में है. इसकी चौपाइयों में सनातन धर्म दर्शन की गूढ़ता है और प्रभु श्रीराम के प्रति भक्ति एवं समर्पण है.

श्रीरामचरितमानस की भाषा के बारे में विद्वान एकमत नहीं हैं. कोई इसे अवधी मानता है तो कोई अवधी और भोजपुरी की मिली-जुली भाषा मानते हैं. रामचरितमानस की भाषा बुंदेली मानने वालों की संख्या भी कम नहीं है.

श्रीरामचरितमानस में भले रामकथा हो, किंतु कवि का मूल उद्देश्य राम के चरित्र के माध्यम से नैतिकता एवं सदाचार की शिक्षा देना रहा है. श्रीरामचरितमानस भारतीय संस्कृति का वाहक ही नहीं अपितु विश्वप्रसिद्ध आचारशास्त्र का बोधक महान ग्रंथ है. यह मानव धर्म के सिद्धांतों के प्रयोगात्मक पक्ष का आदर्श रूप प्रस्तुत करने वाला ग्रंथ है. गोस्वामी तुलसीदास जी ने स्वयं कहा है –

नाना पुराण निगमागम सम्मत यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्योऽपि
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ भाषा निबंधमति मंजुलमातनोति ॥

अर्थात् यह ग्रंथ नाना पुराण, निगमागम, रामायण तथा कुछ अन्य ग्रन्थों से लेकर रचा गया है और तुलसी ने अपने अन्तः सुख के लिए रघुनाथ की गाथा कही है.

श्रीरामचरितमानस की लोकप्रियता अद्वितीय है. उत्तर भारत में 'रामायण' के रूप में बहुत से लोगों द्वारा प्रतिदिन पढ़ा जाता है. शरद नवरात्रि में इसके सुंदरकाण्ड का पाठ पूरे नौ दिन किया जाता है. रामायण मण्डलों द्वारा मंगलवार और शनिवार को इसके सुंदरकाण्ड का पाठ किया जाता है.

गोस्वामी तुलसीदास जी का श्रीरामचरितमानस के माध्यम से प्रभु श्रीराम के जीवन द्वारा निसंदेह ही यह उद्देश्य रहा है कि तत्कालीन एवं आने वाले कई पीढ़ियों के जीवन में चाहे कितने भी संकट क्यों न आन पड़े उन्हें श्रीराम की भांति मर्यादा पुरुषोत्तम जैसे नायक की भक्ति मात्र ही नहीं अपितु उनसे प्रेरणा भी लेनी चाहिए.

“ गुड्डे – गुड्डी की शादी ”

जया
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/आरेख
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) कार्यालय

“माँ, मैं 10 मिनट में आ जाउंगी, एक बार देख कर आऊं सोनू-मोनू क्या कर रहे हैं ? ”

“अरे, वो अच्छे बच्चे हैं, अपना होमवर्क कर रहे होंगे. तुमने किया? ”

“मैंने तो कल रात ही ख़त्म कर लिया था और वो दोनों तो अभी नर्सरी में हैं, उनको कोई होमवर्क नहीं मिलता. आप न कुछ भी बोल देते हो. पता है, उनके पापा बहुत अच्छे हैं, उनके साथ गेम्स खेलते हैं. ”

दादी ये सब सुनकर मुस्कुरा रही थी, वो भी बोल पड़ी, “अरे तेरी दादी तो हमेशा तेरे साथ खेलने के लिए तैयार रहती है और तू है कि भागती रहती है. ”

“आप क्या खेलोगे मेरे साथ? मेरे पास तो बस एक गुड़िया है और एक कुत्ता है, नीलू अपना गुड्डा लेकर आएगी फिर हम लोग मिलकर कहानी-कहानी खेलेंगे. आप कुत्ते की आवाज़ देना, ठीक है ? ”

“देख बहू, तेरी बेटी मुझे हमेशा कुत्ता बनाती है और खुद बार्बी डॉल बनती है.”

माँ हँसती हुई अपना काम करती रही. वो हमेशा कुछ न कुछ करती ही रहती हैं, कभी मसाले पीस रही होती हैं, कभी सब्जी काट रही होती हैं, कभी कपडे फैला रही होती हैं, रोज एक से काम ही करती हैं और एक दादी हैं जो हमेशा बिस्तर पर ही रहती हैं, फिर भी हँसती रहती हैं. ये लोग क्यों कभी बोर नहीं होते?

मिनी दादी की गोद में आकर बैठ गई. “लता बुआ की शादी हुई थी तो कितना मज़ा आता था, हमलोग ढोलक बजाते थे, नाचते थे, कितने सारे लोग थे घर में. काश फिर जल्दी से किसी की शादी हो.”

“तेरी इस बार्बी डॉल की शादी करा देते हैं. ” दादी फिर हँसने लगी. वो बोलती कम और हँसती ज्यादा हैं.

“पर ये तो बहुत अच्छा आइडिया है. ये मैंने क्यों नहीं सोचा. दादी आप बहुत अच्छी हो, आप मेरी बेस्ट फ्रेंड हो. ” मिनी दादी से लिपट गई.

दादी के नीरस जीवन में कितने रंग भरती थी मिनी. उसके साथ वो अपनी सारी स्वास्थ्य समस्याएं भूल कर, स्वयं को भी उसके उम्र में ढाल लेती थी. उनसे बात करने का समय बड़ों को तो जैसे कभी मिलता ही नहीं था, एक मिनी ही थी जो उन्हें इतना महत्व देती थी. उन्होंने मिनी को गले लगाए रखा जब तक वो छुड़ा कर भाग न गई. मिनी दौड़ती हुई रसोई में जाकर माँ को सूचना दे आई कि वो ब्याह रचाएगी अपनी गुड़िया का नीलू के गुड्डे के साथ.

मिनी इतनी उत्साहित हो गई कि दौड़ती हुई सीधा नीलू के घर चली गई. माँ रुकने के लिए बोलती रह गई. नीलू आलू के पराठे खा रही थी, पर मिनी के मुँह में पानी तक नहीं आया. उसने फटाफट अपनी योजना बताई, नीलू भी ख़ुशी से झूम उठी.

शाम तक मिनी ने विवाह समारोह की पूरी योजना बना ली. बस दो हफ़्ते का समय था. दादी ने सुई-धागे से शादी का जोड़ा सिल दिया उसकी गुड़िया के लिए. मिनी खुद भी उस दिन नए कपड़े पहनने वाली थी, उसकी खरीदारी भी हो गई. कुल मिलाकर 25 बच्चों को शादी का न्योता देना था, कार्ड मिनी और नीलू ने मिल कर बनाए और कॉलोनी में घर-घर जा कर दे आए. स्कूल के दोस्तों को फ़ोन करके बुलाया. सभी बच्चों ने जम कर नाच-गाना किया और नीलू और मिनी ने गुड्डे-गुड्डी से जब जयमाला की रस्म करवाई, तो बच्चों के साथ बड़ों ने भी खूब तालियां बजाई. फिर सब लोगों ने दावत का खाना खाया जो नीलू की मम्मी और मिनी की माँ ने मिल कर बनाया था. मिनी बहुत थक गई थी और उसे मालूम ही नहीं चला कि वो कुर्सी पर बैठी-बैठी सो गई है.

सुबह जब सो कर उठी तो अपनी बार्बी डॉल को ढूंढने लगी. “ दादी , आपने जेन्नी को देखा क्या ? कल के शादी वाले खेल के बाद कहाँ रख दिया उसको ? ”

“जेन्नी गई अपने ससुराल, और तू इतने सवेरे-सवेरे कैसे उठ गई? ”

“ आप वो सब छोड़ो न, बताओ न...कहाँ है जेन्नी ? ” मिनी रुआंसी हो चुकी थी.

“अरे जैसे तेरी लता बुआ शादी के बाद ससुराल चली गई, उसी तरह जेन्नी भी ससुराल चली गई. और एक दिन तू भी चली जाएगी. ” दादी मिनी को प्यार से गले लगाते हुए बोलीं. पर मिनी ने तुरंत ही उनका हाथ अपने ऊपर से हटा लिया.

“पर मेरी डॉल हमेशा मेरे पास रहती है, किसी ने वहां उसे तोड़ दिया तो. नीलू के रिश्तेदारों में इतने बच्चे हैं, सब बड़े शैतान हैं, मेरी डॉल को ख़राब कर देंगे. ”

मिनी दौड़ती हुई गई और कुछ ही देर बाद रोती हुई वापस आई. माँ को ढूंढती हुई छत पर गई. वहां वो कपड़े सूखने को डाल रही थीं. मिनी बस उनसे जा कर लिपट गई, उनकी साड़ी में मुहँ छुपा कर रोती रही.

“क्या हुआ बेटा, बताओ मुझे. ऐसे रोते नहीं. मैं सब ठीक कर दूंगी, पहले तुम बोलो तो. ”

“वो, वो नीलू डॉल नहीं दे रही मुझे. अब वो उसकी डॉल हो गई. मुझे पता होता तो मैं कभी ये खेल नहीं खेलती. मुझे दिला दीजिए न मेरी डॉल प्लीज़.... प्लीज. ”

माँ मिनी की ज्यादातर बातों पर ध्यान नहीं देती थी, कई बार मिनी नीलू से झगड़ कर रोती थी पर माँ हँसी उड़ा कर कहती थी, “देखना कल फिर दोनों में दोस्ती हो जाएगी, मैं नहीं पड़ने वाली तुम सहेलियों के अनबन में. मेरे पास मत आओ रोते-रोते. ”

पर आज, माँ ने बहुत स्नेह से मिनी के सर पर हाथ फेरा और बोला कि वो स्वयं नीलू की मम्मी से बात करेंगी. मिनी को माँ का साथ पाकर बहुत अच्छा लगा. उधर माँ नीलू के घर गई और इधर मिनी अधीर होकर उनकी प्रतीक्षा करने लगी.

माँ ने नीलू की मम्मी को पूरी बात बताई. उन्होंने भी अपनी परेशानी साझा की.

" मैंने तो इतना सोचा ही नहीं था कि बच्चों का खेल इतनी चिंता का कारण बनेगा. मेरी सासू माँ ने नीलू को ये पाठ पढ़ाया कि शादी के बाद लड़की लड़के के घर की हो जाती है तो अब गुड्डी नीलू की. मैंने सोचा बस मज़ाक हो रहा है पर नीलू ज़िद पकड़ कर बैठ गई है. दोनों कितने दिन इस बात पे अब रूठा-रूठी करेंगे. "

"इनकी रूठा-रूठी तो वैसे भी चलती रहती है पर आज मैंने हस्तक्षेप इसलिए किया क्योंकि उनके मन पर इन सब का गलत प्रभाव पड़ रहा है. इनका बचपन समाज की रूढ़िवादिताओं से मुक्त होना चाहिए."

माँ और नीलू की मम्मी ने मिलकर नीलू को मना लिया. फिर तीनों मिलकर मिनी से मिलने आए. नीलू के हाथ में उसका गुड्डा और मिनी की गुड्डी थी. मिनी देखते ही कूद कर गई, "जेन्नी, कितना याद किया मैंने. नीलू तुम बहुत अच्छी हो, अपना गुड्डा भी लेकर आई हो. कितने अच्छे लग रहे हैं दोनों. चलो खेलते हैं. माँ, हम खेल सकते हैं न अभी?"

"हाँ बिलकुल." माँ मुस्कुराई और रसोई में चाय बनाने चली गई. पीछे-पीछे नीलू की मम्मी भी चली गईं.

नीलू ने बताया कि ये तय हुआ है कि गुड्डा-गुड्डी एक दिन नीलू के घर रहेंगे तो अगले दिन मिनी के, और दोनों की सुरक्षा की जिम्मेदारी उन दोनों की.

दादी सब सुन रही थी और अब उनसे रहा न गया, उन्होंने कटाक्ष किया.

"आज कल की पीढ़ी को परम्पराओं, रीति-रिवाजों से कोई सरोकार नहीं, बस अपनी मनमानी करनी है. अब भगवान ही भला करे."

उनको चाय की प्याली थमाती हुई माँ ने विनम्रता से उनकी बात का खंडन किया.

"जिस प्रकार हर पीढ़ी पिछली पीढ़ी से विकसित हो रही है, उसी प्रकार परम्पराएं भी धीरे-धीरे विकसित होती रहेंगी."

माँ

करमजीत कौर
कार्यालय अधीक्षक
यांत्रिक विभाग/प्र.का.

माँ कहाँ पर है तू आज और किस हाल में है,
कभी तो सपनों में मिलकर अपनी झलक दिखा।

मेरे साथ हमेशा रहेगी कहा करती थी तू,
क्यों मझदार में ही छोडकर चली गयी तू।

माँ सच कहूं तू बहुत याद आती है मुझे,
माँ बहुत याद करती हूं मैं हमेशा तुझे।

तेरी डांट में भी प्यार भरा हुया था इतना,
औरों के प्यार में भी कपट भरा है कितना।

तेरे बिछडने के ख्याल से ही अंदर तक टूट जाती थी मैं,
अभी केसै तेरे बिना जी रही हूं जरा आकर तू देख मुझे।

बाहर जाकर घर लौटने का मन नहीं करता मेरा
वापिस आने पर खाली रहेगा वो आँगन तेरा ।

हमेशा मेरा वजूद और परछाई थी तू माँ,
तेरे बिना कोई नही जहाँ पर अब मेरा माँ।

जब मिलूंगी खुदा से तो पूछूंगी उस से
क्या माँ खोने का दर्द मालूम है उसे।

तू ही लेकर आई थी मेरे को इस दुनिया में माँ
कहां छोडकर मुझे चली गई आज तू मेरी माँ।

तूने ही चलना सिखाया था मुझे माँ
कैसे जीतूं तेरे बिन जिंदगी की रेस।

तेरे आँचल से ही तो बंधी रहती थी मैं माँ,
किस ओर जाएगी अब मेरी जिंदगी की डोर।

सूरदास कृत सूरसागर की समीक्षा

ललिता एन सायन्ना
कार्यालय अधीक्षक
यांत्रिक विभाग/प्र.का.

आचार्य रामचंद्र शुक्लजी के शब्दों में सूरदास

”सूर सूर तुलसी ससि उडुगन केशवदास।
अब के कवि खद्योत सम जहँ तहँ करत प्रकाश

जन्म - महाकवि सूरदास जी का जन्म 1478 ई में रुनकता क्षेत्र में हुआ था. सूरदास के पिता, रामदास सारस्वत प्रसिद्ध गायक थे. सूरदास के जन्मांध होने के विषय में अनेक मत है, प्रारंभ में सूरदास आगरा के समीप गऊघाट पर रहते थे. वहीं उनकी भेंट वल्लभाचार्य से हुई और वे उनके शिष्य बन गए. वल्लभाचार्य ने उनको पुष्टिमार्ग में दीक्षित कर के कृष्णलीला के पद गाने का आदेश दिया. सूरदास की मृत्यु गोवर्धन के निकट पारसैली ग्राम में 1583 ई. में हुई.

सूरदास का साहित्यिक परिचय- उनकी प्रमुख रचनाएं सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर सारावली, नल दमयंती आदि. भक्ति काल के अष्ट सखा कवियों में सबसे प्रसिद्ध कवि एंवम सगुण कृष्ण भक्त थे. उनके काव्य में भक्ति-भावना, प्रेम, वियोग, श्रृंगार रस का सजगता से चित्रण मिलता है.

सूरसागर – परिचय प्रधान एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ.

श्रीमदभागवत गीता पर आधारित है. इस मे एक लाख से अधिक पद है. लेकिन वर्तमान संस्करणों में लगभग 10,000 पद ही उपलब्ध है. प्रथम प्रकाशन नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वार किया गया. इस मे कुल बारह अध्याय है. प्रथम नौ अध्याय संक्षिप्त है. दसवां अध्याय बहुत विस्तृत है. दसवें अध्याय में भक्ति की प्रधानता है. दो प्रसंग कृष्ण की बाल-लीला और भ्रमर गीत अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है.

सूरसागर में वात्सल्य - रस

वात्सल्य रस सूरदास का प्रिय रहा है और उन्होंने अपने संपूर्ण काव्य में इसका बार – बार उपयोग किया है. वात्सल्य – रस के अप्रतिम उदाहरण **....**

मैय्या मोरी मैं नहीं माखन खायो
भोर भयो गैंयन के पीछे, मधुबन मोहि पठायो ...

श्रीकृष्ण यशोदा से बोले, “मैया! मैंने मक्खन नहीं खाया है. ये सब सखा मिलकर मेरी हँसी कराने पर उतारु हैं, इन्होंने उसे मेरे मुख में लिपटा दिया है. तू ही देख ! बर्तन तो छींके पर रखकर ऊँचाई पर लटकाए हुए थे. मैं कहता हूँ कि अपने नन्हें हाथों से मैंने उन्हें कैसे पा लिया?”यों कहकर मुख में लगा दही मोहन ने पोंछ डाला और चतुराई से मक्खन भरा दोना पीछे छिपा दिया. माता यशोदा ने पुत्र की बात सुनकर छड़ी रख दी, और मुस्कराकर श्रीकृष्ण को गले लगा लिया.

सूरदास जी कहते हैं कि प्रभु ने अपने बाल विनोद के आनंद से माता के मन को मोहित कर लिया. इस बाल क्रीडा और माता से डरने में उन्होंने भक्ति का प्रताप दिखाया. माता यशोदा को जो यह श्रीकृष्ण के बाल विनोद का आनंद मिल रहा है, उसे तो शंकर जी और ब्रह्मा जी भी नहीं पा सके.

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ
मोसौं कहत मोल कौ लीन्हौ, तू जसुमति कब जायौ?

श्री कृष्ण कहते हैं, “मैया ! दाऊ ने मुझे बहुत चिढ़ाया है. मुझसे कहते हैं तू मोल लिया हुआ है, यशोदा मैया ने भला मुझे कब उत्पन्न किया.” क्या करुँ, इसी क्रोध के मारे मैं खेलने नहीं जाता. वे बार-बार कहते हैं. “तेरी माता कौन है? तेरे पिता कौन है? नंदबाबा तो गोरे हैं, यशोदा भी गोरी है, तू साँवले रंग वाला कैसे ?” छुटकी देकर फुसलाकर ग्वाल-बाल मुझे नचाते है, फिर सब हँसते और मुस्कराते है. तूने तो मुझे ही मारना सीखा है, दाऊ दादा को कभी डाँटती भी नही. सूरदास कहने हैं मोहन के मुँह से गुस्से भरी बातें बार-बार सुनकर माता यशोदा जी अंदर-ही-अंदर खुश हो रही हैं. वे कहती हैं, कान्हा ! सुनो, बलराम तो चुगलखोर है, वह जन्म से ही धूर्त है. सूरदास कहते हैं कि माता यशोदा अपने बालक श्रीकृष्ण को विश्वास भरे शब्दों में कह रही हैं कि ”कृष्ण, मुझे गायों की शपथ, मैं ही तुम्हारी माता हूँ. और तुम मेरे बेटे हो.

मैया कबहुं बढैगी चोटी
किती बार मोहि दूध पियत भइ यह अजहूं है छोटी

श्री कृष्ण यशोदा से कहते हैं- मैया! मेरी चोटी कब बढ़ेगी? मुझे दूध पीते कितना समय हो गया है, पर यह तो अब भी छोटी ही है. तू जो यह कहती है कि दाऊ भैया की चोटी के समान यह भी लंबी और मोटी हो जाएगी और कंघी करते-गूँथते तथा स्नान कराते समय सर्पिणी के समान भूमि तक लोटने लगेगी. तू मुझे बार-बार आग्रह करके कच्चा दूध पिलाती है, मक्खन रोटी नहीं देती. “सूरदास जी कहते हैं कि बलराम-घनश्याम की जोडी अनुपम है, ये दोनों भाई चिरंजीवी हों.”

सूरसागर में भक्ति - भाव

सूरदास भक्ति में अपार विश्वास रखते थे. उनका प्रभु के चरणों में सर्वरुपेण समर्पण था. कुछेक स्थानों पर अतिशयोक्ति की पराकाष्ठा का चित्रण किया गया है. प्रभु भक्ति के साकार और निराकार दोनों रुपों को प्रधानता दी गयी है.

भक्ति-भाव का अत्यंत लोकप्रिय पद -

चरन कमल बंदौ हरि राई ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै आंधर कों सब कछु दरसाई॥
बहिरो सुनै मूक पुनि बोलै रंक चले सिर छत्र धराई ।
सूरदास स्वामी करुनामय बार-बार बंदौं तेहि पाई ॥

सर्वेश्वर श्री हरि के चरणकमलों की मैं वंदना करता हूँ. जिनकी कृपा से पंगु भी पर्वत को पार करने में समर्थ हो जाता है, जिनकी कृपा से अंधे को सब कुछ दीखने लगता है, जिनके अनुग्रह से बहरा सुनने लगता है और गूँगा बोलने लगता है. जिनकी कृपा से अत्यंत कंगाल भी सिर पर छत्र धारण करके चलने वाला नरेश हो जाता है. सूरदास कहते हैं कि मैं अपने उस करुणामय स्वामी के चरणों की बार-बार वंदना करता हूँ.

निराकार भक्ति का उत्तम उदाहरण...

अबिगत गति कछु कहति न आवै।
ज्यों गूंगो मीठे फल की रस अन्तर्गत ही भावै॥
परम स्वादु सबहीं जु निरन्तर अमित तोष उपजावै।
मन बानी कों अगम अगोचर सो जाने जो पावै॥

सूरदास जी कहते हैं कि निर्गुण ब्रह्म का वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। उसकी स्थिति के विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। निर्गुण ब्रह्म की उपासना का आनन्द किसी भक्त के लिए उसी प्रकार

अवर्णनीय है, जिस प्रकार गूंगे के लिए मीठे फल का स्वाद. जिस प्रकार गूंगा व्यक्ति मीठे फल के स्वाद को कहकर नहीं प्रकट कर सकता, वह मन-ही-मन उसके आनन्द का अनुभव किया करता है, उसी प्रकार निर्गुण ब्रह्म की भक्ति के आनन्द का केवल अनुभव किया जा सकता है, उसे वाणी द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता. यद्यपि निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति से निरन्तर अत्यधिक आनन्द प्राप्त होता है और उपासक को उससे असीम सन्तोष भी प्राप्त होता है.

सूरसागर में भ्रमरगीत

सूरसागर का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है. इसमें कृष्ण द्वारा अपने समान दिखने वाले मित्र उद्धव को गोपियों को मनाने भेजना, गोपियों को कृष्ण–प्रेम भुलाकर निराकार प्रेम में ढलने का ज्ञान देना आदि का चित्रण है. गोपियों द्वारा श्रीकृष्ण को रस पीकर उड़ जानेवाले भंवरा बताकर उलाहना देना तथा उद्धव को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से लज्जित करने का अत्युत्तम वर्णन है.

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी …
आए जोग सिखावन पांडे …

गोपियाँ व्यंग्य कहती हैं कि हे उध्दव, तुम्हीं सबसे अच्छे और भाग्यशाली हो जो समस्त प्रेमसूत्रों से अनासक्त हो और किसी में भी तुम्हारा मन अनुरक्त नहीं है. तात्पर्य यह है कि तुम अत्यंत अभागे हो जो प्रेम-रस को नहीं समझते. तुम्हारी दशा तो उस कमल-पत्र की भाँति है जिसने जल के भीतर रहते हुए भी जल से अपने शरीर सदैव अलग रखा. आशय यह है कि तुम रहते तो श्रीकृष्ण के निकट हो, लेकिन उनके प्रेम से सदैब अनासक्त रहे.

यही नहीं, जैसे जल में तेल की गगरी को डुबा दिया जाए तो उस पर जल की एक बूँद भी नहीं रुकती. तुम प्रेम के संबंध में क्या जानो जब कि तुमने कभी न तो प्रेम की नदी में अपने पाँव को निमज्जित किया और न श्रीकृष्ण के सौंदर्य पराग में तुम्हारी दृष्टि ही अनुरक्त हुई. सूरदास के शब्दों में गोपियों का कथन है कि सबसे पगली और भोली-भाली हम अबलाएँ ही हैं जो गुड़ और चींटी की भांति श्रीकृष्ण की रुप-माधुरी में चिपट गईं. सूरसागर में काव्य सौंदर्य सभी अलंकारों का भरपूर उपयोग किया गया है. सभी पदों में समान पंक्तियां तथा तुकांत है. सरल, परिष्कृत, समर्थ और भावानुकूल भाषा है. अनुप्रास, रुपक, उत्प्रेक्षा और पुनरुक्ति का उत्तम उदाहरण है.

कहन लागे मोहन मैया मैया।
नंद राय सों बाबा अरु हलधर सों भैया।।
ऊंचे चढि चढि कहती जशोदा लै लै नाम कन्हैया।
दूर खेलन जिन जाहु लाला रे! मारैगी काहू की गैया।।

भाषा शैली संपूर्ण काव्य बृजभाषा में लिखा गया है. भक्त-हृदय के भावपूर्ण उद्गारों की सरस अभिव्यक्ति.सरल व भावानुकूल शब्दों का उपयोग तथा यदा – कदा संस्कृत भाषा के सरल शब्दों का भी उपयोग.दूसरे शब्दों में कहें तो सूरसागर महाकवि सूरदास द्वारा बृजभाषा में रचे गए कीर्तनों-पदों का एक सुंदर संकलन है, जो शब्दार्थ की दृष्टि से उपयुक्त और आदरणीय है.

सूरसागर की समालोचना -सूरसागर की सराहना करते हुए डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है – “काव्य गुणों की इस विशाल वनस्थली में एक अपना सहज सौन्दर्य है. वह उस रमणीय उद्यान के समान नहीं, जिसका सौन्दर्य पद-पद पर माली के कृतित्व की याद दिलाता है, बल्कि उस प्राकृतिक वन-भूमि की भाँति है, जिसका रचयिता रचना में घुलमिल गया है.”

सहज समीर

श्री जी.वी.माधव
निजी सचिव
परिचालन विभाग/प्र.का.

संजय को यह समझ नही आ रहा है की क्यों उनका बेटा राहुल कुछ अजीब स्वभाव से रह रहा है. वह अपने स्कूल में किसी से ज्यादा बात नहीं कर रहा था हलांकि वह नवीं कक्षा में पढ रहा था फिर भी साथी कक्षा अन्य़ सहचर बालकों से मिल जुल कर नहीं रह रहा था. अन्य बालकों की तरह वह मोबाइल या टी वी नहीं देखता था. इसी वजह से संजय को मन ही मन में उलझ रहा था. इसका कारण समझने के लिए हमें संजय के बचपन के बारे में जानना पडेगा.

संजय के पिताजी रामचंद्र एक सरकारी स्कूल में अध्यापक थे. संजय के साथ उनकी एक बेटी भी थी. संजय ने अपने पिताजी के स्कूल में ही बचपन से पढ़ाई की और इंजीनियरिंग करके एक बडी कंपनी में साफ्टवेयर इंजीनियर बन गया. संजय अपने पिताजी की वजह से पढाई में अच्छे अंकों से पास हुआ और इंजीनियरिंग कॉलेज में उसका एडमिशन हो गया. अपने पिताजी की संरक्षा में वह हर किसी क्षेत्र में अव्वल रहता था. खेलकूद में भी रुचि रखता था. रामचंद्र जी के संरक्षण में संजय हर क्षेत्र में माहिर था.

संजय की पढाई समाप्त होते ही कॉलेज में ही उसे बडे वेतन पर नौकरी मिल गई. मुंबई में नौकरी मिलने से वह पिताजी को छोड़कर चला गया और कुछ दिनों बाद शादी कर ली. कुछ वर्षों बाद संजय को अपनी पत्नी कोमल द्वारा राहुल पैदा हुआ और उसी समय उसे नौकरी के तरफ से अमेरिका जाना पडा. अपनी पत्नी कोमल को समझाकर संजय पत्नी को लेकर दो साल के लिए अमेरिका चला गया और अपने बेटे राहुल को उसके दादाजी के पास गाँव में छोड दिया. उस समय रामचंद्र जी को अपनी नौकरी के तीन साल वचे हुए थे.

जब रामचंद्र जी का पोता राहुल उनके साथ रहने के लिए आ गया. वे बहुत खुश हुए और जिस तरह अपने बेटे संजय को पाला उसी तरह राहुल को भी संभालने लगे. क्या अच्छा क्या बुरा समझाते रहे, राहुल को भी गाँव में अच्छा लगने लगा. गाँव का माहौल, खेत, तालाब और गाय बैल के साथ खेलकूद सब कुछ उसे अच्छा लगने लगा. दादा जी के साथ राहुल रोज स्कूल जाया करता था और वहाँ छोटी-छोटी कहानियों की किताबें पढना शुरु कर दिया.

इतने में संजय को अमेरिका में और तीन साल काम करने के लिए कहा गया और वह उसके लिए राजी हो गया. संजय और कोमल को दूसरी बार बेटी हुई और इधर राहुल पाँचवी कक्षा में पहुँच गया. राहुल अब ज्यादातर स्कूल के पाठ्यक्रम के अलाबा, साइकिल चलाना, नदी में तैरना और पतंग उडाना जैसे अन्य कलाओं में माहिर हो गया और उनके दादाजी रामचंद्र सेवा से रिटायर हो गए थे.

संजय का अमेरिका में प्रोजेक्ट खत्म होते ही वह अपनी पत्नी और बेटी को साथ लेकर वापस मुंबई पहुंच गया और राहुल को दादाजी के पास से वापस अपने पास ले आया. राहुल को मुंबई में एक अच्छे से स्कूल में एडमिशन करा दिया.

अब संजय धीरे-धीरे अपने बेटे राहुल पर ध्यान दे रहा था. इससे संजय को राहुल कुछ अलग सा लग रहा था. राहुल आजकल के बच्चों जैसा नहीं था. वह दूसरे बच्चों से ज्यादा बात नहीं करता था. मोबाइल फोन और टी.वी. पर उसका ध्यान नहीं था. कभी भी वह अपना मन अभ्यास में लगाये रहता था. इसी बात को संजय ने अपनी पत्नी कोमल से कहने पर उसने कहा कि यह तो मामूली बात है, राहुल उनके साथ तो ठीक था. और रोज स्कूल में जो बीत रहा है उन सब बातों को वह अपनी माँ को बताता रहता है.

एक दिन स्कूल के प्रिसिंपल ने संजय को फोन करके स्कूल आने को कहा. दूसरे दिन संजय कोमल को लेकर स्कूल पहुंच गये. तब प्रिसिंपल ने संजय और कोमल से कहा कि राहुल स्कूल में अध्यापकों को दुविधा जनक प्रश्न पूछ रहा है, और कहता है कि स्कूल की पढ़ाई का ढंग उसे पसंद नहीं है. राहुल स्कूल द्वारा आयोजित किसी भी कार्यक्रम में भाग नहीं लेता है और 15 अगस्त या 26 जनवरी और स्कूल के वार्षिक कार्यक्रम में भी भाग नहीं लेता है. फिर भी राहुल अपनी कक्षा में अच्छे अंकों से पास हो रहा है.

यह सब सुनकर संजय को आश्चर्य हुआ क्योंकि उन्होंने राहुल को इस नजर से कभी नहीं देखा. प्रिसिंपल ने यह भी कहा कि राहुल अगले साल दसवीं कक्षा में आ रहा है और जब वह अपने ढंग को न बदलने से पब्लिक परीक्षा में काफी कठिनाई होगी.प्रिसिंपल ने यह भी बताया कि राहुल कक्षा में दूसरे बच्चों से ज्यादा मिलनसार नही है और उसका पाठशाला में बर्ताव कुछ अलग सा है.

राहुल ने एक बार जब एक अध्यापक को स्कूल से निकाला गया तो वह तीन चार दूसरे विद्यार्थियों को साथ लेकर प्रिसिंपल सर से शिकायत की क्यों उस अध्यापक को निकाल दिया गया जो छात्रों को अच्छा पढ़ा रहे थे. उसी तरह एक अध्यापक ने लडकियों से बुरा व्यवहार किया तो उसके बारे में भी राहुल ने अपनी आवाज उठाई. इसलिए प्रिसिंपल ने संजय और कोमल को स्कूल में बुला कर इन सब घटनाओं को बताया.

तब संजय को समझ में आया कि राहुल में कोई कमी नहीं है. राहुल प्रश्न करने से डरता नहीं और जो गलती है उसके लिए वह आवाज उठाता है, तुरंत संजय ने प्रिसिंपल से कहा कि मेरे बेटे राहुल में कोई कमी नहीं है. उसमें गलती को पूछने की ताकत है.

संजय ने प्रिसिंपल से कहा कि अच्छा हुआ कि आपने मुझे स्कूल में बुलाकर राहुल के बारे में मुझे बता दिया. अब तक मैं समझ रहा था कि राहुल में कुछ कमी है, क्योंकि मैं राहुल को मेरे पिताजी के पास छोडकर विदेश चला गया था और मैं समझ रहा था कि राहुल पालन पोषण ठीक से नहीं हुआ यही समझ रहा था मैं अब मेरी आँखें खुल गई हैं. मेरे पिताजी जो खुद अध्यापक थे उनसे

यह गलती कभी नही हो सकती कि मेरा बेटा कुछ अलग सा है, वह तो एक सहज समीर है. सब कुछ समझ सकता है और जो गलत है उसके लिए वह लडता भी है.

जैसा कि आपने कहा कि राहुल ने 15 अगस्त या 26 जनवरी को या फिर कोई अन्य कार्यक्रम में भाग न लिया हो, मगर उसमें गलती को पूछने की ताकत है और उसी वजह से वह बडा होकर देश की गलती को सुधार करने में माहिर होगा. अगर राहुल का इस स्कूल में रहना आपको पसंद नहीं हैं, मैं तुरंत उसका तबादला करवाकर उसके ढंग का जीने की सुविधा दे सकता हूँ. राहुल को मैं एक सहज समीर मानता हूँ.

सोशल मीडिया और बाजारवाद रूपी ज़ोंबी

सतीश कुमार महतो
कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान कार्यालय

आज औद्योगिकीरण, वैश्वीकरण और बाजारवाद के कारण हम भौतिक दुनियां में विकास की ऊँचाइयों को छू रहे हैं. कंप्यूटर और इंटरनेट ने इसकी गति को और अधिक तीव्र कर दिया है. इसी विकास के क्रम में हम जहां भौतिक संसाधनों से भरे-पूरे हैं वहीं पारिवारिक और सामाजिक रूप से अकेले होते जा रहे हैं. शारीरिक उपस्थिति होने पर भी मानसिक अनुपस्थिति है. क्योंकि इस अकेलेपन को सोशल मीडिया और अन्य कई ऑनलाईन माध्यमों से पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं, पर इसका अनियंत्रित उपयोग और दुरुपयोग हमारे लिए खतरा बनता जा रहा है. इसके कारण मानव मन और मस्तिष्क नियंत्रण से बाहर होता जा रहा है. लगातार दो घंटे व्यर्थ और नकारात्मक कार्यों में लगे रहने से मन भारी हो जाता है और मस्तिष्क पर नियंत्रण कम हो जाता है. सकारात्मक ऊर्जा नष्ट होने लगती है. लगातार पाँच से सात दिन तक यही दिनचर्या बने रहने से मानसिक अस्थिरता होने लगती है और महीनों बाद इसका प्रभाव शरीर पर भी दिखने लगता है.

आज वैश्विक स्तर पर अधिकांश लोग औसतन प्रतिदिन 6 घंटे 40 मिनट स्क्रीन पर बिताते हैं वहीं अधिकांश भारतीय औसतन प्रतिदिन लगभग 8 घंटे स्क्रीन पर बिताते हैं. आज न केवल युवा बल्कि बच्चे और बुजुर्ग यहां तक कि पालतू पशुओं और पक्षियों को भी इसकी लत लग गई है. धीरे-धीरे यह हमारे समाज को खोखला कर रहा है. वास्तव में देखा जाए तो हमारा अपने बुद्धि और विवेक पर से ही नियंत्रण हटता जा रहा है. सोशल मीडिया, दिखावे की संस्कृति और बाजारवाद रूपी ज़ोंबी वायरस हमें एक तरह से ज़ोंबी बनाता जा रहा है. क्योंकि लगभग अधिकांश लोगों के लिए ये माध्यम भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवार आदि से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण बन गया है. इसके अभाव में लोग बेचैनी, तनाव, डिप्रेशन, खालीपन, अकेलापन, सूनापन जैसी स्थितियों का अनुभव करते हैं. आज लोग पूरी तरह से इस सोशल मीडिया का गुलाम हो चुके हैं या कहें तो इनसे ग्रसित हो चुके हैं.

हां यह सच है कि हममें से कई तो ज़ोंबी बन भी गए हैं. आज न चाहते हुए भी लोग ऑन स्क्रीन रहते हैं, अपने आप को इससे अलग नहीं कर पा रहे हैं. आप अपने आप को ही देख सकते हैं कितना समय आप ऑन स्क्रीन रहते हैं. कितना समय अपने आपको और अपने परिवार को देते हैं. आज परिवार के सदस्य एक साथ बैठ कर भी ऑन स्क्रीन रहने के कारण एक दूसरे से अलग रहने लगे हैं. व्यक्ति अपने परिवार और समाज से कटता जा रहा है एवं अपना एक काल्पनिक संसार बनाता जा रहा है जो उसे धीरे-धीरे ज़ोंबी में बदलता जा रहा है. लोगों को फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, वाट्सप, स्नैपचैट, ट्विटर, मैसेंजर, टेलीग्राम आदि ने अपने नियंत्रण में कर लिया है.

Steve Jobs कहते हैं- “Your time is limited, so don’t waste it living someone else’s life. Don’t be trapped by dogma- Which is living with the result of other people’s thinking.” वहीं हम अधिकांश समय सोशल मीडिया पर बीता कर न जाने क्या प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं. कौन से भ्रम में जी रहे हैं और जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा व्यर्थ ही गवा रहे हैं.

वहीं बाजारवाद के इस दौर में लोग इस तरह फंस गए हैं कि वे सही गलत की पहचान नहीं कर पा रहे हैं और अपनी आवश्यकता को भी नहीं समझ पा रहे हैं. दिखावे में फंस कर अनावश्यक चीजों

का ढेर जमा करना, आवश्यकता से अधिक चीजों का अंधा-धुंध उपयोग करना, महंगे से महंगे साधनों का जमावड़ा लगाना आदि प्रवृति लोगों में आम हो गई है. यहां हम अपनी इच्छा से न कुछ देख और न कुछ कर पा रहें है. हमें यह भ्रम है कि हम सब कुछ खुशी और सुख के लिए अपनी आवश्यकता और इच्छा से कर रहे हैं. बल्कि सच्चाई यह है कि हमारे खाने-पीने, पहनने, खरीदने, घूमने आदि सभी प्रकार की चीजों पर बाजार का नियंत्रण है. हम बस सोशल मीडिया और बाजार का गुलाम बन गए हैं.

परिणामतः आज लगभग संपूर्ण विश्व में एक नई महामारी फैल रही है, जो हमारे विवेक और बुध्दि पर अपना नियंत्रण कर रही है. जिसे हम सोशल मीडिया और बाजारवाद का ज़ोंबी कह सकते हैं, जो हमें तेजी से शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक आदि रुपों से बीमार करता जा रहा है. यह आज न केवल हमारे लिए खतरा है बल्कि भविष्य में संपूर्ण मानव जाति के अस्तित्व के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है, जिस पर प्रत्येक व्यक्ति को गंभीरता से विचार करना अति आवश्यक है और अभी से नियंत्रण करना जरूरी है.

'पूस की रात ' में किसान

पूजा कुमारी साव
पत्नी सतीश कुमार महतो
कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान कार्यालय

प्रेमचंद हमारे हिंदी साहित्य के वो रत्न हैं जिन्होंने हिंदी साहित्य के कथा जगत को अपने प्रकाश से प्रकाशित किया। लोकप्रियता में तुलसी के बाद सर्वाधिक महत्व इन्हें ही मिला। प्रेमचंद की रचनाएं/कथा साहित्य उत्कृष्ट, विपुल, और विराट हैं जो हमारे अंतः करण को मानवीय संवेदनाओं से उदात्त और परिपूर्ण कर एक विस्तृत फलक प्रदान करती हैं। प्रेमचंद आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी लेखक हैं पर उनकी कुछ रचनाएं केवल यथार्थवादी ही हैं। प्रेमचंद ने किसानों के बीच रहकर उनकी वेदना को अनुभूत करके उसे व्यक्त किया है। उपन्यास हो या कहानी सब में सामाजिक यथार्थ, विषमता, समस्या आदि का पुट है। चाहे ' गोदान' उपन्यास हो या 'पूस की रात', 'सवा सेर गेहूँ ' या फिर 'कफ़न' या अन्य किसान संबंधी रचनाएं सबमें बड़ा ही कारूणिक, दर्दनाक, यथार्थपूर्ण चित्रण किया है जो दर्शनीय है। प्रेमचंद किसानों का प्रतिनिधित्व ही नहीं करते बल्कि स्वयं को उस स्थान पर स्थापित भी करते हैं और स्वयं को मजदूर भी घोषित करते हैं। वे कहते हैं - "मैं एक मजदूर हूं। जिस दिन लिख न लूं , उस दिन मुझे रोटी खाने का कोई हक नहीं।" इससे पता चलता है कि वह किसानों की दयनीय स्थिति, वेदना,उन पर हो रहे शोषण आदि से कितने व्यथित थे।

'पूस की रात ' कहानी 1930 में लिखी गई। यह प्रेमचंद की संवेदनशील, मार्मिक, दयनीय, किसान वर्ग की यथार्थवादी कहानी है। इस कहानी द्वारा प्रेमचंद ने न जाने कितने हल्कू के यथार्थ को चित्रित किया है, जो सदियों से शोषित है कष्ट को गले लगा, गले का हार बना कर उसी को सच मान बैठा है। भारत में किसान होना किसान वर्ग के लिए किसी अभिशाप से कम नहीं है। किसान हम सबका पेट भरने के लिए अपने ही खेत को अपने ही खून से सींचता है और खुद को उसी मिट्टी में हर रोज मारता है जिसका अनाम हम बड़े मजे से खाते हैं।

'पूस की रात' में हल्कू, जो एक किसान है, पूरे किसान वर्ग का प्रतिनिधि है। किसान जीवन कितना दूभर रहता है, यह हम इस कहानी में भली-भांति समझ पाते हैं। मुन्नी उसकी पत्नी है। खेत जोत कर दिन-रात मेहनत करके भी उसका जीवन चक्र ठीक से नहीं चल पाता है, लोगों से उसे ऋण लेना पड़ता है उसके पास एक कंबल के लिए पैसे तक नहीं कि पूस के ठंड से बचने के लिए खरीद सके। तीन रुपये बहुत मशक्कत के बाद उसने बचाए भी तो सहना को ऋण चुकाने के लिए महंगू मांग बैठता है। मुन्नी खिसियाती भी है पर देने के लिए विवश है, नहीं तो अंत में यह कर्ज और उसका सूद मरने के बाद भी नहीं चुकता होगा । किसानों की दयनीय स्थिति का वर्णन इस कहानी के एक प्रसंग से हो जाएगा मुन्नी के कथन के द्वारा - "मैं कहती हूं तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर मर काम करो उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है । पेट के लिए मजूरी करो । कैसी खेती से जान आए। "

मुन्नी का कथन कितना सार्थक जान पड़ता है कि एक व्यक्ति भोर होने से पहले खेत में पहुंचकर परिश्रम करे, देर शाम तक मुंडे पर बैठे अपने पेट के खातिर मजदूरी करे और उसका नतीजा उसका परिणाम उसे इतनी दयनीय स्थिति से चुकाना पड़े, इससे भला तो खेती छोड़ देना है। इसी प्रकार के अनेक प्रसंग हम गोदान में भी देख सकते हैं- "कौन कहता है हम आदमी हैं। हम में आदमीयत कहां?... हम लोग बैल हैं जोतने के लिए पैदा हुए हैं।" शोषण का इतना मार्मिक चित्रण हमें केवल प्रेमचंद के ही

कथा- कहानियों में मिल सकता है। भोला का होरी से यह कहना कितना सार्थक है और यह शोषण किसानों के संस्कार, रूढ़िवादिता और संगठन के अभाव के कारण है।

मुन्नी कहती है कि मजदूरी करो, खेती छोड़कर सुख से एक रोटी तो खा सकेंगे । किसी की धाक, धौंस, शासन, शोषण तो नहीं होगा । जमींदारों के शोषण तथा कर्ज से कोई उबर नहीं पाता, मुन्नी को यह अच्छे से ज्ञात है। किसान वर्ग का पुरुष स्त्री इस सत्य को जानते हुए भी एक अच्छे भविष्य की कल्पना कर तथा अपने जीवन में सुख भरने के लिए एवं एक अच्छे भविष्य की कल्पना और कामना कर लोभवश जमींदारों के प्रपंच में फंस कर रह जाते हैं तथा आमरण अपने को अपने परिवार को इस चक्की में पीसने के लिए मजबूर है । जमींदारों से कर्ज लेना किसानों को कितना महंगा पड़ता है यह बात 'पूस की रात' के साथ-साथ प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास में भी देखने को मिलता है तथा 'सवा सेर गेहूं' कहानी में भी शंकर द्वारा प्रेमचंद ने इस जमींदारी सिस्टम को बखूबी दिख लाया है। शंकर, होरी, हल्कू तीनों की स्थिति कमोबेश एक सी है। होरी का यह कथन- "कितना चाहता हूं कि किसी से एक पैसा भी कर्जना लूं लेकिन... पर भी गला नहीं छूटता।" " कर्ज वह मेहमान है जो एक बार आकर फिर जाने का नाम ही नहीं लेता।"

शोषण के इस सत्य को कौन झुठला सकता है? हल्कू भी उन्हीं किसानों का प्रतिनिधित्व करता है। ठण्ड के दिनों में हाड-मांस कंपाने वाली ठंड में खेत और खेती की रखवाली करने के लिए हल्कू के पास एक कंबल तक नहीं। हल्कू और उसकी पत्नी दोनों ने सोचा था इस साल एक कंबल खरीद सकेगा पर सामंती-पूंजीपति समाज ने उसका ऐसा शोषण किया है कि कर्ज में यह किसान ऐसे जकड़ा हुआ है कि कंबल के लिए उसके पास जो पैसे थे उसने उसे सहना को दे दिया ताकि ऋण चुक सके।

एक ओर जो सामाजिक जीवन का आधार किसान है जिसके पास एक कंबल खरीद सके ऐसी हैसियत तक नहीं गरीबी ने उसे किस कदर बेबस कर रखा है और वहीं दूसरी और पूंजीपति वर्ग,शासक वर्ग,शोषक वर्ग के पास पैसे हैं पर्याप्त संसाधन है यहां तक की वह समृद्ध, संपन्न, संसाधनों से लदे भरे पड़े हैं। उनके पास जीवन जीने के सारे संसाधनों का भंडार है। यही है आवारा पूंजीवाद का विकृत रूप। समाज में आर्थिक विषमता के कारण ही दिन-प्रतिदिन किसान,दलित,शोषित लोग आत्महत्या कर रहे हैं। ठंड में ठिठुरते हल्कू का यह कहना कि- " खेती का मजा है और एक-एक भगवान ऐसे पड़े हैं जिनके पास जाड़ा जाए तो गर्मी से घबराकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे,लिहाफ,कंबल मजाल है जाड़ा का गुजर हो जाए। तकदीर की खूबी है मजबूरी हम करें मजा दूसरे लूटे। "

होरी, हल्कू जैसे अरबों मजदूर ऐसे जीवन जीने के लिए मजबूर हैं। जहां जीवन भर शोषक, सामंती लोग हल्कू का शोषण करने बैठे हैं। कितने होरी और हल्कू और ना जाने कितने शंकर कर्ज लेकर खेती करते हैं, पर जो भी कमाते हैं, संजोते हैं, अपनी जरूरतों की पूर्ति हेतु पर जीवन भर कर्ज उतारते-उतारते और सूद भरते-भरते अपना सर्वस्व हल्कू जैसे किसान को लुटा देना पड़ता है,यहां तक कि खुद के जीवन तक को मिटा देना पड़ता है।

हल्कू का यह बयान बड़ा ही प्रशंसनीय है की " मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटे। " हल्कू भी होरी की तरह भाग्यवादी है होरी भी भाग्य तथा पूर्व जन्म के कर्म को ही जमींदार बनने का कारण मानता है। हल्कू को भी सारे संसाधनों की पूर्ति भाग्य की बात लगती है, ना कि उनके शोषण तंत्र का षडयंत्र। कितना मासूम है यह वर्ग भी, शोषण को महसूस करके भी सामंतों को भगवान का दर्जा और उनके अच्छे कर्म का फल सामंत बनना मानते हैं।

हल्कू जब खेत की रखवाली करता है तो ठंड से ठिठुरता है पर आग सेकने पर निश्चिंतता से सो जाता है। अन्य किसी बात का इल्म नहीं होता उसे। जबरा के भौंकने पर भी नहीं उठता नीलगाय खेत का सफाया कर देती है। जब सुबह आँख खुलती है तो मुन्नी कहती है सोते ही रहोगे सारे खेत का सर्वनाश हो गया है। अब मजबूरी से मालगुजारी भरना पड़ेगा। पर हल्कू खुश था मुन्नी के उदासी की एक भी छंटा उसे छू तक नहीं गई थी। हल्कू झूठ कहता है कि मेरा पेट दर्द कर रहा था। मैं पेट दर्द के मारे मर रहा हूं, मर कर बचा हूं और तुम्हें खेती की पड़ी है।

हल्कू का यह कहना कि- "रात की ठंडी में यहां सोना तो ना पड़ेगा।" किसानों के दर्दनाक स्थिति को जाहिर करता है। वह अनकही कथा को सामने रख देता है, जो कह कर नहीं जाता या जा सकता केवल महसूस किया जा सकता है।

निष्कर्ष स्वरूप या कहा जा सकता है कि प्रेमचंद एक सफल कहानीकार है। 'पूस की रात' कहानी एक सार्थक, सफल कहानी है, जिसमें वे 70 वर्ष से आजाद हुए हमारे देश भारत की स्थिति का चित्र खींचते हैं। किसान के मार्मिक जीवन का चित्र प्रस्तुत करते हैं। अंतर केवल देशी- विदेशी काले,गोरे का मिटा लेकिन शोषण नहीं। मुखौटा बदला है, अत्याचार, शोषण एक जैसा ही बना रहा। आज भी किसानों की स्थिति वैसी की वैसी है, और उनके जीवन को बदलने का जिम्मा भी उनके हाथों है जो शोषक है और जिन्हें यह तक मालूम नहीं कि धान पौधा है या पेड़, फिर आलू जमीन में उगते हैं या जमीन के नीचे आदि- आदि। इस प्रकार हम देख पाते हैं आज भी किसानों की स्थिति वैसी ही है और पता नहीं कब तक रहेगी ? किसान की जिंदगी उसी सूद और ऋण चुकाने में खत्म हो जाती है। उसी शोषण तंत्र के षड्यंत्र में फंसकर मिट जाती है और उसी में फंसकर मिट जाना किसानों की नियति बन गई है। कुछ भी परिवर्तित नहीं हुआ आज भी, बैंकों ने इन साहूकारों और महाजनों की जगह लो लिया है।

सच में प्रेमचंद किसानों, पददलितों के कवि हैं। वो किसानों की दयनीय स्थिति के साक्षी हैं जिसने उस स्थिति को झेला है महसूस किया है किसान जीवन व्यतीत कर के किसानों के बीच रहकर।

बाबू गुलाब राय का कथन बिल्कुल उपयुक्त होगा 'पूस की रात' के संदर्भ में प्रेमचंद के विषय में- "मुंशी जी किसानों के कवि हैं। उनके सुख-दु:ख में शरीक होकर उनके साथ रोने हंसने वाले सहृदय कवि हैं।"

मुन्नी की उदासी और हल्कू की खुशी प्रेमचंद की उदासी और खुशी जान पड़ती है। विरोधाभास पैदा तो करती पर दूसरी ओर यह यथार्थ भी जान पड़ती है।

गोदान का होरी, जहां मजदूरी को महत्व नहीं देता खेती ही उसके लिए सब कुछ है। उसके प्रति सम्मान है होरी के मन में पर वही हल्कू के सामने परिस्थितियां इतनी कठिन है कि वह मजदूरी को महत्व देता है। मान-सम्मान मर्यादा से महत्वपूर्ण अच्छा जीवन व्यतीत करना ही एकमात्र उपाय हल्कू समझता है चाहे खेती छोड़कर मजदूरी ही करनी पड़े। मजदूरी करके ही जीवन व्यतीत करना पड़े पर वह उसे सुखी तथा श्रेयस्कर लगता है। एक अच्छा जीवन जीने की लालसा हल्कू और मुन्नी में पर्याप्त मात्रा में है क्योंकि परिस्थिति ही ऐसी है जहां खेती से बेहतर उन्हें मजदूरी जान पड़ती है।

तेरा ख्याल

रोहित कुमार
तकनीशियन-2, यार्ड कार्यालय,
मालडिब्बा कारखाना, रायनपाडु

अक्सर घंटों बैठ जाता हूं मैं,
गालों पर रख अपना हाथ ।
फिर ख्यालों में उनके खो जाता हूं मैं,
किस्मत में है लिखा जिनका साथ ।।

क्या वो साथ निभायेगी ?
जिसे सोचता हूं मैं हर रात ।
फिर दुनियां में घट रही घटनाओं की
आ जाती है अचानक याद ।।

थोड़ा डरा सा.......थोड़ा सहमा सा,
हिम्मत करके सोचता फिर ।
कहीं मेरे साथ भी ऐसा ना हो ?
बहुतों की है जैसी तकदीर ।।

उसे पढ़ाना काबिल बनाना,
अनेकों ऐसी हैं इच्छाएं मेरी ।
पर इसके बाद क्या होगा ?
कैसे कर पाऊं समीक्षा तेरी ?

चंद पल यह सोच कर फिर भी,
कि तू औरों की जैसी नहीं होगी ।
करूंगा मैं तेरे सारे सपने पूरे,
परिणाम चाहे गलत या सही ।।

घर, परिवार और समाज,
सबको तुझसे अपेक्षा होगी ।
आना तो बस खरे सोना बनकर
भले थोड़ी और प्रतीक्षा होगी ।।

जल संकट की समस्या और समाधान

मृत्युंजय झा/तक-III
वरि.मंयांइंजी/डीजल/मौला-अली

जल प्रकृति द्वारा प्रदत्त एक ऐसी बहुमूल्य संपदा है जिसके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती चाहे वह कोई भी जीव हो जल के बिना रहना असंभव है, सभी जीवों पेड़ पौधों में भी पोषण के लिए जल की आवश्कता अति ही महत्वपूर्ण है । मानव के रूप में बौद्धिक विकास से परिपूर्ण होने के कारण हमारा नैतिक कर्तव्य और दायित्व है कि प्रकृति के इस अनुपम उपहार को इस प्रकार उपयोग और संरक्षित करें कि आने वाली पीढ़ियों के लिए यह अभिशाप न बन जाए. चूंकि हम जानते हैं कि आज जल का अधिकाधिक दोहन तथा अविवेकपूर्ण खर्च, जैसे औद्योगिक, रासायनिक कचरा, जल प्रदूषण आदि प्रमुख समस्याएं हैं, जो आने वाले समय में एक अभिशाप बन जाएगा । इस प्रकार हमें इसका उपयोग उचित सामंजस्यपूर्ण ढंग से करना चाहिए ताकि इसका सतत उपयोग हो सके । इस संबंध में रहीम के दोहे से सीख लेने की आवश्यकता है , जो कहते हैं –

"रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून ।
बिन पानी न उबरे मोती मानस चून ।।"

वे कहना चाहते हैं कि पानी के बिना सब कुछ सून है अर्थात् बेकार है, जैसे मनुष्य की प्रकृति मोती की चमक तथा चून का गुण ।

जल संकट की समस्या के कारण :

जल संकट की वर्तमान समस्या कहीं न कहीं कृत्रिम व अप्राकृतिक ढंग से खर्चे व लोगों की अविवेकपूर्ण गतिविधियों के कारण हुआ है जिसे निम्न बिंदुओं द्वारा समझा जा सकता है ।

1. **जल का अनुचित प्रयोग :** - जल के अनुचित प्रयोग तथा अविवेकपूर्ण ढंग से इसका अधिकाधिक दोहन इसका मूल कारण है, जैसे : वस्त्र धुलाई में अविवेकपूर्ण ढंग से अधिकाधिक जल बहाव । कृषि में गैर जरूरी तरीके से सिंचाई। जलस्रोतों, नलकूपों को खुला छोड़ देना, बाथरूम में नल टैप बंद न करना ।
2. **जल का संरक्षण नहीं करना :** - वर्षा से प्राप्त जल को टैंक अथवा तालाबों में विवेकपूर्ण ढंग से जमा नहीं करना. हम जानते हैं कि जल की कमी से जूझ रहे स्थिति में हमारा दायित्व है कि हम इस प्रकार जल जमा करें जिसे भविष्य में उपयोग किया जा सके, परंतु जानकारी के अभाव में तथा सरकार द्वारा कोई कठोर कानून दंडात्मक प्रावधान नहीं होने के कारण भी हम इस पर ज्यादा जागरूक नहीं हो पाते हैं ।
3. **वर्षा में कमी तथा ग्रीन हाउस प्रभाव और जल प्रदूषण :** प्रकृति से छेड़-छाड़ करना आने वाली पीढ़ी के लिए अत्यंत भयावह स्थिति उत्पन्न कर देगी. वनों की अंधाधुंध कटाई तथा औद्योगिक कल-कारखानों द्वारा अनुचित ढंग से नदी में प्रवाहित कचरे से प्रदूषण के कारण तथा ग्रीन हाउस गैसों का अधिकाधिक उत्सर्जन से भी हमारा पर्यावरण अत्यंत दुष्प्रभावित हुआ है । इसका परिणाम यह है कि समय से बारिश न होना, मानसून का सही समय पर नहीं आना जिससे फसल उत्पादन में कमी तथा इससे भुखमरी जैसी समस्या एवं पेय जल की कमी ।

प्रभाव : वर्षा की कमी से कृषि सिंचाई कम होगी जिससे फसल उत्पादन कम होगा इसके प्रभाव के रूप में जी. डी.पी. कम होगा, इससे अविकसित अर्थव्यवस्था बनेगी। हम जानते हैं कि पृथ्वी पर जल का भाग 30 प्रतिशत है, परंतु इसमें से पीने योग्य मात्र 3 प्रतिशत ही है, वो भी मानवों द्वारा अविवेकपूर्ण ढंग से समयोजन एवं उचित प्रबंधन न करने के कारण पेय जल की समस्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है

जल चक्र :

जल चक्र के माध्यम से हम इस बात को समझ सकते हैं कि नदी महासागरों द्वारा वाष्पित जल ही वायु एवं तापमान के प्रभाव से बादल बनने के परिणामस्वरूप वर्षा जल के रूप में पुनः धरती पर आता है, परंतु जब हम इसको उचित ढंग से भंडारण नहीं कर पाते हैं तो वह पुनः बिना उपयोग किए या तो वाष्पित होकर वायुमंडल में चला जाता है या नदी तालाब में जाकर प्रत्यक्ष रूप से हमारे उपयोगी नहीं हो पाता, चूंकि हम जानते हैं कि आज भारत के अधिकांश लोग पानी के लिए लंबी लाइन लगाकर इसे प्राप्त करते हैं जिससे उसके अधिकार एवं इसके उपयोग को लेकर घेरूलू हिंसा बढ़ने की ज्यादा संभावना रहती है, ऐसी स्थिति में जहां हमें इस जल का प्रयोग उचित सामंजस्यपूर्ण ढंग से करने की आवश्कता है वहीं इससे ज्यादा इसके भंडारण की आवश्यकता है।

4. **कृषि सिंचाई में जल का अविवेकपूर्ण उपयोग एवं गलत नीति :** जहां वर्तमान समय में लाखों लोग पानी की कमी की समस्या एवं प्रदूषित पानी पीने से बीमारी का शिकार हो रहे हैं वहीं दूसरी तरफ सिंचाई में अविवेकपूर्ण तरीके से सिंचाई की जा रही है। पानी को आवश्यकता से अधिक खेतों में बहा दिया जा रहा है , जो गंभीर चिंता का विषय है, इसके लिए आवश्यक है कि हमें अधिक से अधिक ऐसे फसल की पैदावार करनी चाहिए जो या तो कम पानी से ही उत्पादित हो या बिना पानी के भूमिगत जल का उपयोग करके वृद्धि करें, इससे हम पानी का बचाव कर सकते हैं जैसे फसल या नए वृक्षों को वारिश के मैसम में लगाएं जाए तो यह अच्छा विकल्प हो सकता है। पौधों में दोपहर की जगह सुबह शाम पानी डाला जाए। वर्षा के मौसम में खेतों में पानी की पर्याप्त उपलब्धता होने पर अत्यधिक सिंचाई नहीं की जाए, जल संसाधनों को संरक्षित रखा जाए, ताकि प्रति वर्ष जीरो ग्राउंड लेवल जो और नीचे जा रहा उसे कम किया जाय ताकि पानी आने वाली पीढ़ी के लिए भी बच सके।

जल संरक्षण के उपाय : -

इस प्रकार हम देखते हैं कि आज जल संरक्षण करना आवश्यक हो गया है, नहीं तो आने वाले समय में इसके और भी भयावह दुष्परिणाम देखने को मिल सकते हैं। अतः आज आवश्यक है कि सरकार द्वारा भी इसपर कठोर कानून व दंडात्मक प्रावधान करने की आवश्यकता है तथा कारखानों के लिए उचित कानूनी कारवाई की आवश्यकता है, जिसे वह औद्योगिक अवशिष्ट कचरे का उचित प्रबंधन करें न कि नदी तालाब में इसे प्रवाहित कर दी जाए, जिससे हम आने वाले समय में जल प्रदूषण की समस्या से बच सकते हैं तथा इस जल का पुनः चक्रण करके मानवीय उपयोग कर सकते हैं। इस प्रकार विज्ञापन, प्रचार, टेलीविजन, रेडियो, नाटक नुक्कडों के माध्यम से लोगों को जागरूक तथा प्रशिक्षित किया जाय ताकि लोग इसके प्रति सकारात्मक उपाय करेंगे जो सरकार द्वारा बताए जाए।

अतः आज जल की कमी तथा प्रदूषित जल पीने के कारण पूरे विश्व में साढ़े तीन करोड़ लोग प्रति वर्ष जान गंवाते हैं जो अत्यंत ही दुखद है। भारत समेत एशिया व अफ्रीका के कई देश इस प्रकार की गंभीर समस्या से जूझ रहे हैं। इस स्थिति में आवश्यक है कि न केवल किसी देश की सरकार के आंतरिक बल्कि वाह्य रूप से वैश्विक संस्थाओं द्वारा इसे गंभीरता से लिया जाय तथा इस प्रकार के भविष्य में होने वाली समस्याओं से निपटने की पूर्वगामी तैयारी की जाए। आज के समय में मानव स्वार्थपूर्ण ढंग से सोचने के बजाय समस्त जन कल्याण को ध्यान में रखकर इसका उपयोग करें। सही ही कहा गया है कि अगला विश्व युद्ध पानी को लेकर होगा, यह इस परिपेक्ष में सच मालूम पड़ता है। अतः हमेशा इसका उपयोग सामंजस्य एवं विवेकपूर्ण वैज्ञानिक तरीके से किया जाना चाहिए। इस प्रकार पानी बचाना तथा इसका विवेकपूर्ण उपयोग करना अत्यंत आवश्यक है, नहीं तो हम आने वाले समय में और अधिक भयानक स्थिति में पहुंच जाएंगे।

पितृ देवो भव

पी.श्रुति रानी
कनिष्ठ लिपिक, कार्मिक शाखा
मालडिब्बा कारखाना, रायनपाडु

पिता को भगवान का दूसरा रूप माना जाता है, सभी बच्चों के लिए पिता भगवान का दिया हुआ एक तोहफा होते हैं. वैसे ही मेरे जीवन में मेरे पिताजी जिन्हें मैं दोस्त भी मानती हूं, वे मेरे लिए एक वरदान हैं. मैं उनके बारे में जितना भी कहूं, वो कम ही है. मेरे पिता एक साधारण व्यक्ति, जिनकी तीन बेटियां होने के बावजूद उन्होंने बेटों जैसा हमारा पालन-पोषण किया. उनके लिए स्वयं के बारे में सोचने का मतलब अपने परिवार या बच्चों के बारे में सोचना ही है. मां बच्चों को जन्म देती है पर उन बच्चों को एक अच्छा नागरिक बनाने में पिता की भूमिका ही महत्वपूर्ण होती है. कहने का मतलब यह है कि मां जन्म देती है तो पिता पुनर्जन्म देता है.

बचपन से मेरे पिता ने मुझे हार न मानने और हमेशा हौसला बढ़ाते हुए आगे बढ़ने का ही मार्गदर्शन किया है. पिता से बढकर कोई दूसरा मार्गदर्शक नहीं हो सकता. हर बच्चा अपने पिता से ही सारे गुण सीखकर जीवन भर मजबूती से अपने आपको परिस्थितियों के अनुसार ढालने का काम करता है. बच्चों की सुंदर भविष्य की कामना करते हुए उन्हें बढ़िया से बढ़िया स्कूल, कॉलेज में पढाते हैं. हर एक पिता की अपनी जिंदगी में जो भी छूट जाता है, उसे वह अपने बच्चों को उपलब्ध कराकर उसी में अपनी संतुष्टि पाता है. मेरे पिता को मैंने उनके स्वयं के लिए कुछ खरीदना तो छोड़ो, स्वयं के बारे में सोचते हुए भी नहीं देखा.

उन्होंने हमेशा बहुत ही साधारण कपड़े, साधारण-सी चप्पल, केवल एक पुरानी साइकिल से अपना पूरा जीवन बिताया, परंतु हमें तो बेहतरीन सुंदर कपड़े, मुंह मांगी चीजें दिलाई और बड़े-बड़े महंगे स्कूल व कॉलेज में पढाया. हम तीनों बहनें जो भी मांगती थीं, तुरंत हमें दिलाते थे और हमारी अपनी खुशी में ही वे अपनी खुशी ढूंढ लेते थे.

जब हम असफल होते थे तो हमें डांटने के बजाय, ढाढ़स बंधाकर हमें आगे बढ़ने की ताकत और हौसला देते थे. इसीलिए शायद कहा जाता है कि सारी दुनिया जब आपको बेकार समझती है तब केवल पिता ही ऐसा व्यक्ति होता है जो हमें हिम्मत देते हुए आगे बढ़ाता है. उनकी हौसले भरी शाबाशी से ही हम लोग प्रोत्साहित होकर दोबारा कोशिश कर अंततः लक्ष्य प्राप्त करती थीं.

हमारे हर सुख-दुख में वे सदैव हमारा साथ देते थे. जिंदगी में संघर्ष के समय भी हमारे साथ रहकर सपनों को साकार करने का भरपूर धैर्य देते थे. उनका प्रेम, संवेदनशीलता और स्नेह हमें सुरक्षा का एहसास कराते थे. उन्होंने कभी किसी भी मामले में हमें नहीं टोका था. मैं अपने अनुभव बताती हूं कि उन दिनों में जब सरकारी नौकरी के लिए मैं तैयारी कर रही थी, तब मुझे बहुत ही प्रोत्साहित करते थे. मैं रात भर जाग कर पढ़ती और परीक्षा की तैयारी करती थी तो वे बार-बार उठ कर मुझे दरवाजे के कोने से देखते थे और काफी चिंतित होते थे कि ये इतनी मेहनत के चक्कर में अपनी सेहत खराब न कर ले. वे दूर से ही मुझे देखते थे लेकिन मेरे पास नहीं आते थे ताकि मुझे न लगे कि मेरी वजह से

उनकी नींद खराब हुई हो. लेकिन मैं भी उनकी ही बेटी हूं मुझे कैसे पता न चले कि मेरे पिता मुझे देख रहे थे. मैं उस समय तो चुप रह जाती थी लेकिन सुबह उठकर पूछती थी, “पापा आप मेरे लिए रात भर मत जागें, मुझे अच्छा नहीं लगता”. तब पापा बोलते थे कि बच्चे मंजिल पाने के लिए कठिनाइयों का सामना कर रहे हों और पिता को आराम की नींद कैसी आएगी ? उसी समय मैंने दृढ निश्चय कर लिया था कि जितनी भी मुश्किल क्यों न हो, मैं अपनी जिंदगी में कुछ न कुछ हासिल करूंगी और माता-पिता का सर गर्व से ऊंचा कर दिखाऊंगी.

कभी-कभी मेरी तैयारी के दौरान जब मैं सारी किताबें अपने टेबल पर फैला देती थी तब मेरे पिताजी आकर मुझसे बहुत ही नादानी से पूछते थे कि बेटा, इतनी मोटी-मोटी किताबें कैसे पढ़ रही हो ? तब मुझे उनमें एक बच्चा नजर आते था और मैं हँसकर बोलती थी कि मैं आपके लिए कुछ भी कर सकती हूं तो सिर्फ किताबें पढ नहीं सकती क्या? नौकरी पाने की तैयारी कुछ दिन से लेकर कुछ सालों तक चलती रही. मैं अपने आप में इतनी निराश हो चुकी थी कि जब भी मेरे पिता आकर किसी न किसी परीक्षा के परिणाम के बारे में पूछते तो उन पर बरस पडती थी और आखिर यह भी कह दिया था कि जब मेरे परिणाम आएंगे, मैं खुद आपको बताऊंगी आप बार-बार मुझसे मत पूछिएगा. मेरे गुस्से को देखकर पिताजी चुपाचाप चले जाते थे और देखो वक्त का खेल, जब बहुत सारी कठिनाइयों का सामना कर मैं परीक्षा में सफल हुई तब यह खुश-खबरी सुनाने के लिए मेरे पिता मेरे पास नहीं रहे. मेरे जीवन का अत्यंत मुख्य किरदार निभानेवाले मेरे पिता जिन्हें मेरी सफलता का बेसब्री से इंतजार था, वे बिना सुने ही मेरे जीवन और मेरी दुनिया से चले गए। आज भी हर दिन, हर पल उन्हें याद करती हूं और मेरी आंखें अपने आप भर जाती हैं. यह तो किस्मत का खेल है या मेरी बदनसीबी. मुझे पता नहीं लेकिन अब तक मैं इस बात को पचा नहीं पा रही हूं कि मेरे पिता अब नहीं रहे.

कैसे यह बात उन तक पहुंचे कि उनकी बेटी जिसके ऊपर उनका बहुत विश्वास था वो अभी सफल हुई है ? क्या सच में ऊपर से वे मुझे देख रहे होंगे ? अगर यह बात सच है तो मैं उन्हें जोर-जोर से चीख कर बताना चाहती हूं कि मैं उन्हें बहुत प्यार करती हूं और मेरे ऊपर जो उनका जो भरोसा था वो आज पूरा हुआ है. मैं उनके लिए बहुत कुछ करना चाहती थी लेकिन किस्मत का निर्णय कुछ और ही था, और वह मैं नहीं कर पाई. आज भी मुझे एहसास होता है कि वे दुनिया के किसी न किसी कोने से मुझे देखते होंगे जैसे कि वे मुझे दरवाजे के कोने से देखते थे. मैं हार नहीं मानूंगी. भले ही वे मेरे साथ नहीं है लेकिन उनका दिया हुआ हौसला और प्यार अभी मेरे पास है. मुझे और भी बहुत कुछ हासिल करना है और मेरे पास उनका आर्शीवाद है और मैं जरूर हासिल करके ही रहूंगी.

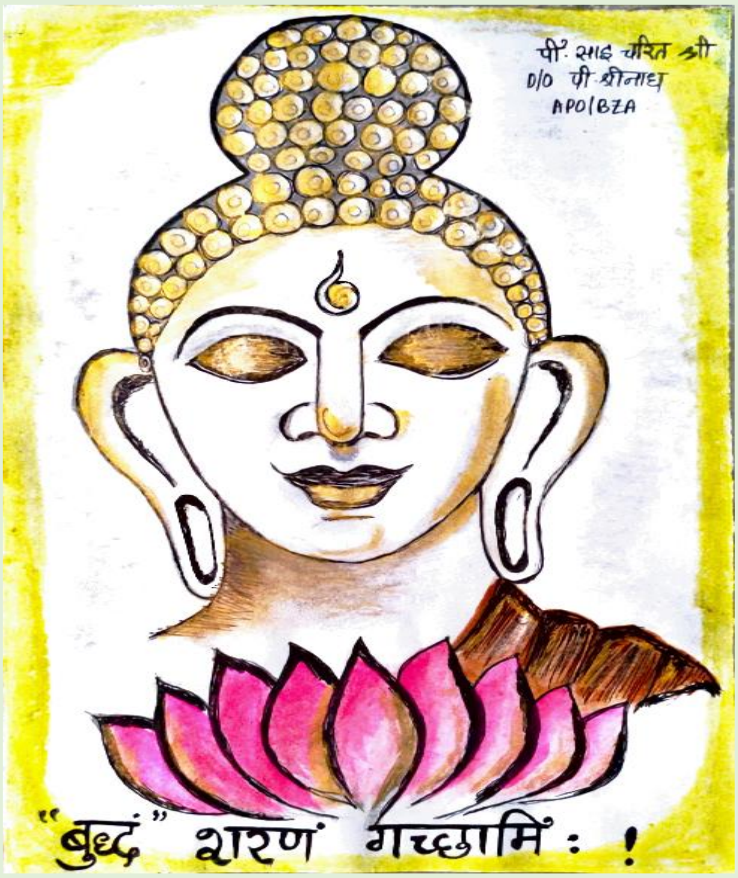
पी. साइ चरित श्री
D/O पी. श्रीनाध
APO/BZA
"बुध्दं" शरणं गच्छामि : !

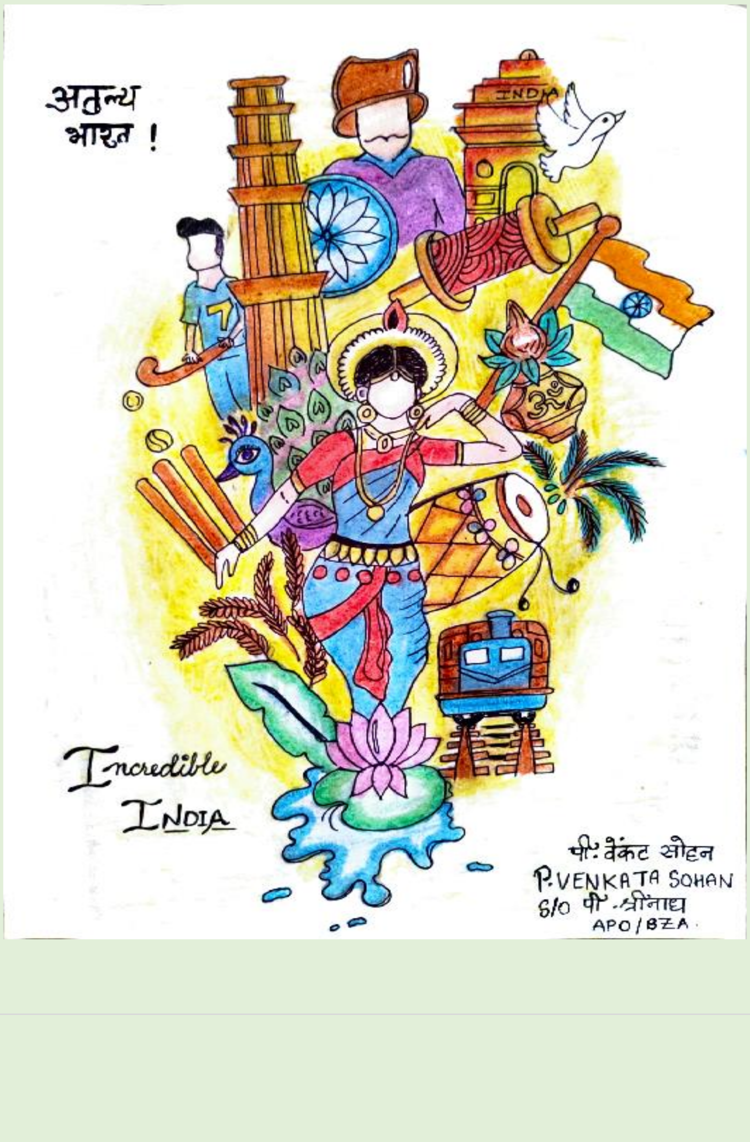
अतुल्य
भारत !
INDIA
Incredible
INDIA
पी. वेंकट सोहन
P. VENKATA SOHAN
S/O पी. श्रीनाध
APO/BZA.

श्री के.एन.वी.एम.रोहित
पुत्री के.वी.कोटिलिंगाचारी,
कनिष्ठ लिपिक
वमंविइंजी/विलोशे/का/
विजयवाडा

सुश्री अनामिका कुमारी
श्रीवास्तव
आश्रित गोपाल कृष्ण श्रीवास्तव
कनिष्ठ अनुवादक,
राजभाषा अनुभाग,
वमंकाधि/का/विजयवाडा

पर्यावरण हित गणेशा
Art by-
S. Bindu Sri
एस. बिंदु श्री

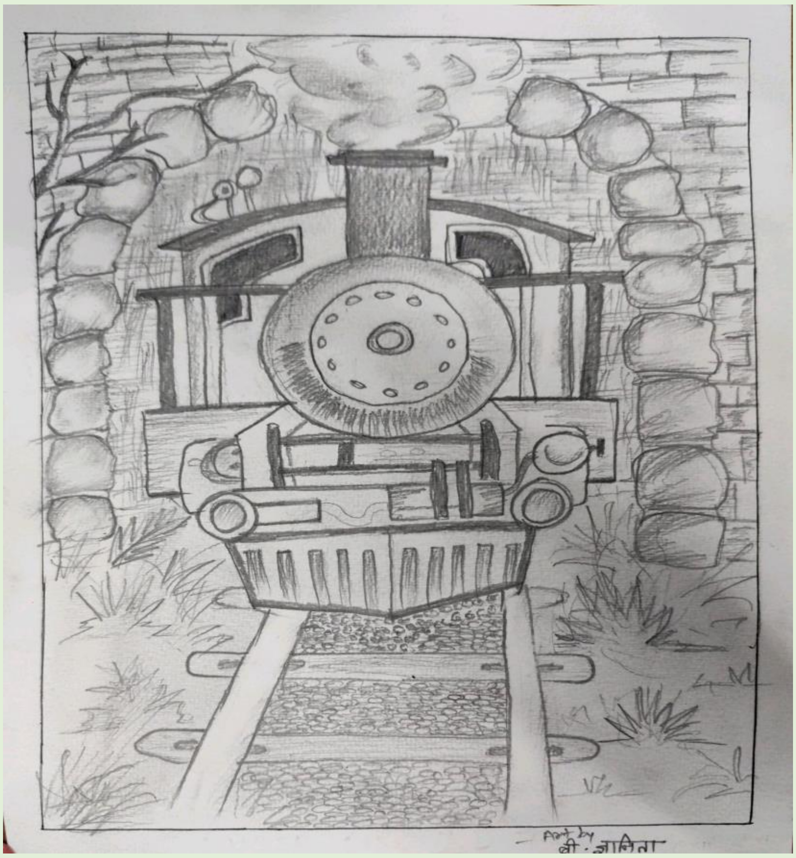

वर्ष के दौरान प्रधान कार्यालय, दक्षिण मध्य रेलवे की राजभाषा संबंधी गतिविधियां

हिंदी पखवाडा का आयोजन

मुख्यालय में 14 से 29 सितंबर, 2023 तक हिंदी पखवाडा का आयोजन किया गया. इस दौरान हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्न-मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. महाकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की जयंती मनाई गई. मुख्यालय के विभिन्न विभागों में कार्यरत कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. मुख्यालय के विभिन्न विभागों में राजभाषा संपर्क अभियान चलाया गया.

हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता

हिंदी कार्यशाला

महाकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जयंती

हिंदी प्रश्न-मंच प्रतियोगिता

पुरस्कार वितरण समारोह

महाप्रबंधक पुरस्कार वितरण

वर्ष के दौरान हिंदी में अधिकाधिक व प्रशंसनीय कार्य करनेवाले 07 अधिकारियों तथा 10 कर्मचारियों को 'महाप्रबंधक पुरस्कार योजना' के अंतर्गत पुरस्कार प्रदान किए गए.

राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार वितरण

वर्ष के दौरान हिंदी में सराहनीय कार्य करनेवाले 10 अधिकारियों व 100 कर्मचारियों को 'राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार योजना' के अंतर्गत पुरस्कार प्रदान किए गए.

प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण

क्षेत्रीय स्तर पर तथा मुख्यालय स्तर पर आयोजित हिंदी निबंध, वाक् तथा टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को तथा हिंदी पखवाडा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कार प्रदान किए गए.

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया. इस बैठक में अपर महाप्रबंधक, मुख्य राजभाषा अधिकारी, सभी प्रमुख विभागाध्यक्ष, संबंधित अधिकारी उपस्थित थे तथा अन्य मंडलों व कारखानों के प्रतिनिधियों ने ऑन लाइन माध्यम से सहभागिता की.

हिंदी साहित्यकार की जयंती मनाना

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रमुख मुख्य सिगनल व दूरसंचार इंजीनियर श्री जी.के.द्विवेदी की अध्यक्षता में दि.21.02.2024 को महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी की जयंती मनाई गई. मुख्यालय के विभिन्न विभागों में कार्यरत 01 अधिकारी तथा 07 कर्मचारियों ने महाकवि के व्यक्तित्व व कृतित्व पर अपना वक्तव्य दिया.

राजभाषा संगठन की समीक्षा बैठक का आयोजन तथा संसदीय राजभाषा समिति की संशोधित निरीक्षण प्रश्नावली पर कार्यशाला का आयोजन

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक श्री ए.के.श्रीवास्तव की अध्यक्षता में राजभाषा संगठन की समीक्षा बैठक का आयोजन दि.11.07.2024 को किया गया. इस बैठक में इस रेलवे के राजभाषा विभाग के अधिकारियों व अनुवादकों ने भाग लिया. अपराह्न में संसदीय राजभाषा समिति की संशोधित निरीक्षण प्रश्नावली को भरने के संबंध में जानकारी देने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया. राजभाषा विभाग के अधिकारियों व अनुवादकों ने इसमें भाग लिया तथा उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने कक्षा ली.

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक की अध्यक्षता में भंडार विभाग में दि.31.01.2024 को राजभाषा विभागीय बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी मदों पर विस्तार से चर्चा की गई तथा भंडार विभाग में हिंदी में हो रहे कार्य की समीक्षा की गई. दि.31.01.2024 को भंडार विभाग के अधिकारियों के लिए ई-ऑफिस हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

केंद्रीय अस्पताल, लालागुडा में दि.22.04.2024 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक तथा हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

सुरक्षा विभाग के कर्मचारियों के लिए दि.23.04.2024 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

दि.15.12.2023 को भंडार विभाग के कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

मुख्यालय स्तर पर - हिंदी निबंध, टिप्पण व प्रारूप लेखन तथा वाक् प्रतियोगिता का आयोजन

मुख्य राजभाषा अधिकारी की अध्यक्षता में दि.04.07.2024 और दि.05.07.2024 को प्रधान कार्यालय स्तर पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता, टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता तथा हिंदी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इसमें प्रधान कार्यालय के विभिन्न विभागों तथा इसके अंतर्गत आनेवाले यूनिटों के कर्मचारियों ने भाग लिया.

क्षेत्रीय स्तर पर - हिंदी निबंध, टिप्पण व प्रारूप लेखन तथा वाक् प्रतियोगिता का आयोजन

मुख्य राजभाषा अधिकारी की अध्यक्षता में दि.18.07.2024 को और दि.19.07.2024 को क्षेत्रीय स्तर पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता, टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता तथा हिंदी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इसमें प्रधान कार्यालय सहित सभी मंडलों व कारखानों के कर्मचारियों ने भाग लिया.

क्षेत्रीय हिंदी पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता का आयोजन

दि.30.05.2024 को क्षेत्रीय हिंदी पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में प्रधान कार्यालय, निर्माण संगठन, सहित सभी मंडलों/कारखानों के कर्मचारियों ने अपनी रुचि के अनुसार हिंदी साहित्यकारों तथा उनकी रचनाओं पर पावरपाइंट के माध्यम से अपनी-अपनी समीक्षा प्रस्तुत की.

राजभाषा संगठन की समीक्षा बैठक का आयोजन तथा क्षेत्रीय हिंदी पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरण

मुख्य राजभाषा अधिकारी की अध्यक्षता में किया गया. इस बैठक के दौरान क्षेत्रीय हिंदी पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति-4, हैदराबाद की बैठकों का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति-4, हैदराबाद की बैठक का आयोजन किया गया. कुछ सदस्य कार्यालयों के प्रमुख सभागृह में उपस्थित थे तथा कुछ सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों ने ऑन लाइन माध्यम से इस बैठक में सहभागिता की. क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, बेंगलूरु के उप निदेशक ने ऑन लाइन माध्यम से इस बैठक में सहभागिता की.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्त्वावधान में शील्ड व पुरस्कार प्रदान करना

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्त्वावधान में सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए तथा वर्ष 2022-2023 के दौरान राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए चयनित 13 कार्यालयों को और सर्वश्रेष्ठ हिंदी गृह पत्रिकाओं (ई-पत्रिका सहित) के प्रकाशन के लिए 09 कार्यालयों को शील्ड प्रदान किए गए.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्त्वावधान में प्रतियोगिताओं का आयोजन करना

हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्त्वावधान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए दि.03.05.2024 को राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण कार्यालय में हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण प्रश्नावली को भरने के संबंध में जानकारी देने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के लिए दि.26.02.2024 को प्रधान आयकर आयुक्त कार्यालय में संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण प्रश्नावली को भरने के संबंध में जानकारी देने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें उप महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ.श्याम सुंदर साहु ने कक्षा ली. इस कार्यशाला में 50 सदस्यों ने भाग लिया.

हिंदी प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के लिए दि.06.02.2024 को ग्रुप केंद्र केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल कार्यालय, रंगा रेड्डी में हिंदी प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में 50 कर्मचारियों ने भाग लिया.

हिंदी पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के लिए दि.14.03.2024 को राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान में हिंदी पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इसमें महाकवि रामधारी सिंह ‘दिनकर’ की कृति ‘रश्मिरथी’ पर सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने अपनी-अपनी समीक्षा प्रस्तुत की.

उपलब्धियां

दक्षिण मध्य रेलवे के मुख्यालय को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए प्रथम पुरस्कार के रूप में रेल मंत्री राजभाषा शील्ड प्राप्त हुई, जिसे दि.15.03.2024 को रेलवे बोर्ड में आयोजित समारोह में प्रदान किया गया.

अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव में इस रेलवे की ओर से विजयवाडा मंडल द्वारा मंचित नाटक 'सर्प नीति' को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. इसके अलावा इस नाटक को अन्य सात पुरस्कार जैसे सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, सर्वश्रेष्ठ संगीत, सर्वश्रेष्ठ ध्वनि प्रभाव, सर्वश्रेष्ठ मंच-सज्जा, सर्वश्रेष्ठ प्रकाश परिकल्पना, सर्वश्रेष्ठ वेश-भूषा, सर्वश्रेष्ठ उच्चारण के पुरस्कार भी प्राप्त हुए.

दक्षिण मध्य रेलवे के मुख्यालय को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्तम कार्यनिष्पादन के लिए नगर राजभाषा शील्ड का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा इस कार्यालय की ई-पत्रिका 'रेल सुधा' को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ.